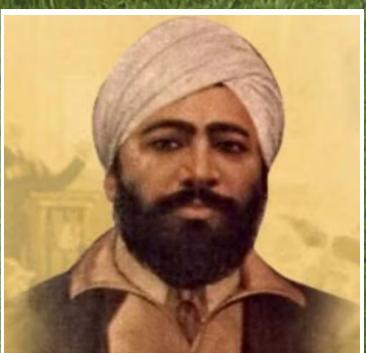


सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

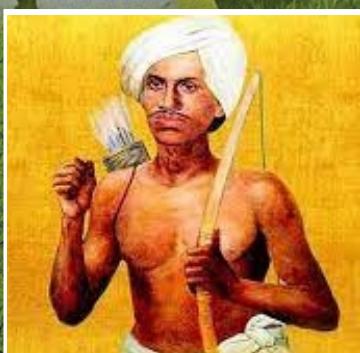
वसुधैव कुटुम्बकम्
का संदेश देता योग



कलम इनकी जय बोल
शहीद-ए-आजम उद्धम सिंह



लोकसभा चुनाव के लिए
एकजुट होता विपक्ष



विरसा मुंडा छोटी उम्र
बड़ी जिंदगी



परमाणु युद्ध के खतरे की
बजने लगी घंटी

सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

महेन्द्र यादव

प्रदेश सचिव, प्रधान संघ
उत्तर प्रदेश

कुसुम यादव W/O महेन्द्र यादव
ग्राम प्रधान - भिसौडी,
नियामताबाद, चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

हममीदुलाह अंसारी

ग्राम प्रधान
सतपोखरी गांव सभा



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

राजेश जायसवाल

सभासद

मैनाताली, पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

वंश नारायण चौहान (बाबू साहब)

सभासद



वार्ड नंबर 11, मरई खुर्द
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर



सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

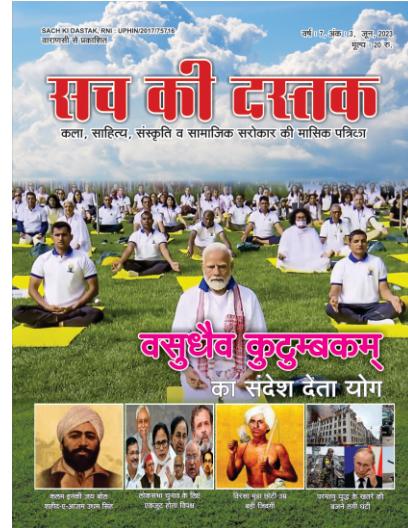
आर.एन.आई. UPHIN/2017/75716

वर्ष : 07, अंक : 3, जून, 2023

संपादक
ब्रजेश कुमार
समाचार संपादक
आकांक्षा सक्सेना
खेल सम्पादक
मनोज उपाध्याय
उप सम्पादक
शिव मोहन सिंह
कानूनी सलाहकार
दिलीप कुमार सिंह (अधिवक्ता)
प्रूफ रीडर
बिपिन बिहारी उपाध्याय
प्रसार प्रभारी
अशोक सैनी
प्रसार सह प्रभारी
अजय राय
अशोक शर्मा
जितेन्द्र सिंह
ग्राफिक्स
संजय सिंह
सम्पादकीय कार्यालय
सी-6/2-एम, चेतगंज थाना के पास,
चेतगंज वाराणसी
पत्राचार (स्थानीय कार्यालय)
म.न. 1215ए, सुभाषनगर, मुगलसराय (चन्दौली)
मो.न. : 8299678756, 9598056904, 9450096479

पत्रिका में प्रकाशित समाचार / लेख से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का न्याय क्षेत्र चन्दौली होगा। सभी पद अवैतनिक हैं।

स्वामी प्रकाशक मुद्रक ब्रजेश कुमार द्वारा यादव प्रिंटर्स, ए 14/36 भारद्वाजी ठोला राजघाट वाराणसी से मुद्रित।



स्टेट ब्यूरो प्रभारी

- मृदुला श्रीमाली - उत्तर प्रदेश
- रोहित कोचगवे - उत्तराखण्ड
- दीपाली सोढ़ी - असम
- दीपक कुमार साहा - दिल्ली
- श्री रामकृष्ण सहस्रबुद्धे - महाराष्ट्र
- डा. जय राम झा - बिहार

ब्यूरो संवाददाता / रिपोर्टर

- डॉ निशा अग्रवाल विशेष संवाददाता जयपुर (राजस्थान)
- सुनील मित्तल जिला प्रभारी धौलपुर (राजस्थान)
- विकास गौण जिला प्रभारी वाराणसी (यू.पी.)
- अक्षांशु सक्सेना जिला प्रभारी औरैया (यू.पी.)
- संजय कुमार दुबे जिला प्रभारी जौनपुर (यू.पी.)
- साहिल भारती प्रभारी लखनऊ (यू.पी.)
- राकेश शर्मा जिला प्रभारी चन्दौली (यू.पी.)
- पवन कुमार शर्मा, जिला प्रभारी देहरादून (उत्तराखण्ड)

सदस्यता शुल्क

1 अंक	-	रु. 20/-
वार्षिक	-	रु. 300/- (डाकखर्च सहित)

Sach Ki Dastak

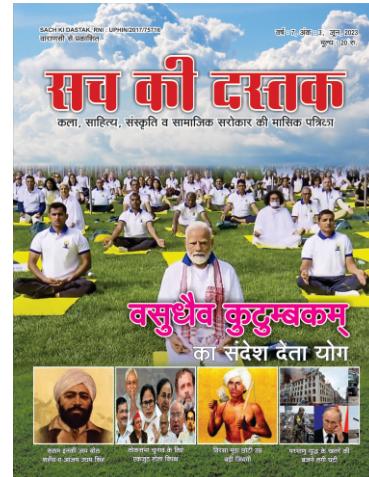
A/c. No. : 13751652000024

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

सच की दरताक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका



इस बार

क्र.स. लेख

क्र.स.	लेख	पेज न.
1.	संपादकीय - ब्रजेश कुमार, प्रधान संपादक	03
2.	धरोहर - सूर्यकांत त्रिपाठी निराला	05
3.	वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देता योग - बृजेश कुमार प्रधान संपादक	06
4.	कलम इन की जय बोल शहीद-ए-आजम उथम सिंह - कृष्ण कांत श्रीवास्तव	08
5.	लोकसभा चुनाव के लिए एकजुट होता विषयक - आकांक्षा सक्सेना न्यूज़ एडिटर सच की दस्तक	11
6.	पिता कविता - प्रोफेसर राजेश तिवारी कानपुर	14
7.	मां नर्मदा - रचना अमित पाराशर होशंगाबाद मध्य प्रदेश	15
8.	संकल्प लें - प्रोफेसर अजीत कुमार जैन	16
9.	एबॉर्शन कहानी - मंजू लता वर्जिनियां अमेरिका	17
10.	बनारस में जी-20 की चर्चा - प्रीति श्रीवास्तव वाराणसी	18
11.	बिरसा मुंडा छोटी उम्र बड़ी जिंदगी - डॉक्टर जयराम झा व्यूरो प्रभारी बिहार	22
12.	ढांचागत विकास की बोझ सहती धरती - पवन तिवारी वरिष्ठ पत्रकार	26
13.	राजस्थान के रेड डायमंड का खजाना - सुशील मित्तल धौलपुर राजस्थान	28
14.	प्रोफेसर की आईएएस बनने की चाहत - सुशील उपाध्याय	30
15.	गुरु अर्जन (अर्जुन) देव - डॉक्टर चंद्रिका मिश्र नासिक	32
16.	स्वयं को पहचानना - डॉक्टर आनंद मणि त्रिवेदी	36
17.	मानव अधिकार - प्रभाकर कुमार जमुई बिहार	39
18.	ज्यों कोहरे में धूप समीक्षीयान - डॉक्टर विद्या सिंह	42
19.	मानवता का हनन - वीणा आडवाणी तनवी नागपुर	45
20.	आइए कैरियर बनाएं फूड टेक्नोलॉजी - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	47
21.	तिक्कती लाफिंग व्यंजन - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	49
22.	भारत की जूनियर महिला हॉकी टीम ने एशिया कप जीता - मनोज उपाध्याय खेल संपादक	51
23.	परमाणु युद्ध की बजने लगी घंटी - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	52
24.	साहित्य शिरोमणि से सम्मानित हुए गीतकार शिव मोहन सिंह - सच की दस्तक न्यूज़ नेटवर्क	54
25.	भारतीय सिनेमा की सबसे पहली महिला गायिका - बृजेश श्रीवास्तव मुज्जा	55

संपादकीय



हमारे सम्मानित पाठकों! आप सभी को 'विश्व पर्यावरण दिवस', 'विश्व रक्तदान दिवस' 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' की ढेर सारी बधाई।

बहुत हर्ष की बात है कि आपकी राष्ट्रीय पत्रिका 'सच की दस्तक' ने जैसे ही प्रकाशन के 6 वर्ष पूरे किए और सातवें वर्ष में प्रवेश किया, वैसे ही 'सच की दस्तक का ऐप' आ गया। अब इस मासिक पत्रिका के साथ आप को हर समाचार के लिए हमारा 'सच की दस्तक ऐप' अपडेट करेगा।

आइए, अब हम देश के मौजूदा परिस्थितियों पर विचार-विमर्श करें। सबसे पहले हम योग की बात करते हैं। प्राचीन काल से ही योग जीवन के लिए वरदान साबित होता रहा है। बड़े-बड़े ऋषि मुनि योग के बल पर ही कई वर्षों तक तप किया करते थे। उनकी उम्र भी योग के कारण काफी लंबी होती थी। चाहे कोई भी वेद हो सभी में योग का जिक्र जरूर मिलता है। भारत ने पूरे विश्व को योग का महत्व समझाया है। इस बदलते हुए परिवेश में निरोग रहने के लिये एक मात्र उपाय योग है। हमारे माननीय प्रधान मंत्री नरेंद्र मोदी जी ने पूरी दुनिया को योग के महत्व के विषय में समझाया है। योग न केवल स्वयं को स्वस्थ रखने का उपाय है बल्कि एक जीवन शैली है। बदलते परिवेश में अपने देश और समाज के उच्चयन में योग संबल प्रदान करता है। योग एक दूसरे के प्रति प्यार मोहब्बत का सामंजस्य बनाने का एक तरीका भी है। हमारे यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी की पहल पर दुनिया ने एक दिन योग दिवस मनाने का निर्णय लिया है। अब जून की 21 तारीख को प्रत्येक वर्ष 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' के रूप में मनाया जाता है। यह हम सब

भारतवासियों के लिए गर्व की बात है। भारत पहले भी विश्व गुरु रहा है और आज भी उसकी तरफ अग्रसर हो गया है क्योंकि आज हमारी बातों को पूरा विश्व ध्यान से सुन रहा है। हमारे द्वारा किए जा रहे अच्छे प्रयासों को भी हाथों हाथ ले रहा है। इस अंक में योग दिवस पर विस्तृत चर्चा की गई है।

हमेशा की तरह हमने 'कलम इनकी जय बोल' में उन स्वतंत्रता सेनानियों को आपके सामने लाने का प्रयास किया है जिन्होंने देश के लिए अपनी जान तो न्योछावर कर दिया लेकिन उनके बारे में वर्तमान पीढ़ी को पता नहीं है। इतिहास की ज्यादातर किताबों में इनका जिक्र भी नहीं मिलता। इस बार एक महान स्वतंत्रता सेनानी शहीद ए आजम उधम सिंह का जिक्र करने जा रहे हैं जिन्होंने अपनी आँखों के सामने अंग्रेजों का जुल्म जलियांवाला कांड के रूप में देखा था। तभी से उनको गहरा आघात हुआ और उनके अंदर आक्रोश की भावना जागृत हुई। उन्होंने अपने निर्दोष देशवासियों की मौत का बदला लेने के लिए संकल्प कर लिया और संकल्प को अंजाम भी दिया। ऐसे क्रांतिकारी के बारे में आप को इस अंक में पढ़ने को मिलेगा।

देश की राजनीति भविष्य में किस करवट लेगी, इस पर भी इस अंक में चर्चा हुई है। बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार विपक्ष को एकजुट करने में लगे हैं जिससे 2024 में भाजपा को कड़ी टक्कर दी जा सके। लेकिन विपक्षी एकता के पहले ही धमकाने के शब्द- बाण विपक्ष के लोगों में ही चलने लगे हैं। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने कांग्रेस को धमकाते हुए कहा है कि यदि कांग्रेस कम्युनिस्टों के साथ मिलकर चुनाव

लड़ती है तो '2024 में उसको समर्थन तृणमूल कांग्रेस देगी' यह भूल जाए। उसी प्रकार दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल भी केवल अपना मकसद पूरा करने के लिए विपक्ष के लोगों से मिल रहे हैं। पिछले दिनों एक अध्यादेश केंद्र सरकार ने दिल्ली सरकार के लिए लाया था उसी का डर अरविंद केजरीवाल को सता रहा है। केंद्र सरकार द्वारा लाया गया अध्यादेश राज्यसभा में पास न हो जाए उसके लिए विपक्ष के लोगों से मिल रहे हैं। दिल्ली के चुनाव में आम आदमी पार्टी भी कांग्रेस की दखलंदाजी बर्दाश्त नहीं करेगी। आम आदमी पार्टी के दिग्गज नेताओं ने इन दिनों जो बयान दिए हैं उससे तो ऐसा ही लगता है। इस पर भी एक मंथन इस अंक में किया गया है।

पर्यावरण को किस प्रकार से सुरक्षित रखा जाए और क्या-क्या जुल्म हमारे द्वारा पर्यावरण पर किया जा रहा है और उससे निजात कैसे मिल सकती है, सच की

दस्तक के इस अंक में आपको पढ़ने को मिलेगा।

यूक्रेन - रूस का युद्ध के अब विकाराल होने की संभावना बढ़ती जा रही है। रूस ने निर्णायक युद्ध के लिए परमाणु हथियारों का जखीरा बेलारूस भेजना शुरू कर दिया है। परमाणु युद्ध की स्थिति में होने वाले नफा नुकसान की चर्चा इस अंक में की गयी है।

अंत में आप सभी से एक अनुरोध है कि समाचार की दुनिया में अपडेट रहने के लिए सच की दस्तक द्वारा लांच किए गए ऐप को डाउनलोड करें और सभी प्रकार के समाचारों को तुरंत प्राप्त करें। साथ ही एक बार फिर से आप सभी को 'विश्व पर्यावरण दिवस', 'विश्व रक्तदान दिवस' व 'अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस' की हार्दिक बधाइयाँ व शुभकामनाएँ।

ब्रजीश कुमार

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' तोड़ती पत्थर



वह तोड़ती पत्थर;
देखा उसे मैंने इलाहाबाद के पथ पर-
वह तोड़ती पत्थर।
कोई न छायादार
पेड़ वह जिसके तले बैठी हुई स्वीकार;
श्याम तन, भर बँधा यौवन,
नत नयन प्रिय, कर्म-रत मन,
गुरु हथौड़ा हाथ,
करती बार-बार प्रहार :—
सामने तरु-मालिका अद्वालिका, प्राकार।
चढ़ रही थी धूप;
गर्मियों के दिन
दिवा का तमतमाता रूप;
उठी झुलसाती हुई लू,
रुई ज्यों जलती हुई भू,
गर्द चिनगीं छा गई,
प्रायः हुई दुपहर :—
वह तोड़ती पत्थर।
देखते देखा मुझे तो एक बार
उस भवन की ओर देखा, छिन्नतार;
देखकर कोई नहीं,
देखा मुझे उस दृष्टि से
जो मार खा रोई नहीं,
सजा सहज सितार,
सुनी मैंने वह नहीं जो थी सुनी झंकार
एक क्षण के बाद वह काँपी सुधर,
दुलक माथे से गिरे सीकर,
लीन होते कर्म में फिर ज्यों कहा—
'मैं तोड़ती पत्थर'

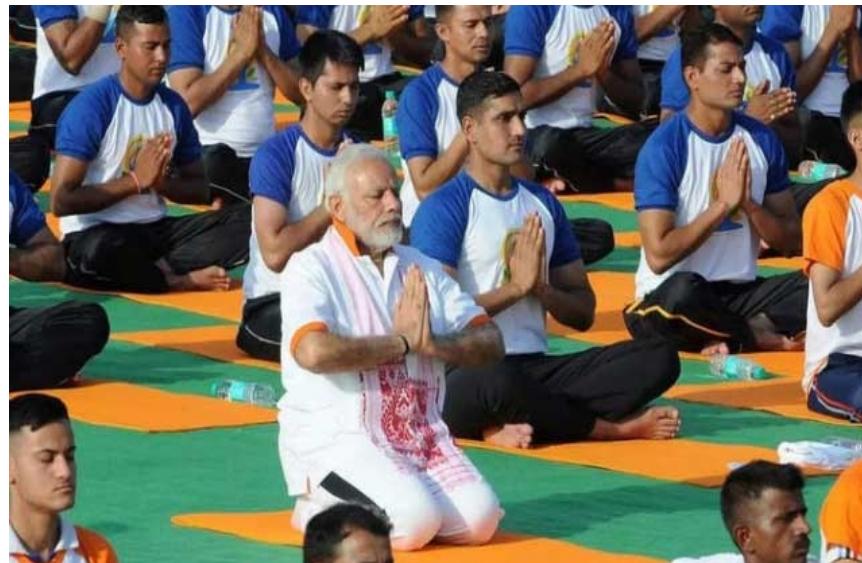


वसुधैव कुटुम्बकम् का संदेश देता योग

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग की महिमा को बताया, जो स्वस्थ जीवन के लिए महत्वपूर्ण है योग दर्शन के द्वितीय और तृतीय पाद में जिस अष्टांग योग साधन का उपदेश दिया है, उसके नाम इस प्रकार हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन 8 अंगों के अपने-अपने उप अंग भी हैं। वर्तमान में योग के 3 ही अंग प्रचलन में हैं इनमें मुख्य रूप से आसन, प्राणायाम और ध्यान। मैंने तो कोई रोचक बात नहीं बताई अभी तक लेकिन एक बात आप के बीच रखने जा रहा हूँ। योग हिन्दू धर्म के छह दर्शनों में से एक है लेकिन इसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं है। योग का ध्यान के साथ संयोजन होता है। बौद्ध धर्म में भी ध्यान के लिए अहम माना जाता है। और ध्यान का संबंध इस्लाम और इसाई धर्म के साथ भी है।



ब्रजेश कुमार
संपादक सच की दस्तक



भारत का योग से काफी प्राचीन रिश्ता रहा है और भारत हीं विश्व का ऐसा देश है जो पूरे विश्व को अपना एक परिवार मानता है और सच पूछिए तो वसुधैव कुटुंबकम् का अर्थ भी यही है।

वसुधैव कुटुंबकम् जहां एक ओर पूरी वसुधा अर्थात् हमारी पृथ्वी को एक परिवार के रूप में बांध देता है वही यह भावनात्मक रूप से मनुष्य को अपने विचारों और कार्यों के प्रभाव को विस्तृत करने की बात कहता है। वसुधैव कुटुंबकम् हमारे सनातन धर्म का मूल मंत्र है। हमारे धर्म में हीं नहीं अपितु हमारे भारतवर्ष के संस्कार का घोतक है। वसुधैव कुटुंबकम् महा उपनिषद् में लिखा हुआ है। इसका शाब्दिक अर्थ है धरती हीं परिवार है। इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का थीम भी यही रहा।

आइए, योग का भारत से क्या संबंध है इस पर चर्चा करते हैं। हमारे यहां वेदों में भी योग के महत्व को बताया गया

है। योग तत्त्वः बहुत सूक्ष्म विज्ञान पर आधारित एक आध्यात्मिक विषय है जो मन एवं शरीर के बीच सामंजस्य स्थापित करने पर बल देता है। यह स्वस्थ जीवन - यापन की कला एवं विज्ञान है। योग शब्द संस्कृत की 'युज' 'धातु से बना है जिसका अर्थ है जुड़ना या एकजुट होना या शामिल होना है। योग से जुड़े ग्रन्थों के अनुसार योग करने से व्यक्ति की चेतना ब्रह्मांड की चेतना से जुड़ जाती है जो मन एवं शरीर तथा मानव एवं प्रकृति के बीच परिपूर्ण सामंजस्य का घोतक है। आधुनिक वैज्ञानिकों के मतानुसार ब्रह्मांड की हर चीज उसी परिमाण में ब्रह्म की अभिव्यक्ति मात्र है। जो भी अस्तित्व की इस एकता को महसूस कर लेता है उसे योग में स्थित कहा जाता है और उसे ही योगी के रूप में पुकारा जाता है जिसने मुक्त अवस्था प्राप्त कर ली है उसे ही जीवनमुक्ति, या विदेहमुक्त निर्वाण या मोक्ष कहा जाता है। इस प्रकार, योग का

लक्ष्य आत्म-अनुभूति, सभी प्रकार के कष्टों से मुक्ति पाना है जिससे मोक्ष की अवस्था या कैवल्य की अवस्था प्राप्त होती है। योग का अभिप्राय एक आंतरिक विज्ञान से भी है जिसमें कई तरह की विधियाँ शामिल होती हैं। जिनके माध्यम से मानव इस एकता को साकार कर सकता है और अपनी स्थित को अपने वश में कर सकता है। चूंकि योग को बड़े पैमाने पर सिंधु नदी घाटी सभ्यत; जिसका इतिहास 2700 ईसा पूर्व से है।

ये सच है की भारत विश्व गुरु था और मानव कल्याण हीं भारत का मुख्य उद्देश्य रहा है। विपत्ति काल में विश्व का इकलौता देश जो सभी की मदद करता है। इतिहास भी इसका गवाह है जब जब विश्व पर संकट की घड़ी आई तब भारत ने ही उसका समाधान निकाला और मानव जाति का कल्याण हुआ। योग की बात हो रही हो और महर्षि पतंजलि की बात न हो यह हो ही नहीं सकता।

महर्षि पतंजलि ने अष्टांग योग की महिमा को बताया, जो स्वस्थ जीवन के लिए महत्वपूर्ण है योग दर्शन के द्वितीय और तृतीय पाद में जिस अष्टांग योग साधन का उपदेश दिया है, उसके नाम इस प्रकार हैं- यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि इन 8 अंगों के अपने-अपने उप अंग भी हैं। वर्तमान में योग के 3 ही अंग प्रचलन में हैं इनमें मुख्य रूप से आसन, प्राणायाम और ध्यान। मैंने तो कोई रोचक बात नहीं बताई अभी तक लेकिन एक बात आप के बीच रखने जा रहा हूं। योग हिन्दू धर्म के छह दर्शनों में से एक है लेकिन इसका धर्म से कोई लेना-देना नहीं



है। योग का ध्यान के साथ संयोजन होता है। बौद्ध धर्म में भी ध्यान के लिए अहम माना जाता है। और ध्यान का संबंध इस्लाम और इसाई धर्म के साथ भी है।

योग से पूरा शरीर स्वस्थ रहता है यदि योग को आदत के रूप में अपना लिया जाए शरीर रोग मुक्त रहेगा। योग से हर रोग का निवारण संभव है। इनका एक उदाहरण आप के सामने रख रहा हूं।

अनुलोम-विलोम, नाड़ी -शोधन, प्राणायाम के मुख्य प्रकारों में से एक है। तमाम आयुर्वेद विशेषज्ञों का मानना है कि इस अकेले प्राणायाम को करने से ही कई तरह के चमत्कारी परिणाम प्राप्त होते हैं। यदि इस प्राणायाम का अभ्यास रोजाना सुबह और शाम को 15 मिनट भी किया जाए तो ये शरीर के सभी नाड़ियों को शुद्ध करता है, साथ ही शरीर में ऑक्सीजन के स्तर को बढ़ाने में भी मदद करता है। अनुलोम-विलोम करने से दिमाग भी सक्रिय होता है। सूर्य नमस्कार से भी बहुत फायदे होते हैं। विश्व के सामने इन्हीं सब के आधार पर हमने योग को रखा था उसके महत्व को समझाया था। विश्व ने योग की महत्ता को जाना और

भारत के प्रयासों को 21 जून 2015 को अंतर्राष्ट्रीय- योग दिवस घोषित कर यह बताया कि भारत द्वारा वसुधैव- कुटुंबकम का प्रयास अद्भुत है। आज 9 साल बीत गए और योग पूरे विश्व में फैल गया। इस बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में यूएन में 180 देशों के लोगों द्वारा योग किया गया। इस अवसर पर देश की प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने पूरे विश्व को संदेश देते हुए कहा कि सभी प्राचीन भारतीय परंपराओं की तरह योग भी जीवंत और गतिशील है। योग जीवन का एक तरीका है। ये विचारों और कार्यों में सावधानी बरतने का एक तरीका है। उन्होंने कहा कि योग भारत से आया है और यह एक बहुत पुरानी परंपरा है। योग विभिन्न प्रतिबंधों से मुक्त है। साथ ही पेटेंट और रॉयल्टी भुगतान से भी मुक्त है। योग किसी भी उम्र में किया जा सकता है। योग को कहीं भी, विश्व के किसी भी कोने में ले जाया जा सकता है और यह सही मायने में विश्वव्यापी है।

सचमुच ,अंतर्राष्ट्रीय - योग दिवस न केवल हमें योग करना सिखाता है बल्कि हमें जीने का मूल मंत्र भी देता है। ■■■

शहीद-ए-आजम उधम सिंह

जालियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने वाला भारत का शेर।

स्वतंत्रता के अमृत महोत्सव ने एक आत्मीय अपील की है कि हम सबको संकल्पित होना होगा ताकि स्वर्णिम महोत्सव तक हमारा देश विश्वगुरु के साथ सर्वमुखी विकसित राष्ट्र भी बन सके। इस संकल्प में कलमकारों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है ताकि वे आजादी के वीर सपूत्रों की गाथा को जन जन तक पहुंचा कर सृति पठल पर जागरूक करते रहे। उल्लेखनीय है कि पिछले कई अंकों से चांदौली जनपद वें दीनदयाल उपाध्याय नगर (मुगलसराय) के निवासी वरिष्ठ नागरिक-स्तंभकार कृष्णकान्त श्रीवास्तव जी की कलम इस विषय पर निरंतर चल रही है। प्रस्तुत है इस अंक में 6 गोलियों से जालियांवाला बाग हत्याकांड का बदला लेने वाले क्रांतिकारी शहीदे आजम सरदार उधम सिंह की वीर गाथा.....

- संपादक



कृष्णकान्त श्रीवास्तव
वरिष्ठ रंगकर्मी - रचनाकर्मी



13 मार्च 1940 की उस शाम लंदन का कैक्सटन हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। मौका था ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की एक बैठक का। हॉल में बैठे कई भारतीयों में एक ऐसा भी था जिसके ओवरकोट में एक मोटी किताब थी। यह किताब एक खास मक्सद के साथ यहां लाई गई थी। इसके भीतर के पन्नों को चतुराई से काटकर एक रिवॉल्वर रख दिया गया था। बैठक खत्म होने पर सब लोग अपनी-अपनी जगह से उठकर जाने लगे। इसी समय इस भारतीय ने अपनी किताब खोली और रिवॉल्वर निकालकर बैठक के वक्ताओं में से एक पंजाब के पूर्व गवर्नर माइकल ओ' इवायर पर फायर कर दिया। माइकल ओ' इवायर को दो गोलियां लगीं और मौके पर ही मौत हो गई।

इस गोलीकांड का बीज एक दूसरे

गोलीकांड से पड़ा था। यह गोलीकांड 13 अप्रैल 1919 को अमृतसर के जलियांवाला बाग में हुआ था। इस दिन अंग्रेज जनरल रेजिनाल्ड एडवार्ड हैरी डायर के हुक्म पर इस बाग में इकट्ठा हुए हजारों लोगों पर गोलियों की बारिश कर दी गई थी। बाद में ब्रिटिश सरकार ने जो आंकड़े जारी किए उनके मुताबिक इस घटना में करीब 370 लोग मारे गए थे और 1200 से ज्यादा घायल हुए थे। हालांकि बहुत से लोगों का मानना है कि डायर ने कम से कम 1000 लोगों की जान ली थी। इस समय माइकल ओ' इवायर पंजाब का गवर्नर था और इसने जनरल डायर की कार्रवाई का समर्थन किया था।

कुछ इतिहासकारों का मत है कि उधम सिंह भी उस दिन जलियांवाला बाग में थे। उन्हें गहरा आघात लगा। उनके अंदर आक्रोश की भावना जागृत हो उठी। इन्होंने जालियांवाला बाग की मिट्टी को



हाथ में लिया और यह प्रतिज्ञा की.... 'मैं इस नरसंहार का बदला ले कर रहूँगा'।

मिलते-जुलते नाम के कारण बहुत से लोग मानते हैं कि उधम सिंह ने जनरल डायर को मारा। लेकिन ऐसा नहीं था। इस गोलीकांड को अंजाम देने वाले जनरल डायर की 1927 में ही लकवे और कई दूसरी बीमारियों की वजह से मौत हो चुकी थी। यही वजह है कि इतिहासकारों का एक वर्ग यह भी मानता है कि ड्वायर की हत्या के पीछे उधम सिंह का मकसद जलियांवाला बाग का बदला लेना नहीं बल्कि ब्रिटिश सरकार को एक कड़ा संदेश देना और भारत में क्रांति भड़काना था।

जीवन परिचय-

उधम सिंह का जन्म 26 दिसंबर 1899 को पंजाब में संगरूर जिले के सुनाम गांव में कंबोज सिख परिवार में हुआ था। इनके पिता सरदार तेहाल सिंह पास के उपली गांव के रेलवे क्रॉसिंग में वॉचमैन का काम करते थे। माता नारायण कौर उर्फ नरेन कौर एक ग्रहणी थी। बचपन में उनका नाम शेर सिंह रखा गया था। छोटी उम्र में ही माता-पिता का साया उठ जाने से दुखद परिस्थिति में इन्हें

और इनके बड़े भाई मुक्तासिंह को अमृतसर के खालसा अनाथालय पुतलीघर में शरण लेनी पड़ी। यहीं इन्हें उधम सिंह नाम मिला और इनके भाई को साधु सिंह का। वर्ष 1917 में साधु सिंह भी गुजर गए। इन मुश्किलों ने उधम सिंह को दुखी तो किया, लेकिन इनमें हिम्मत और संघर्ष करने की ताकत भी बढ़ाई। वर्ष 1918 में अपनी मैट्रिक की परीक्षा पास की और उसके बाद खालसा अनाथालय छोड़ दिया।

वर्ष 1919 में 13 अप्रैल को जब जलियांवाला बाग कांड हुआ तो इन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में कूदने का फैसला कर लिया।

क्रांतिकारी गतिविधियां-

वर्ष 1924 में उधम सिंह 'गदर पार्टी' और 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' से जुड़ गए। क्रांति के लिए पैसा जुटाने के मकसद से उधम सिंह ने दक्षिण अफ्रीका, जिम्बाब्वे, ब्राजील और अमेरिका की यात्रा की। भगत सिंह के कहने के बाद वे 1927 में भारत लौट आए। अपने साथ वे 25 साथी, कई रिवॉल्वर और गोला-बारूद भी लाए थे। जल्द ही

अवैध हथियार और गदर पार्टी के प्रतिबंधित अखबार 'गदर की गूंज' और बिना लाइसेंस वाला पिस्टॉल रखने के कारण इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। इन पर मुकदमा चला और इन्हें चार साल की सजा हुई। ये चार साल इन्होंने यही सोचकर गुजारे कि बाहर निकलकर वे जनरल डायर से बदला लेकर रहेंगे।

वर्ष 1931 में उधम सिंह जेल से छूटे पर पंजाब पुलिस उधम सिंह की कड़ी निगरानी कर रही थी। उधम सिंह अमृतसर चले गए और एक दुकान खोला। इस दुकान में एक पेटर का बोर्ड लगाया और राम मोहम्मद सिंह आजाद नाम से रहने लगे। उधम सिंह ने ये नाम कुछ इस तरीके से चुना था इस पर सभी धर्मों के नाम मौजूद थे।

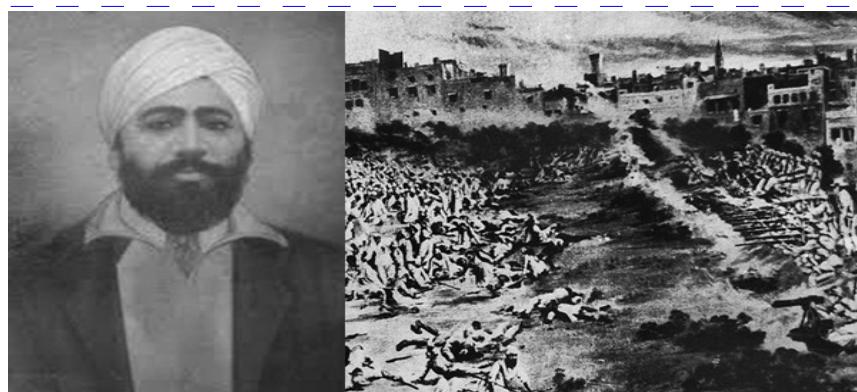
जलियांवाला बाग हत्याकांड का बदला-

अपने संकल्प को पूरा करने के लिए उधम सिंह 1935 में कश्मीर गए। कश्मीर में कुछ महीने रहने के बाद वे वहां से गायब हो गए। बाद में पता चला कि वे जर्मनी में हैं। जर्मनी से वे लंदन गए। यहां उन्होंने ड्वायर की हत्या का बदला लेने की योजना को अंतिम रूप देना शुरू किया। उन्होंने किराए पर एक घर लिया। घूमने के लिए उधम सिंह ने एक कार भी खरीदी। कुछ समय बाद इन्होंने छह गोलियों वाला एक रिवॉल्वर भी लिया। अब इन्हें सही मौके का इंतजार था।

जलियांवाला बाग हत्याकांड के 21 साल बाद 1940 की बैठक और उसमें माइकल ओ ड्वायर के आने की जानकारी मिली। वे समय से पहले ही कैक्सटन हाल पहुंच गए। उस शाम लंदन

का कैंक्सटन हॉल लोगों से खचाखच भरा हुआ था। मौका था ईस्ट इंडिया एसोसिएशन और रॉयल सेंट्रल एशियन सोसायटी की एक बैठक का। हॉल में बैठे कई भारतीयों में एक ऐसा भारतीय भी था जिसने ओवरकोट पहन रखी थी, जिसमें में एक मोटी किताब थी। यह किताब एक खास मकसद के साथ यहां लाई गई थी। इसके भीतर के पन्नों को काटकर इसमें एक रिवॉल्वर रख दिया गया था।

शाम को जब बैठक खत्म हुई, और सब लोग अपनी-अपनी जगह से उठकर जाने लगे तो इस भारतीय ने अपनी किताब खोली और रिवॉल्वर निकालकर बैठक के वक्ताओं में से एक माइकल ओ'इवायर पर शाम 4:30 पर छः फायर कर दिया। इवायर को दो गोलियां लगीं और पंजाब के इस पूर्व गवर्नर की मौके पर ही मौत हो गई। हाल में भगदड़ मच गई। लेकिन इस भारतीय ने भागने की कोशिश नहीं की बस उनके मुंह से यह बात निकली कि.... मैंने अपने देश का कर्तव्य



पूरा कर दिया

उधम सिंह को इस बात का गर्व था कि मैंने अपने देशवासियों के लिए वह करके दिखाया जो सभी भारतीय देशवासी चाहते थे।

गिरफ्तारी और फांसी की सजा-

उधम सिंह को गिरफ्तार कर लिया गया। ब्रिटेन में ही इन पर मुकदमा चला और 4 जून 1940 को जस्टिस एटकिंसन ने उधम सिंह को माइकल ओ'इवायर की मौत का दोषी घोषित किया और फांसी की सजा सुना दी। 31 जुलाई 1940 को लंदन के पेटोनविले जेल में फांसी दे दी गई। उधम सिंह की अंतिम इच्छा थी कि मेरी अस्थियों को मेरे देश भारत भेज दिया जाए पर यह नहीं किया गया।

भारत सरकार ने पंजाब सरकार के साथ मिलकर उधम सिंह की अस्थियों को भारत लाने की सफल कोशिश की और यह संयोग देखिए की 31 जुलाई को उधम सिंह को फांसी दी गई थी और ब्रिटिश सरकार ने उधम सिंह की पुण्यतिथि 31 जुलाई 1974 के दिन ही इनके अवशेषों को भारत को सौंपा। इनकी अस्थियों को सम्मानपूर्वक भारत लाकर सतलुज नदी में बहाया गया और कुछ हिस्सा गया है। जालियांवाला बाग में रखा गया। इनके

गांव में समाधि बनाई गई।

उधम सिंह देश के बाहर फांसी पाने वाले दूसरे क्रांतिकारी थे। इनसे पहले मदन लाल ढींगरा को कर्जन वाइली की हत्या के लिए साल 1909 में फांसी दी गई थी।

भगत सिंह से समानता-

उधम सिंह भगत सिंह से बहुत प्रभावित थे। दोनों दोस्त भी थे। एक चिट्ठी में उन्होंने भगत सिंह का जिक्र अपने प्यारे दोस्त की तरह किया है। भगत सिंह से उनकी पहली मुलाकात लाहौर जेल में हुई थी। इन दोनों क्रांतिकारियों की कहानी में बहुत दिलचस्प समानताएं दिखती हैं। दोनों का ताल्लुक पंजाब से था। दोनों ही नास्तिक थे। दोनों हिंदू-मुस्लिम एकता के पैरोकार थे। दोनों की जिंदगी की दिशा तय करने में जलियांवाला बाग कांड की बड़ी भूमिका थी। दोनों को लगभग एक जैसे मामले में सजा हुई थी। भगत सिंह की तरह उधम सिंह ने भी फांसी से पहले कोई धार्मिक ग्रंथ पढ़ने से इनकार कर दिया था।

उदाम सिंह द्वारा दिए गए बलिदान पर कई फिल्मों का भी निर्माण किया गया है।



लोकसभा चुनाव के लिए एकजुट होता विपक्ष

एक जमाने में विपक्षी एकता की यह पहल सीपीएम के तत्कालीन महासचिव हरकिशन सिंह सुरजीत ने की थी। 1996-97 में कांग्रेस के खिलाफ भाजपा समेत सभी विपक्षियों को एकजुट करने और राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की पहल हो या फिर 2004 में भाजपा के खिलाफ कांग्रेस समेत तमाम विपक्षियों को जोड़कर यूपीए को मजबूत करने की पहल, हरकिशन सिंह सुरजीत ने दो महत्वपूर्ण मौके पर राजनीतिक जरूरतों को देखते हुए गठबंधन की राजनीति की नई परिभाषा गढ़ी थी। क्या नीतीश कुमार आज के हरकिशन सिंह सुरजीत बन सकते हैं?



2014 के बाद जब जब लोकसभा साथ चलने का एनडीए के माध्यम से के चुनाव पास आते हैं तब तब मोदी को प्रयास भी किया था। उनकी एकजुटता हटाने के लिए विपक्ष एकजुटता की कितना सफल हुई या नहीं हुई ये तो रणनीति बनाने का प्रयास करता है लेकिन सभी पार्टी की अपनी महत्वाकांक्षा के कारण सारे प्रयास धरे के धरे रह जाते हैं। 2019 में भी एक ऐसा गठबंधन हुआ था जो उत्तर प्रदेश में हुआ था। कभी ना मिलने वाली दो पार्टियां सपा और बसपा एक साथ आ गई थी तो ऐसा लगा कि भाजपा के लिए यह चुनाव अब ठीक नहीं होने वाला है। उधर सारे विपक्षी नेता भी 2019 लोकसभा चुनाव के लिए एक मंच पर आकर एक दूसरे का हाथ पकड़ कर सभी का अभिनंदन करते दिख रहे थे। इसके माध्यम से उस समय उन्होंने अपनी एकजुटता का परिचय दिया थे लेकिन जब चुनाव परिणाम सामने आया तो एनडीए की सीट पहले की तुलना में और बढ़ गई थी। यही नहीं भारतीय जनता पार्टी ने भी 2014 के मुकाबले 2019 में और दमदार प्रदर्शन किया अपने दम पर बहुमत पाया। लेकिन सभी को लेकर

जस जस लोकसभा के चुनाव नजदीक आ रहे हैं तस तस एक बार फिर विपक्षी एकता के लिए लोग एक दूसरे से मिल रहे हैं। कभी तेजस्वी द्वारा पलटू चाचा कहे जाने वाले बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने अब विपक्षी एकता पर काम करने का बीड़ा उठाया है और उसी के तहत बिहार के मुख्यमंत्री ने कई राज्यों के मुख्यमंत्रियों के साथ बैठक कर भाजपा के खिलाफ एक मंच पर आने का आग्रह किया और कहा कि यदि भाजपा को हटाना है तो सब को एकजुट होना पड़ेगा। इसी के तहत जून में विपक्षी एकता की बैठक भी होनी है आने वाला समय बताएगा की विपक्षी एकता का प्रयास क्या गुल खिला पाता है।

2024 में नरेंद्र मोदी की हैट्रिक लगती है या विपक्षी एकता राजनीतिक परिवर्तन करने में सफल हो पाती है।



आकांक्षा सक्सेना
न्यूज एडीटर सच की दस्तक

अब समझने की कोशिश करें बिहार के मुख्यमंत्री का प्रयास है कि क्षेत्रीय पार्टियां कांग्रेस के साथ एकजुट होकर भारतीय जनता पार्टी का मुकाबला करें यदि विपक्षी एकता 100 से 50 सीट पहले के मुकाबले भाजपा को पाने से रोकती है तो निश्चित तौर पर एनडीए का गवर्नरमेंट नहीं बनेगा।

विपक्षी एकता में जितने भी दल इस समय एक साथ आने की हामी भर रहे हैं सबकी अपनी अपनी राजनीतिक महत्वाकांक्षा है और वही महत्वाकांक्षा विपक्षी एकता को कभी भी एकजुट होने नहीं देगी।

एक जमाने में विपक्षी एकता की यह पहल सीपीएम के तत्कालीन महासचिव हरकिशन सिंह सुरजीत ने की थी। 1996-97 में कांग्रेस के खिलाफ भाजपा समेत सभी विपक्षियों को एकजुट करने और राष्ट्रीय मोर्चा बनाने की पहल हो या फिर 2004 में भाजपा के खिलाफ कांग्रेस समेत तमाम विपक्षियों को जोड़कर यूपीए को मजबूत करने की पहल, हरकिशन सिंह सुरजीत ने दो महत्वपूर्ण मौके पर राजनीतिक जरूरतों को देखते हुए गठबंधन की राजनीति की नई परिभाषा गढ़ी थी। क्या नीतीश कुमार आज के हरकिशन सिंह सुरजीत बन सकते हैं?

दरअसल, गामपंथी पार्टियों की ताकत और मुख्य धारा की राजनीति में उनकी हैसियत का अंदाज़ा हमेशा से सभी दलों को रहा है। तब मुलायम सिंह भी थे, ज्योति बसु जैसे नेता थे, शरद यादव थे और सियासत का स्तर इतना नहीं गिरा था। राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं तब भी थीं, अब भी हैं। लेकिन अब की स्थितियां

पहले से अलग हैं। ज्यादातर पार्टियों का नेतृत्व बदल गया है, एक नई पीढ़ी ने सियासत को अपने अपने तरीके से देखा है। भाजपा ने हमेशा से इसी बिखराव का फायदा उठाया है। ज्यादातर क्षेत्रीय दलों के अपने अपने एजेंडे हैं और हर राज्य की अपनी अपनी स्थितियां हैं, लेकिन मोदी सरकार के नौ साल में जिस तरह इन पार्टियों ने लगातार खुद को कमज़ोर होते देखा, देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को चरमराते देखा और खुद को तमाम तरह की जांच के जाल में उलझते देखा, आम जनता के मुद्दों को गहराई से महसूस किया, तो यह साफ हो गया कि अब इससे तभी लड़ा जा सकता है जब एक बार फिर 1997 या 2004 जैसी एकता और गठबंधन बने। गामपंथी पार्टियों ने हमेशा से इसके लिए कोशिश की। सीपीआई नेता अतुल अंजान हों या डी राजा, सीपीएम महासचिव सीताराम येचुरी हों या फिर सीपीआईएमएल के नेता, सबने अपने अपने स्तर पर तब भी कोशिशें कीं और अब एक बार फिर अपने अपने स्तर पर उन्होंने यह अभियान चलाया है कि मोदी को हराना है तो कांग्रेस समेत सभी को साथ आना ही होगा।

बिहार की राजधानी पटना में विपक्षी एकता को लेकर बैठक होगी। पटना में 12 जून को होने वाली बैठक टल गई थी।

उप मुख्यमंत्री तेजस्वी यादव और जदयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने प्रेस कांफ्रेंस कर इसकी जानकारी दी है। 23 जून को होने वाली बैठक को लेकर सभी दलों ने अपनी सहमति दे दी है।

पटना: विपक्षी एकता के अगुवा बने नीतीश कुमार सहित उन नेताओं के लिए खुशखबरी है जो विपक्षी दलों की बैठक का इंतजार कर रहे थे। पटना में आगामी 23 जून को विपक्षी दलों के नेताओं की बैठक का आयोजन होगा। इसमें केंद्र सरकार को उखाइ फेंकने की रणनीति बनेगी। इसमें विपक्षी एकता में शामिल पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी सहित कांग्रेस के बड़े नेता शामिल होंगे। जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष ललन सिंह ने कहा कि इससे पहले 15 जून की तारीख तय हुई थी। उस दिन नेताओं को आने में असुविधा हो रही थी। इस कारण इस तारीख को रद्द कर दिया गया। उन्होंने कहा कि लंबे समय से चल रहा मंथन खत्म हो चुका है। 23 जून को राजधानी पटना में विपक्षी दलों की महाबैठक होने वाली है।

कई नेताओं ने दी सहमति

इस कार्यक्रम में आने के लिए पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी, झारखंड के मुख्यमंत्री हेमंत सोरेन, कांग्रेस अध्यक्ष मलिकार्जुन खड़गे, उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री अखिलेश यादव, एनसीपी प्रमुख शरद पवार, दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने सहमति दी है। इसके अलावा एमके स्टालिन, शिवसेना के अध्यक्ष उद्धव ठाकरे, दीपांकर भट्टाचार्य ने आने पर सहमति दी है। उन्होंने कहा कि तारीखों के अलावा उन नामों का भी ऐलान कर दिया गया जो पटना में होने वाली बैठक में शामिल होने वाले हैं। ध्यान रहे कि ये बैठक पहले 12 जून को होने वाली थी। नीतीश कुमार सितंबर 2022

से ही विपक्षी एकता की कवायद में जुटे हुए हैं। वे कई राज्यों की यात्रा कर चुके हैं। उसके अलावा कई मुख्यमंत्रियों से मुलाकात कर चुके हैं।

नीतीश कुमार पट्टना में होने वाली इस बैठक में विपक्षी दलों के साथ अपनी ताकत का एहसास कराएंगे।।

विपक्षी एकता को लेकर नीतीश कुमार के उत्साह का अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि वो बार-बार बीजेपी को 10 सीटों पर समेट देने का दावा करते हैं। नीतीश कुमार इससे पूर्व भी कह चुके हैं कि एक साथ एक मंच पर सब लोग आ जाएंगे तो ये लोग सौ सीटों पर सिमट जाएंगे। नीतीश कुमार ने बीजेपी को हराने के लिए महाराष्ट्र सहित दिल्ली और ओडिशा की यात्रा की है। उन्हें पश्चिम बंगाल और दिल्ली में केजरीवाल का रिस्पांस अच्छा मिला। ओडिशा के मुख्यमंत्री ने नीतीश से मुलाकात की थी लेकिन खुलकर समर्थन नहीं किया था। नीतीश कुमार ने जब से राहुल गांधी और खरगो से मुलाकात की है। उसके बाद से उनमें उत्साह दोगुना हो

23 जून को बनेगी रणनीति

जानकारों की मानें तो नीतीश कुमार 23 जून को होने वाली बैठक में इस बात पर चर्चा करेंगे कि महागठबंधन का उम्मीदवार सभी राज्यों में बस एक सीट पर एक ही होगा। बीजेपी के खिलाफ अन्य दलों के कई उम्मीदवारों को उतरने नहीं दिया जाएगा। जानकार बताते हैं कि नीतीश कुमार ने साफ तय किया है कि विपक्षी दलों की बैठक में इस नियम को लागू किया जाएगा। जैसे यूपी की 80

सीटों पर बीजेपी के खिलाफ सिर्फ एक उम्मीदवार खड़े किये जाएंगे। इसके अलावा बिहार की 40 सीटों पर भी यही सूत्र अपनाया जाएगा। विपक्षी दलों के अगुवा नीतीश कुमार का मानना है कि बीजेपी के खिलाफ सिर्फ महागठबंधन से चयनित एक उम्मीदवार सामने उतरेगा। जानकार कहते हैं कि 23 जून को बहुत कुछ किल्यर हो जाएगा।

विपक्षी एकता की बैठक के पहले ही कांग्रेस से गठबंधन को लेकर। पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री सुश्री ममता बनर्जी ने कहा है कि यदि कांग्रेस ने कम्युनिस्टों से हाथ मिलाया तो 2024 में हमारी पार्टी से उम्मीद भी ना रखें।

2024 के लोकसभा चुनाव से पहले विपक्ष की एकता की कोशिशों को गंभीर नुकसान पहुंचाने के साथ ही पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री और तृणमूल कांग्रेस की प्रमुख ममता बनर्जी ने साफ कहा कि अगर कांग्रेस ने मार्क्सवादी कम्युनिस्ट पार्टी के साथ बंगाल में गठबंधन किया तो उसे फिर टीएमसी से किसी तरह की मदद मिलने की उम्मीद नहीं पालनी चाहिए।

पट्टना में 23 जून को विपक्ष की एकता के लिए एक बड़ी बैठक से पहले ममता बनर्जी के इस बयान ने अब विपक्ष को एकजुट करने में लगे नीतीश कुमार के सामने एक बड़ा संकट खड़ा कर दिया है।

काकद्वीप में एक जनसभा को संबोधित करते हुए ममता बनर्जी ने कहा कि कांग्रेस का कई राज्यों में शासन है, सीपीएम बंगाल में उनकी सबसे बड़ी सहयोगी है। वे भाजपा के बड़े सहयोगी

हैं। और वे संसद में हमारी मदद चाहते हैं। हम अभी भी बीजेपी का विरोध करने के लिए ऐसा करेंगे। लेकिन याद रखें, बंगाल में अगर आप सीपीएम के साथ गठबंधन में हैं, तो लोकसभा चुनाव में हमारी मदद लेने न आएं।

वहीं दूसरी तरफ दिल्ली के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल ने इस समय विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों पार्टी के शीर्ष नेताओं से बातचीत कर रहे हैं लेकिन उनका मकसद केवल और केवल दिल्ली में लाया गया केंद्र सरकार द्वारा अध्यादेश वापस ले इसके लिए एन डी ए को राज्य सभा शिक्षित दे। क्योंकि राज्यसभा में एनडीए का बहुमत नहीं है।

जगजाहिर है दिल्ली में आप पार्टी कांग्रेस के बैसाखी के बल पर नहीं चलना चाहेगी ऐसे में विपक्षी एकता कैसे हो पायेगी यह यक्ष प्रश्न है। यदि किसी तरह से विपक्षी गठबंधन 2024 में सफल भी होता है तो भी खिचड़ी सरकार बनेगी जो बहुत दिन राजनीतिक महत्वाकांक्षा के कारण टिक नहीं पाएगी। जनता ने गठबंधन वाली आष्टी सरकारों का दौर भी देखा है और उसके दुष्परिणाम भी भुगते हैं। ऐसे में राजनीतिक स्थिरता भी एक महत्वपूर्ण कारक है। क्या विपक्षी दलों का कोई नेता यह विश्वास दिलाने में सक्षम होगा कि खिचड़ी सरकार दिखाओ होगी। इस सवाल का जबाब जनता को 2024 में देना है।



(पितृ दिवस पर पिता को समर्पित रचना।)

पिता



प्रोफेसर राजेश तिवारी 'विरल'
हिन्दी विभाग
डी.ए-वी.कालेज कानपुर

माँ की ममता दिखती सबको
पिता नेह का सिन्धु अगाध।
माँ की ममता व्यक्त हो चली,
पिता मौन करता सम्बाद।
जब जब संकट के क्षण आए,
पिता बने तब संकट मोचन।
सब बाधाएँ, सभी बलाएँ,
दूर कर रहे बिन भर लोचन।
वह अभाव के दिन जीते थे,
किन्तु प्रभाव न हमपर डालें।
निज आवश्यकता पर अंकुशा,
हमको चाहें, हम क्या खा-लें।
ऊपर से कठोर अनुशासन,

भीतर बहता नेह तरल।
वह निर्मिति का पहला अक्षर,
जीवन का निर्माण धवल।
हमें पिता ने दिया बहुत कुछ,
साहस, धैर्य, समर्पण, सम्बल।
कवच हमारे जीवन क्षण के,
पिता हमारे रहते प्रतिपल।
पितृदिवस है हमको प्रतिदिन,
पिता हमारे जीवन धन हैं।
उनके प्रति यह शीष प्रणत है,
पिता हेतु शत बार नमन है ॥



मां नर्मदा



रचना अमित पाराशर
होशंगाबाद म. प्रदेश

मेरे मन का गांव नर्मदा के किनारे बसता हुआ सा
हुआ
रेवा बहती हुई दिन निकलता हुआ सा
नीले पीले पुत घरों मे आंगन छोटा सा
तुलसी खिली हुई सी
पीपल हसता हुआ सा
रेत के टीले पर बैठे हुए हम तुम
ख्वाब महका हुआ सा दिल मचलता हुआ सा
उसके सक्त हाँथो को मिली
नर्म हथेली मेरी
थकान उतरती हुई सी
मलाल धुलता हुआ सा
पगड़ी बांधे झोला लटकाये
कुछ घुघट पकड़े
परिक्रमा गासी
दूरी घटती हुई

जोगी मन रमता हुआ सा
सात जन्मों की बंधी गठाने
खुल गई तेरे दर्शन मात्र से
अहंकार घटता हुआ सा
सरल मन बह ता हुआ सा
तेरे आंचल से होकर ही गुजरता है
मुक्ति का मार्ग मेरा
आँखे बहती हुई सी
मस्तक झुकता हुआ सा
तेरी गोद में हवा हुए दिन
राख उड़ती हुई सी
जिस्म जलता हुआ सा
तुझमें ही समा जाए आत्मा मेरी
मोक्ष मिलता हुआ सा
भवसागर पार होता हुआ सा ❤️



संकल्प लें!

(विश्व पर्यावरण दिवस 2023 के अवसर पर)



साल गिरह हो शादी की या मंगलमय हो जन्म दिवस ।

संकल्प करें हम पेड़ लगाएं तभी मनाएं जन्मदिवस॥

हो अपने घर में उत्सव सा या पर्व आ गया हो कोई॥

संकल्प करें हम मिल कर के फिर पौधा एक लगे कोई॥ 1 ॥

धरती ने उपकार किया है जीवन दान दे रही है ।

उसका ये ऋण भार चुका दो वचन यही वो ले रही है॥

पग पग पर हम पौध लगा दें हरी भरी धरती होगी॥

पेड़ काटता है गर कोई उसको जेल कड़ी होगी॥ 2 ॥

कानून बने हैं रक्षा के संरक्षण पौधों का होगा ।

संरक्षण की मति गति हो भूमि का क्षरण नहीं होगा ॥

चहुँ ओर दिखेगी हरियाली फल और फूल लदे होंगे।

आस पास का वायुमंडल कैसे शुद्ध नहीं होगा॥ 3 ॥

ऑक्सीजन के भरे सिलिंडर रखे रहेंगे कोने में ।

और फेंफड़े काम करेंगे धक धक ना हो सोने में॥

पीपल के नीचे जा कर के सांस खींच लो लंबी सी।

जीवन की नैया दौड़ेगी रसधार बहेगी लंबी सी॥ 4 ॥

जल भूमि नभ वायु सारे भारी खुश हो जाएंगे ।

नेक काम की गौरव गाथा वो सबको बतलाएंगे॥

सभी पूर्वज फिर तुमको वरदान दे रहे वे होंगे ।

'अजित' आप धरती का आँगन हरा भरा करते होंगे ॥ 5 ॥



प्रो.(डॉ) अजित कुमार जैन
आगरा



एबॉर्शन

वह इंसान जिसे मैंने दिल की गहराइयों से पिछले पांच साल से प्यार किया ,वह अचानक बिना बताए किसी और से शादी कैसे कर सकता है ?जिंदगी भर साथ निभाने की कसमें खाई थी |यह अजन्मा बच्चा जिसमें उसका भी रक्त है क्या उसी की तरह धोखेबाज होगा या मेरे रक्त से पोषित मेरा बच्चा मेरी तरह संवेदनशील होगा ,हमेशा मेरा ध्यान रखेगा ?पता नहीं क्यों मुझे इस अजन्मे बच्चे से बहुत लगाव हो गया है शुभी |मैं इसकी हत्या के पाप के दंश के साथ नहीं जी सकती ।'



कुर्सी पे बैठ कर एक टक छत को निहारती दीपशिखा से शुभा बोली 'क्या सोचा है दीपू ,बहुत दिन चढ़ जायेंगे तो डॉक्टर एबॉर्शन भी नहीं करेंगी |जल्दी निर्णय ले ।'

दीपशिखा बोली 'बड़ा अन्तर्दृष्टि चल रहा है मन में शुभी |वह इंसान जिसे मैंने दिल की गहराइयों से पिछले पांच साल से प्यार किया ,वह अचानक बिना बताए किसी और से शादी कैसे कर सकता है ?जिंदगी भर साथ निभाने की कसमें खाई थी |यह अजन्मा बच्चा जिसमें उसका भी रक्त है क्या उसी की तरह धोखेबाज होगा या मेरे रक्त से पोषित मेरा बच्चा मेरी तरह संवेदनशील होगा ,हमेशा मेरा ध्यान रखेगा ?पता नहीं क्यों मुझे इस अजन्मे बच्चे से बहुत

लगाव हो गया है शुभी |मैं इसकी हत्या के पाप के दंश के साथ नहीं जी सकती ।'

शुभा बोली -'मेरी मान चुपचाप एबॉर्शन करा और जिंदगी में आगे बढ़ |क्या यह बर्दाशत कर पायेगी कि लोग तेरे बच्चे को नाजायज़ कहें?'

कुछ सोच कर दीपशिखा बोली - 'मैंने सोच लिया ,मैं किसी और देश में बस जाऊंगी और वहाँ सबको और अपने बच्चे को यही बताऊंगी कि मेरे पति की मृत्यु हो गई ,वैसे भी वह मेरे लिये मरे समान ही है | अपने बच्चे को इतना प्यार दूँगी कि उसे कभी पिता की कमी महसूस ना हो|एबॉर्शन तो जिम्मेदारी से भागने का कायरों का तरीका है |मैं कायर नहीं हूँ ।'



मंजु श्रीवास्तव 'मन'
वर्जनिया, अमेरिका

आर्थिक मंदी, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, प्रदूषण और जैव विविधता के नुकसान, पर बनारस में जी 20 पर हुई चर्चा

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो संदेश के माध्यम से जी20 विकास मंत्रियों की बैठक को संबोधित किया। जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने लोकतंत्र के सबसे पुराने जीवित शहर वाराणसी में सभी का स्वागत किया। काशी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि यह सदियों से ज्ञान, चर्चा, बहस, संस्कृति और आध्यात्मिकता का केंद्र रहा है, जबकि इसमें भारत की विविध विरासत का सार भी है जो सभी हिस्सों के लोगों के लिए एक अभिसरण बिंदु के रूप में कार्य करता है। मोदी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि जी-20 विकास एजेंडा काशी तक भी पहुंच गया है।



ट्रेटी देशों का समूह जिसे जी-20 के रूप में जाना जाता है, यह आर्थिक सहयोग के लिए एक अंतरराष्ट्रीय मंच है। जी-20 फोरम उन सभी आर्थिक मुद्दों के शासन या प्रशासन के साथ-साथ वैश्विक वास्तुकला को मजबूत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इजी पैटिंग की अध्यक्षता 1 दिसंबर 2022 से 30 नवंबर 2023 तक भारत के नेतृत्व में आयोजित होगी। 320 की स्थापना 1999 में एशियाई वित्तीय संकट के मद्देनजर की गई थी। G20 मूल रूप से एक मंच है जिसमें केंद्रीय बैठक के गवर्नर और कई वित्त मंत्री सम्मिलित होते हैं। इंडोनेशिया, अर्जेंटीना, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया, जापान, मेक्सिको, दक्षिण अफ्रीका, यूनाइटेड किंगडम, तुर्की, संयुक्त राज्य अमेरिका, कोरिया गणराज्य, चीन, जर्मनी, फ्रांस,

सऊदी अरेबिया, ब्राजील, रूस, इटली और यूरोपीय संघ जी20 में सम्मिलित 20 देश हैं। भारत की G20 प्रेसीडेंसी की थीम, 'एक पृथ्वी, एक परिवार, एक भविष्य' के तहत वाराणसी में 13 जून को जी-20 मिनिस्टर्स की मीटिंग का आयोजन किया गया। इसमें विभिन्न देशों के 40 से ज्यादा मंत्री और विभिन्न विभागों के अध्यक्षों के साथ ही 200 विदेशी डेलीगेट्स काशी पथारे।

मेहमानों का पारंपरिक तरीके से एयरपोर्ट पर स्वागत हुआ कहीं धोबिया नेतृत्व कहीं शहनाई वादन के पेश तिलक लगाकर प्रतिनिधियों की अगवानी हुई। एयरपोर्ट रोड पर स्कूली बच्चों ने अलग-अलग देशों के झंडे के साथ, 15 सदस्यीय कलाकारों ने पाई डंडा और पारंपरिक लोक नृत्य दीवारी कला, लोक नृत्य और



प्रीति श्रीवास्तव
वाराणसी



दीवारी मार्शल आटर्स, संत अतुलानंद तिराहे पर धोबिया नृत्य, कंटोनमेंट होटल में राई व नटवरी लोक नृत्य से विदेशी मेहमानों का स्वागत हुआ।

काशी में जी-20 सदस्यों के विकासमंत्रियों की हो रही बैठक में हिस्सा लेने आए विदेशी प्रतिनिधि शाम को गंगा आरती में शामिल हुए। काशी आये विदेशी मेहमान दशाश्वमेध घाट पर आयोजित गंगा आरती में शामिल हुए और शंखनाद, घंटी, डमरु की आवाज और मां गंगा के जयकारों के बीच हुई गंगा आरती को देखा। विदेशी मेहमानों के लिए विशेष आरती का आयोजन किया गया और नौ अर्चकों ने मां गंगा की आरती उतारी। इस अवसर पर दशाश्वमेध घाट को फूल मालाओं और दीपों से सजाया गया था। गंगा आरती की शुरुआत देवाधिदेव महादेव की प्रतिमा पर पुष्प वर्षा कर गणपति पूजन से हुई। जी-20 देशों के विकास मंत्रियों सहित 200 विदेशी मेहमान प्रतिनिधियों का नेतृत्व भारत के विदेश मंत्री डॉ एस. जयशंकर कर रहे थे। केंद्रीय विदेश मंत्री एसो जयशंकर ने

दलित बूथ अध्यक्ष के आवास पर नाश्ता किया और नाश्ते को आनंद के साथ खाया और साथ की कहा की - वाराणसी में जी-20 कार्यक्रमों की मेजबानी होगी जहां खाद्य सुरक्षा, अनाज, खाद्य और बाजार आदि विषय को चर्चा का केंद्र बनेंगे। G20 भारतीय अध्यक्षता के तहत जी-20 विकास मंत्रियों की बैठक में बढ़ती चुनौतियों जैसे आर्थिक मंदी, ऋष्य संकट, जलवायु परिवर्तन के प्रभाव, प्रदूषण और जैव विविधता के नुकसान,

बढ़ती गरीबी और असमानता, खाद और ऊर्जा असुरक्षा, जीवन यापन के संकट, वैश्विक आपूर्ति, शृंखला व्यवधान और भू-राजनीतिक संघर्ष और तनाव जैसे गंभीर विषयों को उजागर किया गया।

जी-20 विकास मंत्रिस्तरीय बैठक एसडीजी अवधि में तेजी लाने के लिए सामूहिक रूप से होने और समहत होने और विकास, पर्यावरण और जलवायु एजेंडा के बीच तालमेल को बढ़ावा देने के अवसरों और विकासशील देशों के लिए प्रगति में बाधा डालने वाले महंगे व्यापार से बचने का प्रस्ताव प्रेरित किया गया।

डी डब्लू जी

पिछले जी-20 प्रेसीडेंसी द्वारा किए गए महत्वपूर्ण कार्य का निर्माण करते हुए, एस डी जी की दिशा में प्रगति में तेजी लाने और इस संबंध में G20 के दीर्घकालिक दृष्टिकोण को मजबूत करने के लिए G20 के योगदान को बढ़ाने के अपने जनादेश को आगे बढ़ाया है, जिसमें टिकाऊ, समावेशी और बढ़ावा देने की दिशा में G20 के प्रयासों को मजबूत



करना शामिल है। लचीला आर्थिक विकास।

प्रतिनिधियों को दुनिया के सबसे पुराने शहरों में से एक, वाराणसी की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं की एक झलक प्रदान करने के लिए सांस्कृतिक कार्यक्रम, प्रदर्शनियां और भ्रमण भी आयोजित किए गए हैं।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने वीडियो संदेश के माध्यम से जी20 विकास मंत्रियों की बैठक को संबोधित किया। जनसभा को संबोधित करते हुए प्रधानमंत्री ने लोकतंत्र के सबसे पुराने जीवित शहर वाराणसी में सभी का स्वागत किया। काशी के महत्व पर प्रकाश डालते हुए, प्रधान मंत्री ने कहा कि यह सदियों से ज्ञान, चर्चा, बहस, संस्कृति और अध्यात्मिकता का केंद्र रहा है, जबकि इसमें भारत की विविध विरासत का सार भी है जो सभी हिस्सों के लोगों के लिए एक अभिसरण बिंदु के रूप में कार्य करता है। मोदी ने प्रसन्नता व्यक्त की कि जी-20 विकास एजेंडा काशी तक भी पहुंच गया है। वैश्विक दक्षिण के लिए विकास एक मुख्य मुद्दा है', प्रधान मंत्री ने टिप्पणी की, जैसा कि उन्होंने बताया कि वैश्विक दक्षिण महामारी के कारण उत्पन्न व्यवधानों से वैश्विक दक्षिण के देश गंभीर रूप से प्रभावित थे, जबकि भू-राजनीतिक तनाव भोजन के लिए जिम्मेदार थे, ईंधन और उर्वरक संकट। ऐसी परिस्थितियों में, प्रधान मंत्री ने जारी रखा, आपके द्वारा लिए गए निर्णय संपूर्ण मानवता के लिए महत्वपूर्ण हैं। मोदी ने जोर देकर कहा कि सतत विकास लक्ष्यों को पीछे नहीं आने देना लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है।



उन्होंने आगे कहा कि ग्लोबल साउथ को दुनिया को एक मजबूत संदेश भेजना चाहिए।

वाराणसी में चल रही जी-20 विकास मंत्रियों की बैठक के सफल समापन के बाद प्रतिनिधियों ने विदेश मंत्री एस जयशंकर के साथ मंगलवार को सारनाथ के आध्यात्मिक बौद्ध स्थल का दौरा किया।

विदेशी प्रतिनिधियों ने अपनी यात्रा के दौरान प्राचीन स्मारक, धर्मेक स्तूप और संग्रहालय को देखा। उत्तर प्रदेश सरकार ने 115 गाइड भी नामित किए थे जो विदेशी प्रतिनिधियों के साथ थे।

सारनाथ यात्रा के दौरान विदेशी प्रतिनिधियों ने 43.6 मीटर ऊंचे और 28 मीटर चौड़े धर्मेक स्तूप की 'परिक्रमा' की। बाद में सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसके बाद सभी मेहमान दिल्ली के लिए रवाना हो गए।

'वसुधैव कुटुम्बकम' के आदर्श वाक्य के साथ, वाराणसी में कुल 6 जी 20 बैठकें होंगी। इसके लिए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के निर्देश पर पूरे शहर को खूबसूरती से सजाया गया है और मेहमान देशों के महापुरुषों और वास्तुशिल्प की चित्रकारी कर वीआईपी रुटों को सजाया संवारा गया। वसुधैव

कुटुंबकम की सोच को काशी की धरती पर उतारा गया। इसके तहत क्षेत्रीय, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय थीम पर काशी के प्रमुख मार्गों पर चित्रकारी, सड़क से लेकर इमारतों और घाटों तक रोशनी और जनसहभागिता के साथ शहर का सौंदर्यकरण और कुछ प्रमुख दीवारों पर चित्रकारी की गई और साथ ही सुरक्षा के कड़े इंतजाम किए गए हैं। जी20 की मुख्य बैठक होटल ताज में हुआ।

काशी सदियों से ज्ञान, चर्चा, वाद-विवाद, संस्कृति और अध्यात्म का केंद्र रहा है। सौ से अधिक आकांक्षी जिलों में लोगों के जीवन को बेहतर बनाने के प्रयास किए हैं जो अल्प-विकास गाले पॉकेट थे। डिजिटलीकरण ने एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाया है जहां प्रौद्योगिकी का उपयोग लोगों को सशक्त बनाने, डेटा को सुलभ बनाने और समावेशिता सुनिश्चित करने के लिए एक उपकरण के रूप में किया जा रहा है। भारत महिला सशक्तिकरण तक ही सीमित नहीं है बल्कि महिलाओं के नेतृत्व गाले विकास तक फैला हुआ है।

भारत के केंद्रीय विदेश मंत्री डॉ. एस जयशंकर पार्टी पदाधिकारियों के साथ वार्ड नंबर 34, बूथ नंबर 286, मलदहिया, अध्यक्ष सुजाता के आवास



पर नाश्ता किया। नाश्ते के दौरान उनके साथ भारतीय जनता पार्टी के अन्य नेता भी उनके साथ मौजूद रहे। उन्होंने मीडिया से बात करते हुए बताया कि नाश्ता काफी स्वादिष्ट रहा। विदेश मंत्री एस जयशंकर ने सुजाता धुसिया के घर जमीन पर बैठकर सुद्धा-शाकाहारी देशी नाश्ता किया और कुल्हड़ में जल ग्रहण किया। उन्होंने यह भी कहा कि काशी बाबा की नगरी है और यहां आना सौभाग्य की बात है। वाराणसी में जी-20 कार्यक्रमों की मेजबानी होगी जहां खाद्य सुरक्षा, अनाज, खाद्य और बाजार आदि विषय को चर्चा का केंद्र बनेंगे। इसके अलावा दलित महिला सुजाता ने मीडिया से बात करते हुए बताया कि इएम एस० जय शंकर आगमन से एक रात पूर्व मंत्री से ही उनके घर पर तैयारियां चल रही थीं पूरा परिवार घर की साफ-सफाई और सजावट में जुटा हुआ था। उनके लिए यह बहुत ही खुशी का पल था। उन्होंने यह भी कहा कि उन्हें कभी इस बात का भरोसा नहीं था कि उनके घर इतने बड़े शक्तिशाली हस्ती का आगमन होगा। वैश्विक दक्षिण के लिए विकास एक मुख्य मुद्दा है', प्रधान मंत्री ने टिप्पणी की, जैसा कि उन्होंने बताया कि वैश्विक दक्षिण महामारी के कारण उत्पन्न व्यवधानों से वैश्विक दक्षिण के देश गंभीर

रूप से प्रभावित थे, जबकि भू-राजनीतिक तनाव भोजन के लिए जिम्मेदार थे, ईंधन और उर्वरक संकट। ऐसी परिस्थितियों में, प्रधान मंत्री ने जारी रखा, आपके द्वारा लिए गए निर्णय संपूर्ण मानवता के लिए महत्वपूर्ण हैं। श्री मोदी ने जोर देकर कहा कि सतत विकास लक्ष्यों को पीछे नहीं आने देना लोगों की सामूहिक जिम्मेदारी है। उन्होंने आगे कहा कि ग्लोबल साउथ को दुनिया को एक मजबूत संदेश भेजना चाहिए। ग्लोबल साउथ शब्द का प्रयोग मोटे तौर पर उन देशों के संदर्भ में होना शुरू हुआ जो औद्योगिकरण के दौर से बाहर रह गए थे और पूंजीवादी एवं साम्यवादी देशों के साथ विचारधारा का टकराव रखते थे, जिसे शीत युद्ध ने प्रबल किया था। इसमें अधिकांशतः एशिया, अफ्रीका और दक्षिण अमेरिका के देश शामिल हैं। इसके अलावा, वैश्विक उत्तर या 'ग्लोबल नॉर्थ' को अनिवार्य रूप से अमीर और गरीब देशों के बीच एक आर्थिक विभाजन द्वारा परिभाषित किया गया है। 'ग्लोबल नॉर्थ' मोटे तौर पर अमेरिका, कनाडा, यूरोप, रूस, ऑस्ट्रेलिया और न्यूज़ीलैंड जैसे देशों को संदर्भित करता है। बड़ी आबादी, समृद्ध संस्कृतियों और प्रचुर प्राकृतिक संसाधनों के कारण 'ग्लोबल साउथ' एक महत्वपूर्ण

भूभाग है। इसके अतिरिक्त, गरीबी, असमानता और जलवायु परिवर्तन जैसे वैश्विक मुद्दों को संबोधित करने के लिये ग्लोबल साउथ को समझना महत्वपूर्ण है।

बैठक को संबोधित करते हुए यूएनसीटीएडी यानी संयुक्त राष्ट्र व्यापार और विकास सम्मेलन के महासचिव ग्रिन्स्पैन ने कहा कि वाराणसी में होने वाली यह जी20 समिट ग्लोबल साउथ की चिंता दूर करने में कारगर साबित होगी। इस दौरान विदेश मंत्री एस जयशंकर प्रसाद भी मौजूद रहे।

जी 20 देशों के विकास मंत्रियों के समक्ष इएम एस० जय शंकर ने काशी का विकास मॉडल भी भी प्रस्तुत किया। काशी धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व की नगरी के पुरातन स्वरूप को बरकरार रखते हुए विकास कार्य आगे बढ़ाए जा रहे हैं। काशी विश्वनाथ धाम कॉरिडोर को आदर्श उदाहरण बताया गया। सिक्स व फोरलेन सड़कों, ओवरब्रिज व फुट ओवरब्रिज के निर्माण से जुड़ी जानकारियां दी गईं। यह भी बताया जाएगा कि भविष्य में विकास की गति और तेज होगी। दुनिया का तीसरा पल्लिक ट्रांसपोर्ट का रोपवे काशी में बनाया जा रहा है।

डेवलपमेंट मिनिस्ट्रियल के बाद आज वाराणसी से प्रस्थान के पूर्व इएम एस० जय शंकर ने ट्रीट के माध्यम से जी20 विकास मंत्रियों की बैठक के लिए वाराणसी में उत्कृष्ट व्यवस्था और सुचारू रूप से आयोजित तीन दिवसीय जी-20 शिखर सम्मेलन के आयोजन के लिए उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ और उत्तर प्रदेश सरकार का आभार व्यक्त किया।

बिरसा मुंडा

'छोटी उम्र बड़ी ज़िंदगी'

उन्होंने ये लड़ाई तब शुरू की थी जब वो 25 साल के भी नहीं हुए थे. उनका जन्म 15 नवंबर, 1875 को मुंडा जनजाति में हुआ था उन्हें बाँसुरी बजाने का शौक था अँग्रेज़ों को कड़ी चुनौती देने वाले बिरसा सामान्य कद-काठी के व्यक्ति थे उनका क़द था केवल 5 फ़ीट 4 इंच जॉन हॉफ़मैन ने अपनी किताब 'इनसाइक्लोपीडिया मंडारिका' में लिखा था, 'उनकी आँखों में बुद्धिमता की चमक थी और उनका रंग आम आदिवासियों की तुलना में कम काला था. बिरसा एक महिला से शादी करना चाहते थे, लेकिन जब वो जेल चले गए तो वो महिला उनके प्रति ईमानदार नहीं रही, इसलिए बिरसा ने उसे छोड़ दिया शुरू में वो बोहोंडा के जंगलों में भेड़े चराया करते थे.

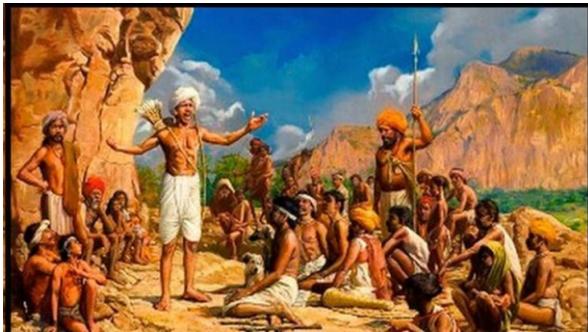


डॉ. (प्रो.) जय राम झा
ब्यूरो चीफ, पटना, बिहार



बिरसा मुंडा जिन्होंने 25 साल की उम्र में कर दिए थे अँग्रेज़ों के दांत खट्टे बीबीसी ने नई साप्ताहिक सिरीज़ शुरू की है 'छोटी उम्र बड़ी ज़िंदगी' जिसमें उन लोगों की कहानी बताई जा रही है जिन्होंने दुनिया में नाम तो बहुत कमाया, लेकिन 40 साल से पहले इस दुनिया को अलविदा कह दिया. तीसरी कड़ी में बिरसा मुंडा की कहानी पढ़िए बात नवंबर, 1897 की है. बिरसा मुंडा को पूरे 2 साल 12 दिन जेल में बिताने के बाद रिहा किया जा रहा था. उनके दो और साथियों-डॉंका मुंडा और मझिया मुंडा-को भी छोड़ा जा रहा था ये तीनों साथ-साथ जेल के मुख्य गेट की तरफ बढ़ रहे थे. जेल के कलर्क ने रिहाई के कागज़ात के साथ कपड़ों का एक छोटा-सा बंडल भी दिया बिरसा ने अपने पुराने सामान पर एक नज़र डाली और वो ये देख कर थोड़े परेशान हुए कि उसमें उनकी चप्पल और

पगड़ी नहीं थी जब बिरसा के साथ डॉंका ने पूछा कि बिरसा की चप्पल और पगड़ी कहाँ हैं, तो जेलर ने जवाब दिया कि कमिशनर फ़ोर्स के आदेश हैं कि हम आपकी चप्पल और पगड़ी आपको न दें क्योंकि सिर्फ़ ब्राह्मण, जर्मीदारों और साहूकारों को ही चप्पल और पगड़ी पहनने की इजाज़त है इससे पहले कि बिरसा के साथी कुछ कहते बिरसा ने अपने हाथ के इशारे से उन्हें चुप रहने को कहा. जब बिरसा और उनके साथी जेल के गेट से बाहर निकले तो क़रीब 25 लोग उनके स्वागत में खड़े थे उन्होंने बिरसा को देखते ही नारा लगाया, 'बिरसा भगवान की जय बिरसा ने कहा आप सबको मुझे भगवान नहीं कहना चाहिए. इस लड़ाई में हम सब बराबर हैं तब बिरसा के साथी भरमी ने कहा हमने आपको एक दूसरा नाम भी दिया था 'धरती आबा.' अब हम आपको इसी नाम से पुकारेंगे झारखंड के सबसे



सम्मानित व्यक्ति बिरसा मुंडा ने बहुत कम उम्र में अंग्रेजों के खिलाफ विद्रोह का बिगुल बजा दिया था। उन्होंने ये लड़ाई तब शुरू की थी जब वो 25 साल के भी नहीं हुए थे। उनका जन्म 15 नवंबर, 1875 को मुंडा जनजाति में हुआ था उन्हें बाँसुरी बजाने का शौक था अंग्रेजों को कड़ी चुनौती देने वाले बिरसा सामान्य कद-काठी के व्यक्ति थे उनका कृद था केवल 5 फीट 4 इंच जॉन हॉफमैन ने अपनी किताब 'इनसाइक्लोपीडिया मंडारिका' में लिखा था, 'उनकी आँखों में बुद्धिमता की चमक थी और उनका रंग आम आदिवासियों की तुलना में कम काला था। बिरसा एक महिला से शादी करना चाहते थे, लेकिन जब वो जेल चले गए तो वो महिला उनके प्रति ईमानदार नहीं रही, इसलिए बिरसा ने उसे छोड़ दिया शुरू में वो बोहोंडा के जंगलों में भेजें चराया करते थे। सन् 1940 में झारखण्ड की राजधानी राँची के नज़दीक रामगढ़ में हुए कांग्रेस के सम्मेलन में मुख्य द्वार का नाम बिरसा मुंडा गेट रखा गया था सन् 2000 में उनके जन्मदिन की तारीख पर ही झारखण्ड राज्य की स्थापना की गई थी।

ईसाई धर्म अपनाया और फिर छोड़ा भी बिरसा मुंडा की आरंभिक पढ़ाई सालगा में जयपाल नाग की देखरेख में हुई थी। उन्होंने एक जर्मन मिशन स्कूल में

दाखिला लेने के लिए था।

ईसाई धर्म अपना लिया था। लेकिन जब उन्हें लगा कि अंग्रेज़ लोग आदिवासियों का धर्म बदलवाने की मुहिम में लगे हुए हैं तो उन्होंने ईसाई धर्म छोड़ दिया था कहानी मशहूर है कि उनके एक बार कक्षा में मुंडा लोगों के लिए अपशब्दों का प्रयोग किया। बिरसा ने विरोध में अपनी कक्षा का बहिष्कार कर दिया। उसके बाद उन्हें कक्षा में वापस नहीं लिया गया और स्कूल से भी निकाल दिया गया बाद में उन्होंने ईसाई धर्म का परित्याग कर दिया और अपना नया धर्म 'बिरसैत' शुरू किया। जल्दी ही मुंडा और उराँव जनजाति के लोग उनके धर्म को मानने लगे। जल्दी ही, उन्होंने अंग्रेजों की धर्म बदलवाने की नीति को एक तरह की चुनौती के तौर पर लिया बिरसा मुंडा पर 500 रुपए का इनाम

बिरसा के संघर्ष की शुरूआत चाईबासा में हुई थी जहाँ उन्होंने 1886 से 1890 तक चार वर्ष बिताए। वहीं से अंग्रेजों के खिलाफ एक आदिवासी आंदोलन की शुरूआत हुई। इस दौरान उन्होंने एक नारा दिया

'अबूया राज एते जाना महारानी राज दुदू जाना यानी अब मुंडा राज शुरू हो गया है और महारानी का राज खत्म हो गया है बिरसा मुंडा ने अपने लोगों को आदेश दिया कि वो सरकार को कोई टैक्स न दें। 19वीं सदी के अंत में अंग्रेजों की भूमि नीति ने परंपरागत आदिवासी भूमि व्यवस्था को छिन्न-भिन्न कर दिया

साहूकारों ने उनकी ज़मीन पर क़ब्ज़ा करना शुरू कर दिया था और आदिवासियों को जंगल के संसाधनों का इस्तेमाल करने से रोक दिया गया था। मुंडा लोगों ने एक आंदोलन की शुरूआत की थी जिसे उन्होंने 'उलगुलान' का नाम दिया था उस समय बिरसा मुंडा राज्य की स्थापना के लिए जोशीले भाषण दिया करते थे। केएस सिंह अपनी किताब 'बिरसा मुंडा एंड हिज़ मूवमेंट' में लिखते हैं, 'बिरसा अपने में भाषण में कहते थे, डरो मत। मेरा साप्राज्य शुरू हो चुका है। सरकार का राज समाप्त हो चुका है। उनकी बंदूकें लकड़ी में बदल जाएंगी। जो लोग मेरे राज को नुकसान पहुंचाना चाहते हैं उन्हें रास्ते से हटा दो उन्होंने पुलिस स्टेशनों और ज़मीदारों की संपत्ति पर हमला करना शुरू कर दिया था। कई जगहों पर ब्रिटिश झंडे यूनियन जैक को उतारकर उसकी जगह सफेद झंडा लगाया जाने लगा जो मुंडा राज का प्रतीक था। अंग्रेज़ सरकार ने उस समय बिरसा पर 500 रुपए का इनाम रखा था जो उस ज़माने में बड़ी रकम हुआ करती थी। बिरसा को पहली बार 24 अगस्त 1895 को गिरफ्तार किया गया था। उनको दो साल की सज़ा हुई थी। जब दो साल बाद उन्हें छोड़ा गया था तो वो भूमिगत हो गए थे और अंग्रेजों के खिलाफ आंदोलन करने के लिए उन्होंने अपने लोगों के साथ गुप्त बैठकें शुरू कर दी थीं सरदार आंदोलन से प्रेरणा बिरसा मुंडा से कहीं पहले सन् 1858 से अंग्रेजों के खिलाफ सरदार आंदोलन की शुरूआत हो चुकी थी। उसका उद्देश्य था ज़मीदारों और बँधुआ

मज़दूरी को समाप्त करना. उसी दौरान राँची के पास सिलागेन गाँव में बुद्ध भगत ने आदिवासियों को अंग्रेज़ों के खलिफ़ संगठित किया था उन्होंने क़रीब 50 आदिवासियों को जमा किया था जिनके हाथ में हमेशा तीर कमान हुआ करते थे. उनका नारा था 'अबुआ दिसोम रे, अबुआ राज' यानी ये हमारा देश है और हम इस पर राज करेंगे. जब भी कोई ज़मींदार या पुलिस अफ़सर लोगों पर ज़्यादती करता पाया जाता था, बुद्ध अपने दल के साथ पहुंच कर उसके घर पर हमला बोल देते थे तुहिन सिन्हा और अंकिता वर्मा अपनी किताब 'द लीजेंड ऑफ बिरसा मुंडा' में लिखते हैं, 'एक बार एक मुहिम पर जाने से पहले बुद्ध और उनके साथियों ने तय किया कि वो शिव मंदिर में पूजा करेंगे. जब वो मंदिर के पास पहुंचे तो वो अंदर से बंद था. वो अभी सोच ही रहे थे कि क्या किया जाए अचानक 20 पुलिसवाले मंदिर के अंदर से निकले, इसके बाद मुठभेड़ शुरू हो गई जिसमें बुद्ध समेत 12 आदिवासी मारे गए और बाकी लोगों को बंदी बना लिया गया बताया जाता है कि दस गोलियाँ लगने के बावजूद बुद्ध ने मरते-मरते कहा, आज तुम्हारी जीत हुई है, लेकिन ये तो अभी शुरुआत है. एक दिन हमारा 'उलगुलान' तुम्हें हमारी ज़मीन से बाहर फेंक देगा डोम्बारी पहाड़ पर सैनिकों से मुठभेड़'

सन् 1900 आते-आते बिरसा का संघर्ष छोटानागपुर के 550 वर्ग किलोमीटर इलाके में फैल चुका था. सन् 1899 में उन्हें अपने संघर्ष को और विस्तार दे दिया था. उसी साल 89 ज़मीदारों के घरों में आग लगाई गई थी.

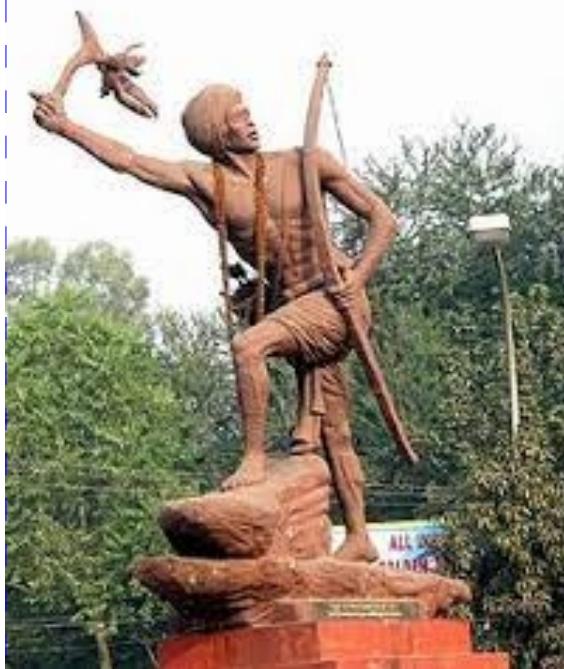
आदिवासी विद्रोह इतना बढ़ गया था कि राँची के ज़िला कलेक्टर को सेना की मदद माँगने के लिए मजबूर होना पड़ा था डोम्बारी पहाड़ी पर सेना और आदिवासियों की भिड़ंत हुई थी. केएस सिंह अपनी किताब में लिखते हैं, 'जैसे ही आदिवासियों ने सैनिकों को देखा उन्होंने अपने तीर-कमान और तलवारें लहराना शुरू कर दीं. अंग्रेज़ों ने दुभाषण के ज़रिए मुंडारी में उनसे हथियार डालने के लिए कहा. पहले तीन राउंड गोली चलाई गई. लेकिन उसका कोई असर नहीं हुआ. आदिवासियों को लगा कि बिरसा की भविष्यवाणी सच साबित हुई है कि अंग्रेज़ों की बंदूकें लकड़ी में और उनकी गोलियाँ पानी में बदल गई हैं.'

उन्होंने चिल्ला कर इस गोलीबारी का जवाब दिया. इसके बाद अंग्रेज़ों ने दो राउंड गोली चलाई. इस बार दो 'बिरसैत' मारे गए. तीसरा राउंड चलने पर तीन आदिवासी धराशायी हो गए. उनके गिरते ही अंग्रेज़ सैनिकों ने पहाड़ पर हमला बोल दिया. इससे पहले उन्होंने पहाड़ के दक्षिण में कुछ सैनिक भेज दिए ताकि वहाँ से आदिवासियों को बच निकलने से रोका जाए केएस सिंह ने लिखा है, 'इस मुठभेड़ में सैकड़ों आदिवासियों की मौत हुई थी और पहाड़ी पर शवों का ढेर लग गया था. गोलीबारी के बाद सुरक्षाबलों ने आदिवासियों के शव खाइयों में फेंक दिए थे और कई घायलों को ज़िंदा गाड़ दिया गया था इस गोलीबारी के दौरान बिरसा भी वहाँ मौजूद थे, लेकिन वो किसी तरह वहाँ से बच निकलने में कामयाब हो गए. कहा जाता है कि इस गोलीबारी में क़रीब 400 आदिवासी मारे गए थे, लेकिन अंग्रेज़

पुलिस ने सिर्फ़ 11 लोगों के मारे जाने की पुष्टि की थी. चक्रधरपुर के पास बिरसा को पकड़ा गया तीन मार्च को अंग्रेज़ पुलिस ने चक्रधरपुर के पास एक गाँव को घेर लिया था. बिरसा के नज़दीकी साथियों को मटा, भरमी और मौएना को गिरफ्तार कर लिया गया था. लेकिन बिरसा का कहीं अता-पता नहीं था तभी एसपी रोश को एक झोंपड़ी दिखाई दी थी. तुहिन सिन्हा और अंकिता वर्मा लिखते हैं, 'जब रोश ने अपनी संगीन से उस झोंपड़ी के दरवाज़े को धक्का देकर खोला था तो अंदर का दृश्य देख कर उनके होश उड़ गए थे. बिरसा मुंडा झोंपड़ी के बीचोंबीच पालथी मार कर बैठे हुए थे. उनके चेहरे पर अजीब सी मुस्कान थी. उन्होंने तुरंत खड़े होकर बिना कोई शब्द बोले इशारा किया था कि वो हथकड़ी पहनने के लिए तैयार हैं. रोश ने अपने सिपाही को बिरसा को हथकड़ी पहनाने का आदेश दिया. ये वो शख्स था जिसने इस इलाके में अंग्रेज़ सरकार की नींव हिला कर रख दी थी बिरसा को दूसरे रास्ते से राँची ले जाया गया ताकि लोगों को पता न चल सके कि उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया है. लेकिन जब बिरसा राँची जेल पहुंचे तो हज़ारों लोग उनकी एक झालक पाने के लिए वहाँ पहले से ही मौजूद थे.

मुखबिरी की वजह से हुई थी बिरसा की गिरफ्तारी

बिरसा के पकड़े जाने का विवरण सिंहभूम के कमिश्नर ने बंगाल के मुख्य सचिव को भेजा था 500 रुपए का इनाम घोषित होने के बाद पास के गाँव मानमारू और जरीकल के सात लोग बिरसा मुंडा की तलाश में जुट गए कमिश्नर ने अपनी



रिपोर्ट में लिखा, 'तीन फ्रेवरी को इन लोगों ने सेंतरा के पश्चिम के जंगलों में दूर से धुआँ उठते हुए देखा। जब वो पास गए तो उन्होंने देखा कि बिरसा वहाँ अपनी दो तलवारों और पत्तियों के साथ बैठे हुए थे। थोड़ी देर बाद जब बिरसा सो गए तो इन लोगों ने उसी हालत में बिरसा को पकड़ लिया। उन्हें बंदगाँव में कैंप कर रहे डिप्टी कमिश्नर के पास लाया गया बिरसा को पकड़ने वाले लोगों को 500 रुपए नकद इनाम के तौर पर दिए गए। कमिश्नर ने आदेश दिया कि बिरसा को चाईबासा न ले जाकर राँची ले जाया जाए बेड़ियों में बाँध कर अदालत लाया गया मुकदमे वाले दिन कमिश्नर फोर्ब्स ने तय किया कि बिरसा को बेड़ियों में बाँध कर जेल से अदालत लाया जाएगा ताकि लोग अपनी आंखों से देख सकें कि अंग्रेज़ सरकार से टक्कर लेने का परिणाम क्या होता है अदालत के कमरे में कमिश्नर फोर्ब्स डीसीपी ब्राउन के साथ आगे की बेंच पर

बैठे हुए थे। उनके चेहरे पर एक विजयी मुस्कान थी। वहाँ फादर हॉफमैन भी अपने एक दर्जन साथियों के साथ मौजूद थे।

तभी बाहर से एक शोर सुनाई दिया। ब्राउन दौड़कर बाहर की तरफ भागे। वहाँ भारी भीड़ बिरसा की रिहाई की माँग कर रही थी। उसके साथ व़री ब 40 साशस्त्र पुलिसकर्मी चल रहे थे साफ दिखाई दे रहा था कि जेल में बिरसा की कोड़ों से काफ़ी पिटाई की गई थी

लेकिन ये लग नहीं रहा था कि बिरसा को किसी तरह का कोई दर्द है। ये दृश्य देखते ही ब्राउन को अपनी ग़लती का एहसास हो गया था उन्होंने सोचा था कि बिरसा को बेड़ियों में बाँध कर अदालत लाने से संदेश जाएगा कि अंग्रेज़ों के खिलाफ़ बग़ावत का परिणाम कितना बुरा हो सकता है, लेकिन इसका उलटा असर हुआ था। लोग डरने के बजाए बिरसा के समर्थन में उतर आए थे। बिरसा पर लूट, दंगा करने और हत्या के 15 मामलों में आरोप तय किए गए थे जेल में हुई मौत

जेल में बिरसा को एकांत में रखा गया तीन महीने तक उन्हें किसी से मिलने नहीं दिया गया। सिर्फ़ एक घंटे के लिए रोज़ उन्हें सूरज की रोशनी पाने के लिए अपनी कोठरी से बाहर निकाला जाता था एक दिन बिरसा जब सोकर उठे तो उन्हें तेज़ बुखार और पूरे शरीर में भयानक दर्द था। उनका गला भी इतना खराब हो चुका

था कि उनके लिए एक घूंट पानी पीना भी असंभव हो गया था। कुछ दिनों में उन्हें खून की उल्टियां शुरू हो गई थीं। 9 जून, 1900 को बिरसा ने सुबह 9 बजे दम तोड़ दिया बाद में रांची जेल के अधीक्षक कैप्टन एंडरसन ने जांच समिति के सामने दिए बयान में कहा, 'जब बिरसा के पार्थिव शरीर को कोठरी के बाहर लाया गया तो जेल में कोहराम मच गया। सभी बिरसैतों को बुलाकर बिरसा के शव को पहचानने के लिए कहा गया। लेकिन उन्होंने डर की वजह से ऐसा करने से इनकार कर दिया नौ जून की शाम साढ़े पाँच बजे शरीर का पोस्टमॉर्टम किया गया। उनके शरीर में बड़ी मात्रा में पानी पाया गया। उनकी छोटी आँत पूरी तरह से नष्ट हो चुकी थी। पोस्टमॉर्टम रिपोर्ट में उनकी मौत का कारण हैंजा बताया गया।

बिरसा के साथियों का मानना था कि उन्हें ज़हर दिया गया था, आखरी समय में जेल प्रशासन ने उन्हें मेडिकल सहायता नहीं दी, इससे इस आशंका को और बल मिला अपने अंतिम क्षणों में बिरसा कुछ पलों के लिए होश में आए। उनके मुंह से शब्द निकले, 'मैं सिर्फ़ एक शरीर नहीं हूँ, मैं मर नहीं सकता। उलगुलान (आंदोलन) जारी रहेगा बिरसा की मृत्यु के साथ ही मुंडा आंदोलन शिथिल पड़ गया था, लेकिन उनकी मौत के आठ साल बाद अंग्रेज़ सरकार ने 'छोटानागपुर टेनेंसी एक्ट' पारित किया जिसमें प्रावधान था कि आदिवासियों की भूमि को गैर-आदिवासी नहीं खरीद नहीं सकते।



ढांचागत विकास का बोझ सहती धरती वनों को काट कर अपने ही पांव पर कुल्हाड़ी मार रहा मानव

हम पृथ्वी की ऊपरी सतह, जिसे अर्थ क्रस्ट भी कहते हैं, को अब हम जितना कमज़ोर बना देंगे या उसके ऊपर होने वाले विकास को समुचित विज्ञानी समझ व साधनों के साथ खड़ा नहीं करेंगे, तो आपदाएं, जो आनी ही आनी हैं, उनके कहर से नहीं बच सकेंगे। कहने का मतलब है कि पृथ्वी के आवरण की ही बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे इस दृष्टि से भी देखा जा सकता है कि जितना वनाच्छादित क्षेत्र में रहेंगे, उतना पृथ्वी के आवरण को ज्यादा नुकसानों से बचा पायेंगे। वनों की भूमिका सुरक्षा के रूप में समझी जा सकती है क्योंकि चाहे तूफान हो या भूकंप, हर तरह के वाइब्रेशन को रोकने की क्षमता इसमें होती है।



अनुमान से 10 वर्ष पहले ही खत्म हो जाएगी आर्कटिक महासागर की बर्फ, कनाडाई जंगलों में आग के धुएं से न्यूयॉर्क की हवा दिल्ली से भी खराब, दूटा रिकॉर्ड मार्च में दूसरी बार सबसे गर्म हुई धरती, यह समाचार पत्रों के वह शीर्षक हैं जिससे हम सभी को आशंकित होना चाहिए, कि धरती तेजी से अपनी क्षमता को खोती जा रही है। कभी तेज बारिश तो कभी लगातार आने वाले भूकंप के झटकों द्वारा मानवता को हानि पहुंचाना सामान्य से बात हो गई है। हम सभी को एक बात तो समझना चाहिए कि पृथ्वी के गर्भ पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। मतलब भूकंप मनुष्य की तमाम समझ और शक्तियों की सीमाओं से बाहर है। यह तय है कि भूकंप कभी भी और कहीं भी आ सकता है। इसकी तीव्रता क्या होगी, यह

भी हम नहीं जान सकते, परंतु भूकंपों में होने वाले नुकसान को कम करना सीधे मनुष्य के नियंत्रण में है। पृथ्वी का आवरण कितना सुरक्षित हो, उस पर हमारा सीधा नियंत्रण है। यह बात हर तरह की आपदा में नुकसानों को कम करने में सहायक होगी। मतलब, हम जिस तरह का ढांचागत विकास कर रहे हैं, उसके अनुसार ही प्रकृति हमसे व्यवहार करती है। हर आपदा में इन्हीं ढांचागत विकास पर चोट पहुंचती है। अब अगर हम आज लगातार विश्वालकाय वृक्षों को काटकर उनकी जगह सड़कें बना रहे हैं तो उसका असर हमारे पर्यावरण पर पढ़ना लाजिमी है।

आज की सबसे बड़ी बहस और बातचीत यह होनी चाहिए कि आज आपदाएं कहीं पर किसी भी रूप में आ



पवन तिवारी
वरिष्ठ पत्रकार

सकती हैं, लेकिन ज्यादा महत्वपूर्ण बात यह है कि पृथ्वी की सतह के साथ हम कैसा व्यवहार करते हैं है, उससे ही नुकसान और फायदे तय होंगे। पृथ्वी के आवरण को हम जितना सुरक्षित रखेंगे, हम उतने ही सुरक्षित रहेंगे।

पृथ्वी पर एक आपदा ऐसी है, जो सबसे भारी तबाही मचाती है। वह है भूकंप, जो चेतावनी का मौका भी नहीं देता। भू वैज्ञानिकों का मानना है कि आने वाले समय में हिमालय या उत्तर भारत में एक बड़ा भूकंप आ सकता है। भूकंप एक ऐसी भूगर्भीय क्रिया है, जिसकी समझ अभी तक वैज्ञानिकों के पास नहीं है।

हमें यह भी अवश्य समझ लेना चाहिए कि हम पृथ्वी की ऊपरी सतह, जिसे अर्थ क्रस्ट भी कहते हैं, को अब हम जितना कमजोर बना देंगे या उसके ऊपर होने वाले विकास को समुचित विज्ञानी समझ व साधनों के साथ खड़ा नहीं करेंगे, तो आपदाएं, जो आनी ही आनी हैं, उनके कहर से नहीं बच सकेंगे। कहने का मतलब है कि पृथ्वी के आवरण की ही बड़ी महत्वपूर्ण भूमिका है। इसे इस दृष्टि से भी देखा जा सकता है कि जितना वनचाढ़ित क्षेत्र में रहेंगे, उतना पृथ्वी के आवरण को ज्यादा नुकसानों से बचा पायेंगे। वनों की भूमिका सुरक्षा के रूप में समझी जा सकती है क्योंकि चाहे तूफान हो या भूकंप, हर तरह के वाइब्रेशन को रोकने की क्षमता इसमें होती है।

अपनी अनचाही जरूरतों को पूरा करने के लिए जिस कदर वनों को समाप्त किया जा रहा है उसका असर कहीं ना कहीं हम पर ही पढ़ना अवश्यंभावी है, इसलिए जरूरी है कि पृथ्वी के गर्भ त



पर्यावरण को हम प्राथमिकता के साथ से अधिक वस्तुओं का निर्माण प्रत्येक समझें, अन्यथा यह अपने ही पैरों में कुल्हाड़ी मारने जैसा होगा।

धरती के वजन से अधिक हो गया मानव निर्मित वस्तुओं का वजन

हाल ही में राष्ट्रीय जनरल नेचर में छपे एक शोध से पता चला है कि आने वाले वर्षों में धरती पर इंसान कितना ज्यादा निर्माण कर चुका होगा वह प्राकृतिक तत्वों से भी ज्यादा भारी हो जाएगा। मानव द्वारा निर्मित किन वस्तुओं में प्लास्टिक लोहा निर्माण के कंक्रीट आदि सभी को शामिल हैं। यह शोध इजरायल के वीजमैन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंसेज के शोधकर्ताओं द्वारा किया गया है। शोधकर्ताओं के अनुसार बीसवीं शताब्दी की शुरुआत में मानव निर्मित वस्तुओं का वजन दुनिया के कुल बायोमास के लगभग तीन फीसदी के बराबर था जो 2020 के बाद प्राकृतिक बायोमास से भी ज्यादा करीब 1.1 टेराटन हो जाएगा। दुनिया में हर व्यक्ति के लिए उसके शरीर के वजन



राजस्थान के रेड डायमंड का खजाना

कौन बनेगा करोड़पति
कार्यक्रम में अमिताभ बच्चन द्वारा
प्रशंसित डा बी एम भारद्वाज और
उनकी पत्नी श्रीमती माधुरी
भारद्वाज द्वारा विक्षिप्त, बेसहारा,
बीमार और अस्फायों की सेवा के
लिए समर्पित भरतपुर में स्थापित
अपना घर के विस्तार के लिए अभी
कुछ दिनों पहले बाड़ी की मिट्टी में
जन्मे अमेरिका निवासी भामाशाह
डॉक्टर केशव मंगल जी ने लगभग
दस करोड़ की जमीन बाड़ी कर्स्बे में
अपना घर के 1000 बैड वाले आश्रम
निर्माण के लिए दान में दे दी और
कर्स्बा वासियों ने तुरंत पांच करोड़
रुपए दान देकर सिर्फ तीन महीनों में
ही बिल्डिंग खड़ी करवा दी जिसमें
अपना घर बाड़ी के अध्यक्ष विष्णु
महेरे और उनकी समस्त टीम दिन
रात एक करके अपने सेवा के मिशन
में लगी हुई है।



सुनील मित्तल
धौलपुर राजस्थान



कई दशकों से बागी, बीहड़ और बंदूक से जोड़कर बदनाम किए जा रहे राजस्थान के एक छोटे से जिले धौलपुर जो कि देश के सर्वाधिक बड़े तीन राज्यों राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश को आपस में जोड़ता है और अतुलनीय खनन संपदा के लिए पूरे विश्व में जाना जाता है, राजस्थान के पूर्वी छोर पर स्थित इसी धौलपुर जिले ने अपने ऊपर लगे बागी, बीहड़ और बंदूक से लगे बदनामी के दागों को न केवल धो दिया है बल्कि मुगलकालीन लाल किलों से लेकर भारत के नए गौरव हिंदुस्तान की आन बान और शान आज की भव्य नई संसद की सुंदरता को अप्रतिम बनाने में कोई कसर नहीं छोड़ी है। 1806 में बनी धौलपुर रियासत और 1982 में बने धौलपुर जिले के इसी लाल पत्थर से बनी इन इमारतों पर जब बरसात की बूंदें गिरती हैं तो देश की इन प्राचीन और आधुनिक बुलंद इमारतों की खूबसूरती में चार चांद लगा देती हैं।

धौलपुर के इस लाल और सफेद पत्थर ने जयपुर की रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया की बिल्डिंग को जो सुंदरता प्रदान की है उसकी छटा देखते ही बनती है। भरतपुर जयपुर मार्ग पर लाल और सफेद पत्थर से बनने वाली मूर्तियां, जालियां और मंदिरों के स्तूप बनाने के जो कारखाने लगे हुए हैं वे सब धौलपुर के इसी लाल और सफेद पत्थर से आबाद हैं। आज इसी लाल और सफेद पत्थर की प्रचुरता में सहज उपलब्धता ने इसे सात समंदर पार तक पहुंचा दिया है।

धौलपुर जो कि राजस्थान, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश की सुंदर और समृद्ध संस्कृतियों की त्रिवेणी के रूप में विख्यात है और यही धौलपुर, जिसे आगरा और ग्वालियर की सगी बहन की तरह जाना जाता है, ये उसी आगरा मुंबई राष्ट्रीय राजमार्ग और रेल मार्ग पर स्थित है जो कश्मीर को कन्याकुमारी को सीधे जोड़ता है। एक तरफ आगरा का

ताजमहल और दूसरी तरफ ग्वालियर का सिंधिया महल और बीच में देश के सारे तीर्थों का भांजा धौलपुर का तीर्थराज मचकुंड देश भर के सैलानियों को आकर्षित करने के लिए देश भर में सुविख्यात है।

एक बात जिस पर अभी सैलानियों की नजर नहीं पड़ी है वो है धौलपुर की बेहद खूबसूरत और प्राकृतिक छटा से लकड़क यहां की झीलें और बांध।

जहांगीर के मनसबदार सुलेहखान द्वारा 1622 ईस्ती में निर्मित बाड़ी कर्स्बे से पांच किलोमीटर दूर स्थित तालाब ए शाही जो कि एक विशाल क्षेत्रफल में फैली हुई झील है और बरसात के मौसम के तुरंत बाद अपने सबसे सुंदर रूप में होती है, अपनी बेहद रमणीक छतरियों और सुंदर उद्यानों वाले राजमहलों के लिए जानी जाती है। यहां कई हिंदी फिल्मों की शूटिंग भी हुई है। दस किलोमीटर से भी अधिक लंबाई में फैली रामसागर झील, पार्वती बांध, निभी का ताल, वन विहार, रामसागर वन अभियारण्य, कई एकड़ों में फैले महाराज बाग जिसमें राजा भगवंत सिंह जी द्वारा 1898 में बनवाई गई प्रसिद्ध तीन मंजिला बारहदरी, धौलपुर में स्थित सात मंजिला बाबड़ी, धौलपुर से चार किलोमीटर दूर स्थित झोर गांव में मुगल शासक बाबर द्वारा 1527 में निर्मित कमल के फूल का बाग, देश के पांच मिलिट्री स्कूलों में से एक 1962 में स्थापित धौलपुर मिलिट्री स्कूल, पुरानी छावनी में स्थित हनुमान जी की मूर्ति जिनके बारे में कहा जाता है कि प्रतिमा में उनकी नसें दिखाई देती हैं जिसे देखने और मन्त्रत मांगने देश भर से हनुमान भक्त आते हैं, देश भर में ऐसी इकलौती प्रतिमा है। इसके अलावा शेरगढ़ का किला, रियासत कालीन

चोपड़ा का शिव मंदिर जो कि पत्थर पर अपनी शानदार नक्काशी के लिए देश भर में प्रसिद्ध है कुछ ऐसे ही मशहूर दर्शनीय स्थल हैं। धौलपुर शहर के बिलकुल मध्य में स्थित रियासतकालीन निहाल ठावर जिसे लोग घंटाघर के नाम से भी जानते हैं, देश में सबसे ऊंचा घंटाघर है। इसके घंटे की आवाज कई किलोमीटर तक सुनाई देती है इसे तत्कालीन रियासत के राजा निहाल सिंह ने बनवाया था।

बाड़ी कर्स्बे से लगभग 20 किलोमीटर दूर दमोह नामक स्थान पर लगभग 300 फीट की ऊंचाई से गिरने वाला झरना बरसाती दिनों में मेले की तरह पर्यटकों को अपनी ओर आकर्षित करता है। यहां प्राचीन चरणावती नदी जो कि अब चंबल के नाम से जानी जाती है, अपने मीठे पानी से न केवल धौलपुर की प्यास बुझाती है बल्कि खारे पानी के लिए मशहूर भरतपुर और उसकी समस्त तहसीलों को अपना मीठा पानी पिलाकर प्यास बुझ रही है। इसी धौलपुर जिले का एक छोटा सा कस्बा बाड़ी जो कि रक्कदाताओं और दान दाताओं के लिए पूरे राजस्थान में चर्चा का विषय बना हुआ है, हजारों यूनिट्स लड हर महीने लड बैंक को भिजवा देता है। इस मुहिम में भारत विकास परिषद के क्षेत्रीय संयुक्त महासचिव और पूर्व पी एम ओ डा शिव दयाल मंगल, शिक्षक ब्रजेंद्र सोनी और अग्रवाल फाउंडेशन के फाउंडर रोहित मंगल के साथ साथ भारत विकास परिषद बाड़ी की अहम भूमिका रहती है।

कौन बनेगा करोड़पति कार्यक्रम में अमिताभ बच्चन द्वारा प्रशंसित डा बी एम भारद्वाज और उनकी पत्नी श्रीमती माधुरी भारद्वाज द्वारा विक्षिप्त, बेसहारा, बीमार और अस्थायों की सेवा के लिए समर्पित

भरतपुर में स्थापित अपना घर के विस्तार के लिए अभी कुछ दिनों पहले बाड़ी की मिट्टी में जन्मे अमेरिका निवासी भामाशाह डॉक्टर केशव मंगल जी ने लगभग दस करोड़ की जमीन बाड़ी कर्स्बे में अपना घर के 1000 बैड वाले आश्रम निर्माण के लिए दान में दे दी और कस्बा वासियों ने तुरंत पांच करोड़ रुपए दान देकर सिर्फ तीन महीनों में ही बिल्डिंग खड़ी करवा दी जिसमें अपना घर बाड़ी के अध्यक्ष विष्णु महेरे और उनकी समस्त टीम दिन रात एक करके अपने सेवा के मिशन में लगी हुई है। अब वर्तमान राज्य सरकार ने यहां मेडिकल कॉलेज बनवाकर धौलपुर को राजस्थान के अग्रणी जिलों में खड़ा कर दिया है।

चलते चलते कुछ बातें और, धौलपुर का नाम बेहद नाटे कद के कलाकार नारायण सिंह बैगनिया ने अपने संगीत और नृत्य कला के दम पर देश विदेश तक विख्यात किया उसे पदमश्री हारमोनियम वादक महमूद धौलपुरी राष्ट्रपति भवन दिल्ली तक ले गए। अब बाड़ी कर्स्बे की मिट्टी में पले बढ़े प्रसिद्ध बांसुरी वादक राजीव गर्ग उर्फ बोटू प्रसिद्धी की और बुलंदियों पर ले जाने का काम कर रहे हैं। इसके अलावा धौलपुर की इस माटी ने अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों यथा डा इंदु प्रकाश सिंह, सुरेंद्र सिंह परमार, डा श्रीमती निशा अग्रवाल, डा राकेश दीक्षित राज जैसे विद्वानों को भी जन्म दिया है जिनके सामाजिक सरोकारों से सीधे जुड़े साहित्य ने आम भारतीय जनता के कर्म, मर्म और धर्म को निरपेक्ष रूप से बहुत ही सरल भाषा में सबके सामने रखकर देश ही नहीं बल्कि विदेशों में भी भारत की विद्वता का डंका बजाया है। ■ ■

प्रोफेसरों की आईएएस बनने की चाहत!

वजह चाहे जो भी हो और यह वजह कितनी भी प्रभावपूर्ण क्यों ना हो, लेकिन ये दुखद और खेदजनक स्थिति होगी कि जब कोई प्रोफेसर आईएएस अफसर बनने के लिए लाइन में लगा लगा हो। हालांकि यहां यह स्पष्ट किया जाना बहुत जरूरी है कि हर एक राज्य में आईएएस श्रेणी में कुछ ऐसे पद होते हैं, जिन पर गैर कार्यकारी शाखा (नॉन सिविल सर्वेंट) के कार्मिकों का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए उत्तराखण्ड में आईएएस श्रेणी के 2 पद ऐसे विभागों के कार्मिकों को दिए जाते हैं जो न तो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आईएएस और न ही राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा पीसीएस के रूप में चुने गए हैं।



सुशील उपाध्याय



उड़ीसा के उच्च शिक्षा विभाग द्वारा लिए गए निर्णय से जुड़ी हुई खबर इन दिनों मीडिया माध्यमों पर काफी चर्चा में है। संबंधित खबर को शिक्षकों से जुड़े समूहों में काफी जोर-शोर से प्रचारित प्रसारित किया जा रहा है। इस खबर में बताया गया है कि अब उच्च शिक्षा से जुड़े लोग भी आईएएस अफसर बन सकेंगे। यह सूचना जितने उत्साह से शिक्षकों के समूहों में प्रसारित की गई है, उससे कई सवाल पैदा हो रहे हैं और शिक्षकों के मन में मौजूद दबी-छिपी आकांक्षा भी उभर कर सामने आ रही है कि वे भी आईएएस श्रेणी में अफसर बनना चाहते हैं।

आईएएस अफसर बनना कोई बुरी बात नहीं है। यह पद समाज में विशेष प्रतिष्ठा, ताकत और वैभव का प्रतीक है, लेकिन जब कोई शिक्षक या प्रोफेसर आईएएस बनने के लिए लालायित और

प्रेरित दिख रहा हो तो यह स्थिति वास्तव में चिंता पैदा करती है। बुनियादी बात यह है कि जब कोई व्यक्ति उच्च शिक्षा जैसे प्रोफेशन में आता है तो सामान्यतौर पर यह मान लिया जाता है कि वह किसी बड़े आदर्श को सामने रखकर इस कार्य के लिए प्रेरित हुआ है। पर, उड़ीसा का उदाहरण तो कुछ और ही बता रहा है।

वैसे, कोई भी प्रोफेसर अपने चरित्र में अफसर नहीं हो सकता, जबकि आईएएस के जरिये मिलने वाला पद और उससे जुड़े हुए दायित्व साफ तौर पर एक घाघ अफसर बनने की मांग कर करते हैं। तो जो लोग प्रोफेसर होने के बावजूद अफसर बनने के अभिलाषी हैं, उनकी प्रवृत्ति से साफ है कि वे एक गलत पेशे में आ गए हैं। तकनीकी आधारों पर भी देखें तो आईएएस अफसर बनने के लिए सामान्य ग्रेजुएट होना काफी है, जबकि

उच्च शिक्षा में प्रोफेसर तो छोड़िए, असिस्टेंट प्रोफेसर करने के लिए अधिक ऊंची शैक्षिक योग्यता की आवश्यकता होती है। सैद्धांतिक तौर पर ही सही, भारत सरकार ने अपने सभी वेतन आयोगों के माध्यम से हर बार प्रोफेसरों का वेतन आईएएस से ऊंचा रखा है। ताकि यह संदेश जाए कि प्रोफेसर हमेशा ही किसी अफसर की तुलना में ऊंचे कद का व्यक्ति है। वैसे, एक दौर रहा है, जब समाज के भीतर आईएएस अफसर के रूपांतर और डर की तुलना में प्रोफेसरों का आदर कहीं ज्यादा था, लेकिन अब बदलती हुई सामाजिक-राजनीतिक परिस्थितियों में आईएएस अफसर को जिस तरह की आर्थिक सुविधाएं और पैसा जुटाने के अवसर प्राप्त हुए हैं, वैसे अवसर किसी प्रोफेसर के लिए उपलब्ध नहीं हैं। मनुष्य होने के नाते सम्भवतः कुछ प्रोफेसरों के मन में भी यह बात आई होगी कि उन्हें भी आईएएस अफसरों की तरह ताकत और हैसियत बनाने के अनन्त अवसर मिलने चाहिए।

वजह चाहे जो भी हो और यह वजह कितनी भी प्रभावपूर्ण क्यों ना हो, लेकिन ये दुखद और खेदजनक स्थिति होगी कि जब कोई प्रोफेसर आईएएस अफसर बनने के लिए लाइन में लगा लगा हो। हालांकि यहां यह स्पष्ट किया जाना बहुत जरूरी है कि हर एक राज्य में आईएएस श्रेणी में कुछ ऐसे पद होते हैं, जिन पर गैर कार्यकारी शाखा (नॉन सिविल सर्वेंट) के कार्मिकों का चयन किया जाता है। उदाहरण के लिए उत्तराखण्ड में आईएएस श्रेणी के 2 पद ऐसे विभागों के कार्मिकों को दिए जाते हैं जो न

तो संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आईएएस और न ही राज्य लोक सेवा आयोग द्वारा पीसीएस के रूप में चुने गए हैं। इस श्रेणी में अभी तक राज्य स्तर पर चुने जाने वाले एलाइड श्रेणी के अफसरों को आईएएस बनने का अवसर मिलता रहा है। इनके नाम राज्य सरकार संस्तुत करती है और संघ लोक सेवा आयोग इनका इंटरव्यू लेकर इन्हें आईएएस घोषित करता है।

अब उड़ीसा में हुआ यह है कि वहां के उच्च शिक्षा विभाग ने अपने विभागीय अफसरों जो कि मूलतः शिक्षक के रूप में ही चुने गए होते हैं, के नाम भी उपर्युक्त श्रेणी में भेजने का निर्णय लिया है। संभव है कि वहां पर कोई शिक्षक आईएएस के रूप में चुन भी लिया जाए, लेकिन किसी शिक्षक के आईएएस बनने से व्यवस्था में किस तरह का परिवर्तन आएगा और विशेष रूप से उच्च शिक्षा का क्या भला होगा, यह अभी और स्पष्ट नहीं है। जहां तक शिक्षकों और प्रोफेसरों के अफसर बनने का प्रश्न है, भारत सरकार ने भी कुछ साल पहले एक ऐसी स्कीम लॉन्च की थी, जिसके माध्यम से केंद्र सरकार में ज्वाइंट सेक्रेट्री लेवल पर सीधी भर्ती का निर्णय लिया गया था। इन पदों को प्रोफेसरों के लिए भी ओपन किया गया था, तब कुछ प्रोफेसरों ने भी आवेदन किए थे और इक्का-दुक्का लोगों को भारत सरकार में ज्वाइंट सेक्रेट्री, जोकि बुनियादी तौर पर आईएएस अधिकारियों का पद है, पर नियुक्ति मिली थी।

गैर करने वाली बात यह है कि यदि कोई प्रोफेसर अपने पेशे के प्रति जरा भी ईमानदारी रखता है तो उसे शैक्षिक जगत से अलग पदों पर जाने की कोई

आवश्यकता नहीं है क्योंकि उच्च शिक्षा विभाग के अलावा विश्वविद्यालयों में अनेक प्रशासनिक पद हैं, जिन पर शिक्षकों का ही चयन किया जाता है। इनमें रजिस्ट्रार, कुलपति और विभागीय निदेशक आदि पदों का उल्लेख किया जा सकता है। यह बात पूरी तरह से स्थापित है कि अफसर और प्रोफेसर की कार्यपद्धति, चीजों को देखने का ढंग और परिणाम हासिल करने की अप्रोच पूरी तरह अलग होती है। कुछ साल पहले उत्तराखण्ड के इक्का-दुक्का विश्वविद्यालयों में एमिनेंट स्कॉलर कैटेगरी में कुछ अफसरों को प्रोफेसर बना दिया गया था। परिणाम यह निकला कि उन अफसरों ने, जो कि अब प्रोफेसर बन गए थे, पूरे अकादमिक माहौल को हिला कर रख दिया। असल में, उन्हें यह तो पता है कि किसी अधीनस्थ कर्मचारी से किस तरह से काम लिया जाता है, लेकिन उन्हें यह नहीं पता कि अपने सहकर्मी शिक्षक और शोधार्थियों के साथ किस स्तर की बाबारी का व्यवहार किया जाना है। यही मिस मैच उस वक्त भी होगा जब कोई प्रोफेसर आईएएस बनकर अफसर की कुर्सी पर बैठेगा। उड़ीसा से आई इस खबर के बाद जो असिस्टेंट प्रोफेसर या एसोसिएट प्रोफेसर अफसर बनने के खबाब बन रहे हैं, उन्हें एक बार जरूर अपने भीतर झांक कर देखना चाहिए कि कहीं वे गलत पेशे में तो नहीं आ गए हैं। ■ ■



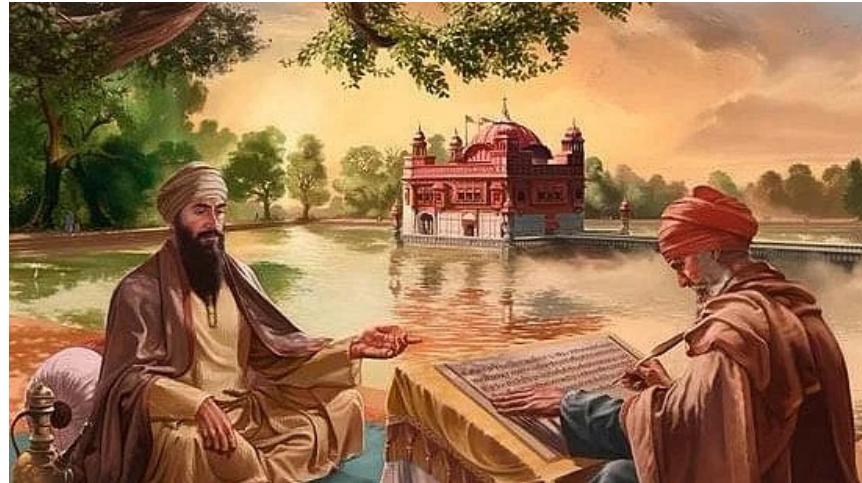
सारी जिंदगी रखा है इस्तों का भर्म
मैंने लेकिन सच तो यह है कि खुद के
सिवा कोई अपना नहीं होता।

गुरु अर्जन (अर्जुन) देव

गुरु अर्जन देव ने 'अमृत सरोवर' का निर्माण कराकर उसमें 'हरमंदिर साहब' का निर्माण भी कराया, जिसकी नींव सूफ़ी संत मियां मीर के हाथों से रखवाई गई थी। उन्होंने एक नगर भी बसाया जिसका नाम रखा गया तरनतारन नगर। अर्जन देव की रचना 'सुषमन पाठ' का सिक्ख नित्य पारायण करते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में कुल मिलाकर 5894 भजन हैं। संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की वाणी को जगह-जगह से एकत्र कर उसे धार्मिक ग्रंथ में बांटकर परिष्कृत किया। गुरुजी ने स्वयं की उच्चारित 30 रागों में 2,218 शब्दों को भी श्री गुरुग्रंथ साहिब में दर्ज किया है। भजन के शेष छंद शेख फरीद, भगत कबीर, भगत रवि दास, धना नामदेव, रामानंद, जय देव, त्रिलोचन, बेनी, पीपा और सूरदास के स्वर्गीय उच्चारण से लिए गए हैं।



डॉ चन्द्रिका प्रसाद मिश्र
नाशिक



मानवता के सच्चे सेवक, धर्म के रक्षक, शांत और गंभीर स्वभाव के स्वामी श्री गुरु अर्जन देव जी (जिन्हे अनेक लोग अर्जुन देव भी कहते हैं) अपने युग के सर्वमान्य लोकनायक थे। श्री गुरु अर्जन देव का जन्म सिख धर्म के चौथे गुरु, गुरु रामदासजी व माता भानीजी के घर वैशाख वदी 7, संवत् 1620 में तदनुसार 15 अप्रैल 1563, गोइंदवाल (अमृतसर) में हुआ था। श्री गुरु अर्जन देव साहिब सिख धर्म के 5वें गुरु हैं।

गुरु अर्जन देव के पिता गुरु रामदास जी ने रामदासपुरा नामक नगर की स्थापना की थी। जिसे अब अमृतसर के नाम से जाना जाता है। इनके पिता ने अमृतसर और संतोखसर नामक दो सरोवरों का निर्माण कार्य शुरू किया था, जिसे गुरु अर्जन देव ने ही पूरा करवाया था। अर्जन देव जी ने अमृतसर सरोवर के बीच एक धर्मसाल का निर्माण करवाया था, जिसका नाम हरिमंदिर रखा गया। इसी हरिमंदिर को आजकल स्वर्ण मंदिर

के नाम से जाना जाता है।

वे शिरोमणि, सर्वधर्म समझाव के प्रखर पैरोकार होने के साथ-साथ मानवीय आदर्शों को कायम रखने के लिए आत्म बलिदान करने वाले एक महान आत्मा थे। गुरु अर्जन देव जी की निर्मल प्रवृत्ति, सहृदयता, कर्तव्यनिष्ठा तथा धार्मिक एवं मानवीय मूल्यों के प्रति समर्पण भावना को देखते हुए गुरु रामदास जी ने 1581 में पांचवें गुरु के रूप में उन्हें गुरु गद्दी पर सुशोभित किया।

गुरु अर्जन ने पिछले गुरुओं और अन्य संतों के भजनों को आदि ग्रंथ, सिख धर्मग्रंथ के पहले संस्करण में संकलित किया, और इसे हरिमंदिर साहिब में स्थापित किया। सिख धर्म के पहले शहीद, शांति के पुंज, शहीदों के सरताज, सिखों के पांचवें गुरु अर्जुन देव जी की शहादत अतुलनीय है। मानवता के सच्चे सेवक, धर्म के रक्षक, शांत और गंभीर स्वभाव के मालिक गुरु अर्जुन देव अपने युग के सर्वमान्य लोकनायक थे। वह

दिन-रात संगत की सेवा में लगे रहते। उनके मन में सभी धर्मों के प्रति अथाह स्नेह था।

गुरु अर्जन देव ने 'अमृत सरोवर' का निर्माण कराकर उसमें 'हरमंदिर साहब' का निर्माण भी कराया, जिसकी नींव सूफ़ी संत मियां मीर के हाथों से रखवाई गई थी। उन्होंने एक नगर भी बसाया जिसका नाम रखा गया तरनतारन नगर। अर्जन देव की रचना 'सुषमन पाठ' का सिक्ख नित्य पारायण करते हैं। गुरु ग्रंथ साहिब में कुल मिलाकर 5894 भजन हैं। संपूर्ण मानवता में धार्मिक सौहार्द पैदा करने के लिए अपने पूर्ववर्ती गुरुओं की गाणी को जगह-जगह से एकत्र कर उसे धार्मिक ग्रंथ में बांटकर परिष्कृत किया। गुरुजी ने स्वयं की उच्चारित 30 रागों में 2,218 शब्दों को भी श्री गुरुग्रंथ साहिब में दर्ज किया है। भजन के शेष छंद शेख फरीद, भगत कबीर, भगत रवि दास, धन्ना नामदेव, रामानन्द, जय देव, त्रिलोचन, बेनी, पीपा और सूरदास के स्वर्गीय उच्चारण से लिए गए हैं।

गुरु अर्जुन देव ने समाज की भलाई के लिए अनेकों कार्य किये। जल की कमी को ध्यान में रखते हुए उन्होंने वडाली के निकट छह हरटों वाला एक गहरा कुआँ खुदवाया। खेती के विकास में यह एक क्रांतिकारी कदम था। इसी उद्देश्य से लाहौर के डब्बी बाजार में एक बावली बनवाई। पंजाब में अकाल और सूखे के समय वह लोगों की सेवा करने में जुड़े रहे।

गुरु अर्जुन देव बाद में अमृतसर छोड़कर वडाली आकर बस गए थे। यहीं

पुत्र हरगोविंद का जन्म हुआ। पुत्र हरगोविंद के जन्म की खुशी में उन्होंने व्यास दरिया के किनारे बढ़ाला तहसील में नगर हरगोविंदपुर बसाया। बालक हरगोविंद के जन्म की खुशी को गुरु अर्जुन देव ने अपने एक शब्द में इस प्रकार प्रकट किया है कि सतिगुरु ने बालक को मेरे घर में भेज दिया है। यह बालक किसी पूर्व संयोग के कारण पैदा हुआ है, जो लंबा जीवन जिएगा। जब इस बालक ने आकर अपनी माता के उदर में निवास किया था तो उसकी माता के मन में बड़ा आनंद हुआ था। जिस पुत्र ने हमारे घर में जन्म लिया है, वह गोविंद का भक्त है-

सतिगुरु साचै दीआ भेजि ॥
चिरु जीवन उपजिआ संजोगि ॥
उदरै माहि आइ कीआ निवासु ॥
माता कै मनि बहुतु बिगासु ॥
जंमिआ पूतु भगतु गोविंद का ॥
प्रगटिआ सभ सम महिं लिखिआ
धुर का ॥ रहाऊ ॥

उन्होंने अपनी जिंदगी में कई दुःखों को भोगा। लेकिन वे शांत और उदार बने रहे, उनका मन एक बार भी कष्टों से नहीं घबराया। गुरु जी ने कष्ट में हंसते-हंसते यही अरदास करते थे -

तेरा कीआ मीठा लागे।
हरि नामु पदारथ नानक मांगे ॥

परित्र वचनों से दुनिया को उपदेश देने वाले गुरुजी का मात्र 43 वर्ष का

जीवनकाल अत्यंत प्रेरणादायी रहा। वे आध्यात्मिक चिंतक एवं उपदेशक के साथ ही समाज सुधारक भी थे। अपने जीवन काल में गुरुजी ने धर्म के नाम पर आडंबरों और अंधविश्वासों पर कड़ा प्रहार किया। सती प्रथा जैसी सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ भी वे डंटकर खड़े रहे। गुरु अर्जन देव जी ने 'तेरा कीआ मीठा लागे, हरि नाम पदारथ नानक मागे' शब्द का उच्चारण करते हुए सन् 1606 में अमर शहीदी प्राप्त की। आध्यात्मिक जगत में गुरु जी को सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। गुरु अर्जन देव ने मसंद नामक एक प्रणाली का आयोजन किया। जहां प्रतिनिधियों के एक समूह ने गुरुओं की शिक्षाओं को पढ़ाया और प्रचारित एवं प्रसारित और उन्हें सिख की आय की आंशिक पेशकश मिली, जिसे 'दर्सीद' कहा जाता है। इसे मौद्रिक मूल्यों, सामानों या सेवाओं के संदर्भ में माना जा सकता है। इन पैसों को सिखों द्वारा गुरुद्वारे में लंगर के आयोजन के रूप में प्रयोग में लाया जाता है। लंगर सभी के लिए खुले होते हैं। जो गुरुद्वारा जाते हैं, जो कि सभी मनुष्यों के लिए जातिहीन समाजिक और समानता का प्रतीक है। जिस भूमि को आज अमृतसर के नाम से जाना जाता है उसे मुगल सम्राट अकबर ने उपहार दिया था।

अकबर रसोईघर में एक आम आदमी की तरह फर्श पर बैठकर भोजन साझा करने के तरीके से बहुत प्रभावित हुआ था। गुरु अर्जन देव अपने अनुयायियों के बीच बहुत प्रसिद्ध थे। उन्होंने गुरु नानक की शिक्षाओं और दर्शन के संदेश को धीरे-धीरे सिखाया

और फैलाया था। शांति और सहिष्णुता पर जोर देने के बाद भी, मुस्लिम कट्टरपंथियों द्वारा उनके वर्चस्व के लिए गुरु अर्जन देव को खतरा माना जाता था। अकबर के शासनकाल के दौरान उसकी उदारवाद की नीति के कारण सिख धर्म का विकास हुआ था। अकबर ने सुलह-ए-कुल की नीति का पालन किया था। वह अपने धर्मनिरपेक्ष और उदारवादी दृष्टिकोण के लिए विख्यात थे।

हालाँकि, कट्टरपंथी मुसलमानों को धार्मिक सहिष्णुता की नीति पसंद नहीं थी। यद्यपि, उन्होंने इसे एक समय तक सहन किया, उन सबको अब उन पर प्रहार करने का अवसर मिल गया। पंजाब में, मुस्लिम पुनरुत्थानवादी आंदोलन शेख अहमद सरहिंदी, मुजद्दिद अल्फ-ए-सानी (1564-1624) द्वारा शुरू किया गया था, जिसका मुख्यालय सरहिंद में था। शेख ने अकबर की नीति की कटु आलोचना की और इतना ही नहीं, हिंदू देवताओं की निंदा की और हिंदुओं को कोई भी रियायत देने के खिलाफ था।

अकबर की मौत के जहांगीर मुगल साम्राज्य का शासक बना। उसी दौरान जहांगीर के बेटे खुसरो ने बगावत कर दी थी, जिसके बाद उसके पिता ने उसे गिरफ्तार करने के आदेश दिए। गिरफ्तारी के डर से खुसरो पंजाब की ओर भागा और तरनतारन में गुरु अर्जन देव जी के पास पहुंचा। गुरु जी ने उसका स्वागत और सहयोग किया। यह बात जहांगीर को चुभ गई। इसके साथ ही जहांगीर अर्जन देव की प्रसिद्ध को भी पसंद नहीं करता था। जिस कारण से कुछ अन्य विरोधियों ने इसे एक अवसर के रूप

में देखकर आग में घी डालने का काम किया। जिसके बाद जहांगीर ने मौका देख गुरु अर्जन देव पर उल्टे-सीधे आरोप लगाकर गिरफ्तार कर लिया।

जहांगीर ने अर्जन देव को अपनी मर्जी के कार्य करवाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने झूठ और अन्याय का साथ देने से इनकार कर दिया और शहादत को चुना। इसके बाद जहांगीर ने उन्हें शहीद करने का हुक्म दिया। तदनुसार, 1606

के मई के अंत में, गुरु अर्जन देव को गिरफ्तार कर लिया गया और लाहौर लाया गया जहाँ उन्हें गंभीर यातनाएँ दी गई। उन्हें जलते तरे पर बिठाया गया और फिर उनके सिर और शरीर पर लाल गर्म रेत डाली गई। ऐसा कहा जाता है कि मियां मीर (एक मुस्लिम सूफी संत और गुरु साहिब के दोस्त) ने गुरु की ओर से हस्तक्षेप करने की कोशिश की, लेकिन गुरु जी ने उन्हें यह कहते हुए हस्तक्षेप करने से मना कर दिया कि 'यह सर्वशक्तिमान की इच्छा' है। गुरु जी के शरीर पर फफोले पड़ गए थे और उन्हें जला दिया गया था, क्योंकि उन्हें असहनीय यातनाएँ दी जा रही थीं। कई दिनों के बाद, गुरु अर्जन देव को पास में रावी नदी में शीतल स्नान करने की अनुमति दी गई।

जैसा कि हजारों ने गुरु को देखा, वह फिर कभी न दिखने के लिए नदी में प्रवेश कर गया। इस प्रकार, गुरु अर्जन देव जी ने जेठ सुदी 4 संवत् 1663, तदनुसार 16 मई, 1606 (कुछ लोगों के अनुसार 30 मई 1606) को शहादत ग्रहण की। गुरु अर्जन देव जी की शहादत ने सिक्ख धर्म के संपूर्ण चरित्र को निष्क्रिय

लोगों से साहसी संत सैनिकों में बदल दिया।

इस प्रसंग के बाद उनकी स्मृति में रावी नदी के किनारे पर ही गुरुद्वारा डेरा साहिब बनवाया गया था, जो वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। सिख परंपरा के मुताबिक, गुरु अर्जन देव जी को शहीदों का सिरताज कहा जाता है। वह सिख धर्म के पहले शहीद थे।

बादशाह जहांगीर ने अपनी डायरी 'तुजुक-ए-जहाँगीरी' ('जहाँगीर के संस्मरण') में लिखा था:

'गोइंदगाल में, जो बियाह (ब्यास) नदी पर है, वहाँ अर्जन नाम का एक हिंदू था, साधुता और पवित्रता के वस्त्रों में, यहाँ तक कि उसने हिंदुओं के कई सरल हृदयों को भी पकड़ लिया था, और यहाँ तक कि अज्ञानी और मूर्ख इस्लाम के अनुयायियों ने उनके तौर-तरीकों और आचार-विचार से उनकी पवित्रता का डमरु बजाया था। वे उन्हें गुरु कहते थे, और हर तरफ से मूर्ख लोगों की भीड़ उनकी पूजा करने और उनमें पूर्ण विश्वास प्रकट करने के लिए उमड़ पड़ती थी। तीन या चार पीढ़ियों तक (आध्यात्मिक उत्तराधिकारियों के) उन्होंने इस दुकान को गर्म रखा था। कई बार मेरे मन में आया कि मैं इस व्यर्थ के मामले को रोक दूं या उन्हें इस्लाम के लोगों की सभा में ले आऊं।'

'आखिर में जब खुसरो इस रास्ते से गुजरे तो इस तुच्छ व्यक्ति ने उनके साथ रहने का प्रस्ताव रखा। खुसरो उस स्थान पर रुके जहाँ वह थे, और उन्होंने बाहर आकर उन्हें श्रद्धांजलि दी। उन्होंने खुसरो के साथ कुछ विशेष तरीके से व्यवहार

किया, और बनाया उसके माथे पर भगवा रंग में एक उंगली का निशान, जिसे हिंदुवान (भारत के लोग) कश्का, (तिलक) कहते हैं और इसे शुभ माना जाता है। जब यह मेरे कानों में आया और मुझे उसकी मूर्खता स्पष्ट रूप से समझ में आई, तो मैंने उन्हें उसे पैदा करने का आदेश दिया और मुर्तजा खान को अपने घर, रहने की जगह और बच्चों को सौंप दिया और उसकी संपत्ति को जब्त कर लिया और आदेश दिया कि उसे मौत के घाट उतार दिया जाए।

कुछ ऐतिहासिक सूत्रों के अनुसार कहा जाता है कि गुरु अर्जन देव जी की 6

दिन की यातना दीवान चंदू शाह के बजाय, चंदू को गुरु हरगोबिंद के हवाले कर दिया गया, जिन्होंने उसे सिख अनुयायियों को सौंप दिया, जिन्होंने चंदू शाह की मृत्यु की व्यवस्था की।

गुरु हरगोबिंद जी जहाँगीर के जीवन इतिहास के अनुसार उनके मित्र थे।

अगर जहाँगीर ने गुरु अर्जन देव को मार

डाला, तो वे दोस्त क्यों बने, यह ज्ञान केवल गुरु हरगोबिंद को था। लेकिन गुरु हरगोबिंद जी जानते थे कि जहाँगीर ने गुरु अर्जन देव जी के खिलाफ आदेश दिया था क्योंकि उन्हें दीवान चंदू शाह ने गुमराह किया था। जब जहाँगीर ने यह समाचार सुना तो वह स्तब्ध रह गया और

कहा जाता है कि उसने चंदू शाह की मृत्यु का आदेश जारी कर दिया। इसके

गुरु जी के शाहीदी पर्व पर उन्हें याद करने का अर्थ है धर्म कि रक्षा आत्म-बलिदान देने को भी तैयार रहना। उन्होंने संदेश दिया कि महान जीवन मूल्यों के लिए आत्म-बलिदान देने को सदैव तैयार रहना चाहिए, तभी अपना समाज और राष्ट्र अपने गैरव के साथ जीवित रह सकते हैं।

मेरे दरवाजे पर दस्तक देना



सपना श्रीवास्तव
गौर सिटी 1 -नोएडा

शून्य में..

स्वयं को..

रेखांकित करती हूँ..

ना तस्वीर बनती है..

ना तक़दीर..!

चल कर देखा..

झूबती भी नहीं..!

उड़ने की कोशिश भी की..

पर असमथ..

अरमानों के बो..

पंख नहीं रहे..!

लुप्त होता हुआ..

पदचिन्ह भी..

भ्रमित करता है..

दो शब्द..

मैं हूँ या नहीं..!

परीक्षा देती रहूँ या..

परित्याग करू..

प्रश्न वंही रहा..

मैं हूँ या नहीं..!

इस अंतर्द्वाद में..

मैंने कई बार..

गिर कर देखा..

आवाज नहीं होती..!

मिल जाए अगर..

मेरा परिचय..

मेरे दरवाजे पर दस्तक देना.!!

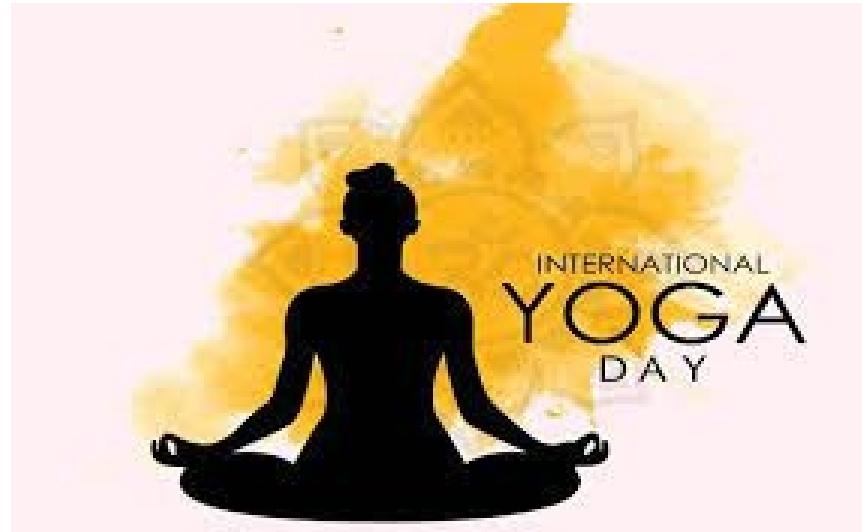
जल स्तर पर..

सूर्यं को पहचानना और मन को ईश्वर में योजित कर देना ही योग है.....

सूर्यभेदी प्राणायाम वें नियमित अभ्यास से न सिर्फ मन शांत रहता है बल्कि इससे डायबिटीज समेत कई अन्य बीमारियों में भी फायदा मिलता है लेकिन ये सारे लाभ तभी मिलेंगे जब इस प्राणायाम को सही तरीके से किया जाए। बदलते मौसम में हर किसी को बुखार या मौसमी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसका एक कारण शरीर के प्राकृतिक तापमान में असंतुलन होना भी है, ऐसे में सूर्यभेदी प्राणायाम शरीर के तापमान को संतुलित करने के साथ रक्त का शोधन भी करता है। सावधानियों के साथ इस प्राणायाम को करना चाहिए।



डॉ. अनन्तमणि त्रिवेदी
विभागाध्यक्ष संस्कृत



(विश्व योग दिवस 21 जून की मंगलमय शुभकामनाएं...)

योगेन चित्तस्य पदेन वाचां
मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां
पतंजलिं प्रांजलिरानतोऽस्मि॥

महर्षि पतंजलि ने योग की सूत्रात्मक व्याख्या करते हुए कहा कि 'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः' - चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। योग भारत की एक अमूल्य निधि है। योग शब्द 'युज् धातु' के बाद करण और भाववाच्य में घञ् प्रत्यय लगाने से बनता है। युज् धातु का अर्थ है समाधि। अतएव योग शब्द का वास्तविक अर्थ समझने के लिए समाधि शब्द का भी वास्तविक अर्थ समझने की

थोड़ी चेष्टा करनी होगी। समाधि शब्द का अर्थ है- सम्यक् प्रकार से भगवान के साथ युक्त हो जाना, मिल जाना, जीवका कामना, वासना, आसक्ति, संस्कार आदि सब प्रकार की आगंतुक मलिनता को दूरकर, स्वरूप में प्रतिष्ठित होकर, मुख्य भाव से भगवान में मिल जाना। गौणभाव भाव से भगवान से युक्त होने का सहज सुंदर स्वाभाविक उपाय भी समाधि शब्द के अंतर्गत है।

'योग' शब्द के अंदर ही हम इन्हीं दो तत्वों को निहित देखते हैं। योग शब्द का अर्थ है जीव और ब्रह्म का पूर्ण रूप से मिलन अर्थात् विजातीय, स्वजातीय एवं स्वगत भेद से रहित होकर जीव और ब्रह्म का एकत्र प्राप्त कर लेना -- भगवान के साथ भगवत् विधान के साथ संपूर्ण रूप में ताल- तालपर मिल जाना, जिस अवस्था में भगवान के अस्तित्व के सिवा

हमारा पृथक् अस्तित्व ही नहीं रह जाएगा, भगवान की इच्छा पूरी करने के अतिरिक्त हमारे जीवन में दूसरा कोई काम ही नहीं रह जाएगा। एक शब्द में- जिस अवस्था में भगवान की सत्ता, चैतन्य और आनंद अपने- आप हमारी वाणी, भाव और कार्य के द्वारा पूर्ण रूप से प्रस्फुटित होकर प्रकट हो जाय, उसी का नाम योग है। इसी अवस्था को लक्ष्य करके मनुष्य को भगवान का अवतार कहा जाता है।

'तस्मिंस्तज्जने भेदाभावात्, ब्रह्मविद् ब्रह्मैव भवति'।

ऋग्वेद से लेकर उपनिषदों तक तथा श्रीमद्भगवद्गीता से लेकर आधुनिक साहित्य तक योग की अनेक व्याख्या की गई है और व्यवस्था दी गई है। योग की अवधारणा ऋषि प्रणीत है। भारतवर्ष में महर्षि पतंजलि और योगीश्वर घेरण्ड का नाम बड़े सम्मान से लिया जाता रहा है। इसी परम्परा को योगी गुरु गोरखनाथ से लेकर आधुनिक समय में स्वामी शिवानंद सरस्वती, स्वामी सत्यानंद जी, योगीराज अरविन्द, धीरेन्द्र ब्रह्मचारी, श्री महेश योगी, और अब स्वामी रामदेव जी ने इसे महिमा मंडित किया है।

सभी लोग स्वस्थ तथा सुखी रहें यहीं योग का उद्देश्य है। बालकों में बल वृद्धि व उत्तम स्वास्थ्य निर्माण हेतु सूर्य नमस्कार उत्तम योगासन माना गया है। बचपन से ही इसका अभ्यास करने वाले बालक तेजस्वी, बुद्धिमान व बलशाली बनते हैं। ऐसे बलशाली बालक ही स्वयं की परिवार की व राष्ट्र की रक्षा करने योग्य बनते हैं। अतएव सभी बच्चों को, हम

सब को योगासन अवश्य करना चाहिए। कम से कम सूर्य नमस्कार तो अवश्य ही करें। सूर्य नमस्कार करते समय सूर्य के इन नामों का उच्चारण करना चाहिए -

1. ॐ अमिताराय नामः
2. ॐ रवये नमः
3. ॐ सूर्याराय नामः
4. ॐ भानवे नमः
5. ॐ खारायाय नामः
6. ॐ पूष्णे नमः
7. ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
8. ॐ मरीचये नमः
9. ॐ आदित्याय नमः
10. ॐ सवित्रे नमः
11. ॐ आगर्भाय नामः
12. ॐ भास्कराय नमः

॥३०॥ श्रीसूर्यनारायणाय नमः॥।।

सूर्यभेदी प्राणायाम के नियमित अभ्यास से न सिर्फ मन शांत रहता है बल्कि इससे डायबिटीज समेत कई अन्य बीमारियों में भी फायदा मिलता है लेकिन ये सारे लाभ तभी मिलेंगे जब इस प्राणायाम को सही तरीके से किया जाए। बदलते मौसम में हर किसी को बुखार या मौसमी समस्याओं का सामना करना पड़ता है, इसका एक कारण शरीर के प्राकृतिक तापमान में असंतुलन होना भी है, ऐसे में सूर्यभेदी प्राणायाम शरीर के तापमान को संतुलित करने के साथ रक्त का शोधन भी करता है। सावधानियों के साथ इस प्राणायाम को करना चाहिए।

27 सितंबर 2014 में संयुक्त राष्ट्र महासभा के अपने व्याख्यान में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी ने

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाने की अपील की, 90 दिनों के अंदर 177 देशों ने विश्व योग दिवस का प्रस्ताव पारित कर दिया, 21 जून 2015 को पूरे विश्व में पहली बार अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया, जिसमें लगभग 36000 लोगों और 84 देशों के प्रतिनिधियों ने दिल्ली के राजपथ पर योग के 21 आसन किए और भारतीय संस्कृति का ध्वज फहराया।

आज संपूर्ण विश्व में 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाता है। वर्तमान में बढ़ती समस्याओं और बीमारियों से निपटने के लिए योग बहुत आवश्यक है। हम सभी को पारंपरिक योगासन के माध्यम से अपने स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए।

आज भारत के इस योग ने दुनिया में आधुनिक विज्ञान और आयुर्वेद के साथ अपना प्रभाव छोड़ने का काम किया है। सभी स्वतः योग की ओर आ रहे हैं। समस्या दिल से संबंधित हो, तनाव से संबंधित हो, पीठ या घुटनों का दर्द हो, अनिद्रा हो, चिड़चिड़ापन हो, इन सब को एक साथ योग दूर करने में कामयाब होता जा रहा है।

कुछ बातें योग करते समय अवश्य ध्यान रखना चाहिए। सूर्य नमस्कार, गोमुख आसन, मर्कटासन और अर्धमत्स्येंद्रासन शरीर के दाएं और बाएं, दोनों हिस्सों से करने चाहिए। हर आसन दोनों ओर से करना चाहिए। बच्चों के लिए हलासन और सर्वांगासन विशेष रूप से लाभकारी हैं। पेट की समस्याओं में पवनमुक्तासन से फायदा देता है। सर्वाङ्गिकल और स्पॉन्डेलाइटिस की समस्या में गोमुख आसन से आराम

मिलता है। अर्धमत्त्येद्रासन से पैक्रियाज में इंसुलिन बनने लगता है। मधुमेह पीड़ितों को इसे अवश्य करना चाहिए। खाली पेट व्यायाम करें। भोजन और योग अभ्यास में 03 घंटे का अंतर जरूर रखें।

नरो हिताहार - विहार - सेवी
समीक्ष्यकारी विषयेष्वसक्तः।
दाता समः सत्यपरः क्षमावान्
आप्तोपसेवी च भवत्यरोगः
॥
- चरक संहिता

जो मनुष्य हितकर आहार- विहार का सेवन करता है, सोच - विचार कर काम करता है, विषयों में आसक्त नहीं होता है, दान देता है, समदर्शी होता है, सत्य बोलता है, क्षमाशील होता है तथा श्रेष्ठ पुरुषों की सेवा और संगति में रहता है, वह सदा निरोग और स्वस्थ रहता है।

आप सभी को विश्व योग दिवस 21 जून की हार्दिक मंगलमय शुभकामनाएं। लोकाः समस्ताः सुखिनो भवन्तु----

(आवश्यक सूचना :- योग प्रशिक्षित व्यक्ति के सहयोग से ही करना चाहिए)

महात्मा गांधी जी का संदेश - 'सब योगों का समाप्ति निष्काम कर्म योग है'।

सच की दस्तक

कला, साहित्य, संस्कृति व सामाजिक सरोकार की मासिक पत्रिका

पाठकों से निवेदन.

प्रिय पाठक बन्धु,

सच की दस्तक मासिक पत्रिका आप की अपनी पत्रिका है। हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास के लिए आपका सहयोग अपेक्षित है। पत्रिका निरन्तर आप के घर पहुँचती रहे इसलिए निम्न फार्म भरकर शीघ्र भेजने की कृपा करें या हमारे प्रतिनिधि से सम्पर्क करें।

श्री/श्रीमती /कुमारी.....

पता.....

.पिन कोड..... मोबाइल संख्या.....

ईमेल.....

वार्षिक सदस्यता - 300/- रुपए मात्र।

पंचवर्षीय सदस्यता - 1200/- रुपए मात्र।

पाठक अपनी सदस्यता राशि निम्न खाते में जमा कर सकते हैं और जमा करने के बाद मोबाइल पर अवश्य सूचित कर देंगे।

Sach Ki Dastak

ब्रजेश कुमार

A/c. No. : 13751652000024

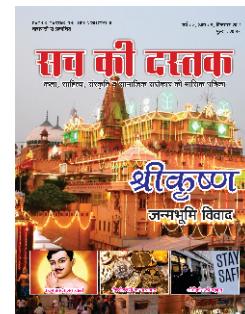
सम्पादक, सच की दस्तक

IFSC Code : PUNB0137510

Punjab National Bank

पता : 1215/A सुभाष नगर, दीनदयाल उपाध्याय नगर, चन्दौली

पिन कोड - 232101, मोबाइल नम्बर - 9621503924



मानव अधिकार

आयोग में कार्य करने वाले अधिकतर अधिकारी एवं स्टाफ भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों से आते हैं। सरकारी कार्यालयों में काफी समय तक कार्य करने के बाद वे आयोग में आते हैं, जिससे उनकी एक निश्चित सोच, बदलावों के प्रति बेहद प्रतिरोध, कार्य की नौकरशाही पद्धति और बुरी आदतों का एक भारी भरकम ढैकलांग होता है। उन्हें मानव अधिकार दर्शन के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है और न ही वे इसके लिए प्रतिबद्ध होते हैं। आयोग को एक निश्चित मात्रा में शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं। हालांकि, अध्ययन प्रकट करता है कि अधिकतर शिकायतें तीन या चार राज्यों से ही प्राप्त होती हैं। अधिकारों के प्रति जागरूकता, मात्र कुछ राज्यों तक सीमित होने से, सूचित नहीं होती।



प्रभाकर कुमार
जमुई बिहार

मानव अधिकार



राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग की स्थापना सरकार द्वारा अक्टूबर 1993 में मानवाधिकार संरक्षण अधिनियम, 1993 के अधीन की गई थी। आयोग में कुल आठ सदस्य होते हैं- एक अध्यक्ष, एक वर्तमान अथवा पूर्व सर्वोच्च न्यायालय का न्यायाधीश, एक वर्तमान अथवा भूतपूर्व उच्च न्यायालय का मुख्य न्यायाधीश, मानवाधिकार के क्षेत्र में जानकारी रखने वाले कोई दो सदस्य तथा राष्ट्रीय महिला आयोग राष्ट्रीय अनुसूचितजाति आयोग, राष्ट्रीय अनुसूचित जनजाति आयोग एवं राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग के अध्यक्ष। इसके अध्यक्ष सहित सभी सदस्यों का कार्यकाल पांच वर्ष का होता है। राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग का गठन प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में गठित एक समिति की संस्तुति पर किया गया था। इस समिति के अन्य सदस्य थे- लोक सभा अध्यक्ष, गृह मंत्री, सदन में विपक्ष के नेता तथा राज्य सभा के उप-सभापति। सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य

न्यायाधीश को आयोग का अध्यक्ष नियुक्त किया जा सकता है। लोक संहिता प्रक्रिया, 1908 (code of civil procedure, 1908) के अधीन आयोग को सिविल न्यायालय की समस्त शक्तियां प्राप्त हैं। आयोग अपने समक्ष प्रस्तुत किसी पीड़ित अथवा उसकी ओर से किसी अन्य व्यक्ति द्वारा दायर किसी याचिका पर स्वयं सुनवाई एवं कार्यवाही कर सकता है। इसके अतिरिक्त आयोग न्यायालय की स्वीकृति से न्यायालय के समक्ष लम्बित मानवाधिकारों के प्रति हिंसा सम्बन्धी किसी मामले में हस्तक्षेप कर सकता है। आयोग की यह शक्ति प्राप्त है कि वह सम्बन्धित अधिकारियों को पूर्वसूचित करके किसी भी कारागार का निरीक्षण कर सके अथवा परिस्थितियों के अनुसार अन्य नौकरशाहों को कारागारों के निरीक्षण सम्बन्धी अपनी शक्ति का प्रत्यायोजन (र्ती) कर दे। आयोग द्वारा मानवाधिकारों से सम्बन्धित संधियों इत्यादि का

अध्ययन किया जाता है तथा उन्हें और अधिक प्रभावी बनाने सम्बन्धी आवश्यक संस्तुतियां भी की जाती हैं। साधारणतः, आयोग द्वारा स्वीकृत की जाने वाली मानवाधिकारों के उल्लंघन सम्बन्धी याचिकाओं की प्रकृति इस प्रकार की होनी चाहिए घटना शिकायत करने से एक वर्ष से अधिक समय पूर्व घटित होनी चाहिए शिकायत अर्द्ध-न्यायिक प्रकार की होनी चाहिए शिकायत अनिश्चित अज्ञात अथवा छंद नाम से होनी चाहिए शिकायत तुच्छ प्रकृति की नहीं होनी चाहिए आयोग के विस्तार से बाहर की शिकायतें नहीं होनी चाहिए, तथा उपभोक्ता सेवाओं एवं प्रशासनिक नियुक्तियों से सम्बन्धित मामले। आयोग में शिकायत दर्ज कराना अत्यंत सरल कार्य है। शिकायत निःशुल्क दर्ज की जाती है। आयोग द्वारा फैक्स और तार (टर्मिज्पम) द्वारा प्राप्त शिकायतें भी स्वीकार की जाती हैं। राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग द्वारा प्रतिवर्ष देश में मानवाधिकारों की स्थिति से सम्बन्धित एक रिपोर्ट का प्रकाशन किया जाता है। इसके द्वारा इस रिपोर्ट को विधानसभा के सम्मुख प्रस्तुत किया जाता है। जबकि राज्य मानवाधिकार आयोग द्वारा ऐसा प्रतिवेदन सम्बद्ध राज्य की विधान सभा के सम्मुख रखा जाता है। मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम 1993 की धारा 30 के अंतर्गत, मानव अधिकारों के उल्लंघन अपराध सम्बन्धी विवादों के त्वरित निपटान हेतु मानव अधिकार न्यायालय का गठन किया जा सकता है। न्यायालय में विवादों को सुलझाने हेतु सरकार अधिसूचना के

माध्यम से एक पब्लिक प्रेसिक्यूटर की नियुक्ति करेगी जिसने 7 वर्षों तक अधिवक्ता के रूप में वकालत की हो। सशस्त्र बालों द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन सम्बन्धी शिकायतों के मामलों में आयोग स्वयं अपने संज्ञान पर अथवा किसी प्राप्त याचिका के आधार पर सरकार से मामले के सम्बन्ध में रिपोर्ट मांग सकता है। रिपोर्ट की प्राप्ति के पश्चात् सरकार की सिफारिशों के अनुरूप आयोग शिकायत पर कार्यवाही को रोक सकता है तथा संघीय सरकार द्वारा उक्त मामले के संदर्भ में की गई कार्यवाही से आयोग को तीन माह अथवा आयोग द्वारा निर्धारित अवधि के भीतर अवगत कराना अनिवार्य है। आयोग ने निःसंदेह अपने खाते में कुछ उपलब्धियां दर्ज की हैं। यह केंद्र सरकार को यातना एवं क्रूर अमानवीय एवं निम्न दण्ड या व्यवहार के अन्य स्वरूपों के विरुद्ध संयुक्त राष्ट्र अभिसमय पर हस्ताक्षर कराने हेतु मनाने में सफल हुआ। यह संरक्षा मृत्यु की समस्या को बेहतरीन तरीके से सामने लाया। इसने शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्थानों में मानवाधिकारों पर विशिष्टिकृत प्रशिक्षण माझ्यूल तैयार करने में भी मदद की है। यह, हालांकि, महसूस किया जाता रहा है की आयोग अपनी पूर्ण शक्ति हासिल करने में सक्षम नहीं रहा है। वर्ष 1991 में संयुक्त राष्ट्र अधिकार संस्थान को व्यापक जनादेश; बहुलता रखनी चाहिए जिसमें प्रतिनिध्यात्मक संगठन; व्यापक पहुंच, प्रभाविकता; स्वतंत्रता; पर्याप्त संसाधन; और जांच की पर्याप्त शक्ति शामिल है। मानव अधिकार संरक्षण अधिनियम की धारा 2() मानव अधिकारों को संविधान द्वारा प्रत्याभूत, जीवन समानता एवं वैयक्तिक गरिमा से सम्बद्ध अधिकार के तौर पर परिभाषित करता है या वे अंतरराष्ट्रीय अभिसमय या संविदा में उल्लिखित होते हैं तथा भारत में न्यायालय द्वारा लागू कराए जाते हैं। इस प्रकार, कानून एनएचआरसी से सामाजिक एवं आर्थिक अधिकारों पर ध्यान लगाने की बजाय नागरिक एवं राजनीतिक अधिकारों पर फोकस करने की अपेक्षा करता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण रहा है की मानव अधिकार आयोग सरकार पर नागरिकों को सामाजिक एवं आर्थिक न्याय प्रदान कराने के लिए दबाव डालने की प्रभावी भूमिका निभा पाता। आयोग की संरचना के संबंध में तीन आपत्तियां हैं। पहली, कानून ने चयन को संकीर्ण कर दिया है कि व्यक्ति को, केवल न्यायपालिका से सम्बद्ध होना चाहिए, मानवाधिकारों में किसी प्रकार की विशेषज्ञता की आवश्यकता नहीं है। यह आयोग की परिप्रेक्ष्यों की बहुलता, विशेष रूझान एवं सभ्य समाज से विभिन्न अनुभवों को प्राप्त करने से रोकता है। दूसरे, अनुशंसा देने वाली समिति में राजनेता होते हैं। तीसरे, चयन की प्रक्रिया पारदर्शी नहीं है। आयोग की संरचना आमतौर पर गोपनीय फाइलों में टिप्पणी करने या राजनेताओं और उनके पसंदीदा नौकरशाहों के बीच बंद दरवाजों के पीछे चल रही बैठकों के दौरान निर्णित होती है।

अधिनियम की धारा-11 के

अनुसार, केंद्र सरकार आयोग को अनुसंधान जांच तकनीकी एवं प्रशासनिक कार्य के लिए अधिकारी एवं अन्य स्टाफ मुहैया कराएगी। कानून के इस प्रावधान से आयोग अपने कार्य की जरूरत के लिए केंद्र सरकार पर निर्भर है।

आयोग में कार्य करने वाले अधिकतर अधिकारी एवं स्टाफ भारत सरकार के विभिन्न कार्यालयों से आते हैं। सरकारी कार्यालयों में काफी समय तक कार्य करने के बाद वे आयोग में आते हैं, जिससे उनकी एक निश्चित सोच, बदलावों के प्रति बेहद प्रतिरोध, कार्य की नौकरशाही पद्धति और बुरी आदतों का एक भारी भरकम बैकलॉग होता है। उन्हें मानव अधिकार दर्शन के बारे में कोई जानकारी नहीं होती है और न ही वे इसके लिए प्रतिबद्ध होते हैं। आयोग को एक निश्चित मात्रा में शिकायतें प्राप्त होती रहती हैं। हालांकि, अध्ययन प्रकट करता है कि अधिकतर शिकायतें तीन या चार राज्यों से ही प्राप्त होती हैं। अधिकारों के प्रति जागरूकता, मात्र कुछ राज्यों तक

सीमित होने से, सूचित नहीं होती। या समयबद्ध होते हैं या अर्द्ध-न्यायिक प्रकृति के होते हैं। इस तरह लोगों में आयोग के चार्टर के बारे में बेहद अज्ञानता होती है। आयोग में प्रत्येक वर्ष लंबित मामलों की संख्या बढ़ती जा रही है। आयोग को इसके कार्यों में पूरी तरह स्वतंत्र समझ जाता है, यद्यपि अधिनियम

ऐसा उल्लेख नहीं करता। वास्तव में, अधिनियम में ऐसे प्रावधान हैं जो आयोग की सरकार पर निर्भरता को कम करते हैं। लेकिन आयोग अपने मानव संसाधन सम्बन्धी जरूरतों के लिए सरकार पर निर्भर है। तब बेहद महत्वपूर्ण बात वित्त की है। अधिनियम की धारा-32 के तहत केंद्र सरकार, आयोग की अनुदान के तौर पर इतना पैसा देगी, जितना वह उपयुक्त समझे। इस प्रकार, मानव शक्ति एवं धन संबंधी जरूरतों, जो अत्यधिक महत्व के हैं, के परिप्रेक्ष्य में आयोग स्वतंत्र नहीं

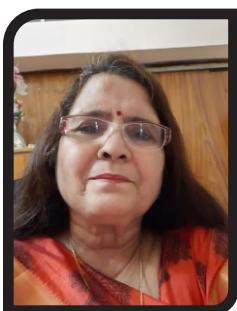
है। सशस्त्र बालों के कर्मियों द्वारा मानवाधिकारों के उल्लंघन के मामलों की शिकायत की जांच करने का अधिकार अधिनियम द्वारा आयोग की नहीं दिया गया है। क्योंकि मानव अधिकार उल्लंघन की शिकायतों की बड़ी तादाद सशस्त्र बलों के कर्मियों के खिलाफ होती हैं, स्वाभाविक रूप से इन मामलों में लोगों की शिकायतों के एनएचआरसी द्वारा निपटान में अधिनियम इसे कमज़ोर बना देता है। आयोग को अपने निर्णयों को लागू करने की शक्ति नहीं है अधिनियम की धारा-18 के अनुसार, आयोग द्वारा हुई जांच में मानव अधिकारों के उल्लंघन के मामले स्पष्ट होने पर, आयोग केवल दोषी व्यक्ति के खिलाफ कार्यवाही करने और पीड़ित को रहत देने की सरकार को सलाह दे सकता है। यदि कोई सरकार सलाह मानने से इंकार कर देती है तो कानून में ऐसा कोई प्रावधान नहीं है जो आयोग को इसकी सलाह को लागू करने के लिए सरकार को बाध्य करने को सशक्त करता हो। ■ ■

Certificates for Top Students (Our Toppers) from ESSIL (एसीएस इन्स्टीट्यूट)

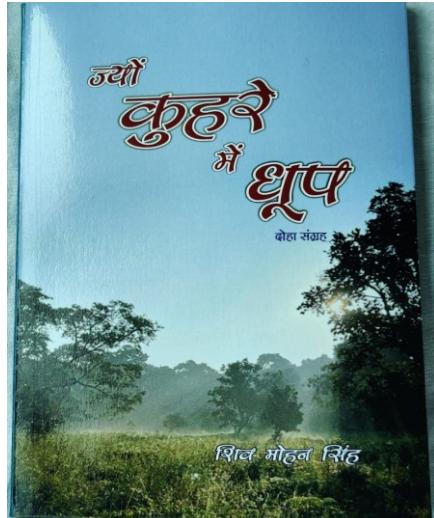
- Chandni Yadav:** Scored 91% in 9th to 12th CBSE & UP Board. Classes: 9th to 12th CBSE & UP Board. Contact: 9621503924, 9598056904, 9452000121.
- Aarjuk Falak:** Scored 88% in 9th to 12th CBSE & UP Board. Classes: 9th to 12th CBSE & UP Board. Contact: 9621503924, 9598056904, 9452000121.
- Sujit Kumar:** Scored 91% in 9th to 12th CBSE & UP Board. Classes: 9th to 12th CBSE & UP Board. Contact: 9621503924, 9598056904, 9452000121.
- Our Toppers:** Scored 100% in 9th to 12th CBSE & UP Board. Classes: 9th to 12th CBSE & UP Board. Contact: 9621503924, 9598056904, 9452000121.

ज्यों कुहरे में धूप' संग्रह के दोहों का काव्य सौंदर्य

प्राचीन समय में कविता को सृति में सुरक्षित रखा जाता था। छंदमय रचना को याद करना आसान होता है। कविता यदि छंदबद्ध रहती है तो उसमें संगीत और लय का सहज सन्निवेश हो जाता है। भाव को व्यंजित करने में छंद की भी भूमिका होती है। भाव की तीव्रता से जो गान निकलता है, वह छंदबद्ध ही होता है। पाणिनि ने छंद को वेद का चरण कहा है। आधुनिक काल के अनेक विद्वान छंद को कविता का बंधन मानते हैं किंतु छायावादोत्तर काल में जो कविताएं लिखी गई हैं, उनमें शब्दों की एक सुव्यवस्थित लय है, एक निश्चित प्रवाह है; छंद मुक्त होकर भी उसमें विशेष तरह की छंदमयता है। जगदीश गुप्त ने शब्दलय के बदले अर्थलय की बात की है।



डॉ. विद्या सिंह
पूर्व विभागाध्यक्ष



तीन गीत संग्रह 'जागृति', 'मन हुआ मधुमास' तथा 'ताल किनारे' द्वारा हिंदी के यशस्वी गीतकारों में शुमार, हम सभी के प्रिय कवि शिव मोहन सिंह जी ने अपने सद्यः प्रकाशित दोहा संग्रह 'ज्यों कुहरे में धूप' के माध्यम से एक दोहाकार के रूप में हिंदी काव्य जगत में अपनी प्रभावकारी उपस्थिति दर्ज कराई है। निःसंदेह आसन्न भविष्य में उनकी गणना श्रेष्ठ दोहाकार के रूप में भी होगी। कवि की स्वीकारोक्ति है, 'इस संग्रह के सभी दोहे नए नहीं हैं। साहित्य की अन्य विधाओं में सृजन के साथ- साथ ही कुछ दोहे भी बनते रहे हैं, जिन्हें मैं नोट कर लिया करता था।' तात्पर्य यह कि दोहा छंद के सृजन में वह पहले से ही अभ्यास- रत रहे हैं। दोहा छंद में बात कहने का हुनर प्रत्येक कवि के पास नहीं होता क्योंकि दोहे के नियमों से आबद्ध होकर दो पंक्तियों में अपने कथ्य को अभिव्यक्ति दे पाना सरल कार्य नहीं है। येन- केन- प्रकारेण कुछ लिख देना ही साहित्य नहीं है।

है।

साहित्य की उपादेयता, श्रेष्ठता परिवेश का यथार्थ चित्रण करने के साथ- साथ उसके अनुकूल व्यक्ति को नई चेतना प्रदान करने तथा जीवन को सच्चे अर्थों में, स्वच्छ भूमिका पर जीने के लिए उचित दिशाओं को प्रशस्त करने में है। इस दृष्टि से अवलोकन करें तो प्रस्तुत संग्रह के दोहे मानवहित, नैतिक मूल्यों की रक्षा तथा मशीनीकरण के युग में भी मानवीय पक्षधरता में खड़े दिखाई देते हैं। दोहा छंद के विधान से कवि भलीभांति परिचित हैं, जो उनके आत्मकथ्य में ही स्पष्ट हो जाता है। काव्य सृजन में छंद का कितना महत्व है! यह एक अलग विषय है, यों वैदिक काल से ही छंद और कविता का गहन संबंध रहा है। छंद को वेद में छांदस कहा गया है। कवि निराला ने छंद के बंधन से कविता को मुक्त करने का आह्वान किया किंतु उन्होंने छंद की लय और गीतात्मकता को पूरी निष्ठा से अपनाए रखा। समकालीन हिंदी कविता में छंद मुक्त होने का आग्रह है किंतु लय की मान्यता अभी भी है। कुछ विद्वानों का कहना है कि छंद की उपेक्षा के कारण ही आधुनिक कविता की लोकप्रियता क्षीण हुई है। प्राचीन समय में कविता को सृति में सुरक्षित रखा जाता था। छंदमय रचना को याद करना आसान होता है। कविता यदि छंदबद्ध रहती है तो उसमें संगीत और लय का सहज सन्निवेश हो जाता है। भाव को व्यंजित करने में छंद की भी भूमिका होती है। भाव की तीव्रता से जो गान

निकलता है, वह छंदबद्ध ही होता है। पाणिनि ने छंद को वेद का चरण कहा है। आधुनिक काल के अनेक विद्वान् छंद को कविता का बंधन मानते हैं किंतु छायागादोत्तर काल में जो कविताएँ लिखी गई हैं, उनमें शब्दों की एक सुव्यवस्थित लय है, एक निश्चित प्रवाह है; छंद मुक्त होकर भी उसमें विशेष तरह की छंदमयता है। जगदीश गुप्त ने शब्दलय के बदले अर्थलय की बात की है। कविता के संबंध में डॉक्टर केदारनाथ सिंह का कथन दृष्टव्य है, 'छंद मुक्त होकर कविता ने क्या खोया है, इसकी ठीक-ठीक जांच-पढ़ताल तो अभी तक नहीं की गई है पर इतना तो साफ है, उसके स्मरणीयता का तत्व कम हुआ है। किसी ने कहा था छंद कविता की आयु है और इसमें सच्चाई का अंश अवश्य है।'

कवि शिव मोहन सिंह जी की बात करें तो उनकी रचनाओं में गीत हों, मुक्तक हों या दोहे आरंभ से ही एक अनुशासन रहा है। भाव के अनुरूप शिल्प का प्रयोग उनके काव्य की अन्यतम विशेषता है। शब्दों के चयन में वह पर्याप्त सावधानी बरतते हैं। भाव सौंदर्य की दृष्टि से भी उनकी रचनाएँ आकृष्ट करती हैं। 'ज्यों कुहरे में धूप' संग्रह के दोहों को कथ्य के आधार पर आपने पन्द्रह उपशीर्षकों में विभक्त किया है।

जीवन और जगत के विविध आयामों को अपने लघु कलेवर में समाहित करते दोहों में, कवि ने अपनी बात अत्यंत कुशलता से कह डाली है। एक साहित्यकार की संवेदनशीलता की परिधि में मात्र मनुष्य ही नहीं आते अपितु प्रकृति तथा मानवेतर प्राणी भी उसमें

स्थान पाते हैं। असहायों, वंचितों के प्रति कवि के भीतर करुणा का भाव है। असमर्थ के लिए वह उसकी सामर्थ्य बनना चाहते हैं, तभी तो वाणी की अधिष्ठात्री देवी शारदा से निवेदन करते हैं कि जो लोग स्वयं अपनी बात मां तक निवेदित नहीं कर पाते, कवि के दोहों में इतनी क्षमता हो, कि उनकी बातें भी कर सकें।

'जिनकी वाणी मौन है, अल्प शब्द की शक्ति'

मेरे दोहों में मिले, उनको भी अभिव्यक्ति।'

कवि शिव मोहन सिंह जी ग्राम्यांचल से आते हैं; उन्होंने प्रकृति का अत्यंत निकट से अवलोकन किया है। यही कारण है कि उनकी रचनाओं में प्राकृतिक उपादानों का अत्यंत प्रभावी चित्रण मिलता है। प्रकृति के मनोरम बिंब उनके गीतों में, दोहों में बहुलता से स्थान पाते हैं। बिंब चित्र रचते हैं और पाठक कविता पढ़ता ही नहीं, उसका साक्षात्कार भी करता है। 'ऊर्जा भरता भोर' शीर्षक खंड में कवि कहते हैं,

'अंधियारा छुपने लगा, सरक रही है रात'

सूरज का रथ चल पड़ा, लेकर एक प्रभात'

एक सहृदय कवि सौंदर्य से जहां आहृदित होता है, मानवीय सरोकारों के प्रति जागरूक भी होता है। नैतिक मूल्यों के अधोपतन की चौतरफा आंधी से आज संपूर्ण मानवता घिरी हुई है। विकास के नाम पर विनाश की जो लीला रची जा रही है, उससे सर्वाधिक व्यथित एक संवेदनशील कवि होता है। पर्यावरण की

सुरक्षा की चिंता आज समूची मानवता को सुरक्षित करने की चिंता का पर्याय बन चुकी है। जल- जंगल- जमीन का किस प्रकार अंधाधुंध दोहन किया जा रहा है, उससे हम सभी परिचित हैं। ग्लेशियर पिघलने लगे हैं और जल का भारी संकट होने की प्रबल संभावना है। कवि 'पावस की प्रस्तावना' में लिखते हैं,

'र्षा जल संचित करें, कर लें हम संकल्प'

धरती पर कोई नहीं, जल का अभी विकल्प'

यह एक प्रकार की चेतावनी है, जिस पर ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है।

ऋतु परिवर्तन हमारे जलवायु की महत्वपूर्ण विशेषता है। अलग-अलग ऋतुएँ जहां हमें एकरसता से बचाती हैं, वहीं उनका प्रचंड रूप देशवासियों के लिए दुख का कारण भी बन जाता है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां बहुसंख्यक के पास शीत-ताप-वृष्टि से बचने का पर्याप्त साधन नहीं है, मौसम की अनुकूलता एवं प्रतिकूलता पर्याप्त महत्व रखती है। पावस ऋतु में धरती जलमग्न हो जाती है, पहाड़ धराशायी होने लगते हैं, तो शीत ऋतु में कोहरे का साम्राज्य स्थापित हो जाता है। कंपकपाती ठंड में धूप की कितनी प्रतीक्षा रहती है, इस भाव को अभिव्यक्ति देते हुए कवि कहते हैं,

'कब तक कोहरे में रहें, शीतलहर में जान'

लेकर गठरी धूप की, आ जाओ दिनमान।'

ठंडक की यह स्थिति परिवर्तित होती है, वातावरण में उष्णता आते ही प्रकृति में उल्लास व्याप्त हो जाता है। वनस्पतियों में नई कोंपें आने लगती हैं, धरती जो अब तक प्राणहीन पड़ी थी, उसमें नई चेतना का संचार होने लगता है। इसीलिए फागुन मास को उल्लास का द्योतक माना जाता है, जिसकी पराकाष्ठा होली के त्यौहार में दिखाई देती है। यह मौसम मनुष्य एवं प्रकृति सभी के लिए मनोहारी होता है। रंग- बिरंगे फूल, फूलों पर मंडराते भौंरे, हवा में मिश्रित मादक सुगंध नर- नारी में भी उन्माद का संचार करते हैं। फागुन का चित्रण करते हुए कवि कहते हैं,

‘सांस- सांस में फागुनी, मद रस भरी सुगंध

नयन-नयन में हो रहे, नए- नए अनुबंध।’

फागुन का दृश्य बदलता है; उसका स्थान ग्रीष्म ऋतु ले लेती है। बढ़ते- बढ़ते गर्मी यहां तक बढ़ जाती है कि मनुष्यों की कौन कहे, पशु-पक्षी भी बेहाल हो जाते हैं,

‘पशु- पक्षी विक्षिप्त हैं, पीछा करती आग

‘सूरज भी इस तपन में, रहा अभी तक जाग।’ क्या खूबसूरत कल्पना है! सूरज भी, जो स्वयं ग्रीष्म का कारण है, जाग रहा है। गर्मी के आधिक्य से उसे भी नाँद नहीं आ रही है। शिक्षा जगत में व्याप्त भ्रष्टाचार, राजनीति में आई गिरावट, हिंदी की वर्तमान स्थिति, कोरोना का दुष्प्रभाव आदि अनेकानेक विषयों पर भी कवि ने लेखनी

चलाई है। लाभ और लोभ के गणित ने मनुष्य को मनुष्यता के निम्नतम पायदान पर ला दिया है। सभी अपने को दोषरहित

तथा दूसरों में दोष ही दोष देखने के अश्यस्त हो गए हैं। कवि की चिंता में ये सभी विडंबनाएं विद्यमान हैं।

‘जब भी उठे समाज में, गुण- अवगुण का शोर

तुम भी उसमें एक हो, देखो अपनी ओर।’

कहकर कवि ने हम सभी को सामाजिक दायित्व का भागीदार बना प्रस्तुत दोहासंग्रह पठनीय एवं संग्रहणीय है। कवि शिव मोहन सिंह जी की लेखनी अनवरत मानवहित में सृजनरत हो!

शुभकामनाओं सहित:

खूब झमाझम बरसा पानी



श्याम सुन्दर श्रीगास्तव ‘कोमल’
लहार, भिण्ड (म. प्र.)

आज झमाझम बरसा पानी ।
खुश हो नाची गुड़िया रानी ॥

बादल उमझ-घुमझ कर आए
चारों ओर झूम कर छाए
बूंदों की सरगम बजती है -
मेढ़क राग भैरवी गाए
भीग-भीग कर छप-छप करके -
गुड़िया करती है शैतानी ।
आज झमाझम बरसा पानी ॥

पेड़ हवा में खड़े झूमते
ऊँचे-ऊँचे गगन चूमते
आसमान की बड़ी फील्ड पर -

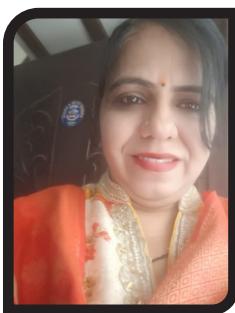
बादल पैदल खूब घूमते ।
कभी गरजते कभी बरसते -
करते हैं अपनी मनमानी ।
आज झमाझम बरसा पानी ॥

ढोल नगाड़े जम कर गमके
बिजली रह-रह कर के चमके
पंछी गीत अनूठे गाते -
बादल बरस रहे हैं जम के ।
भीग - भीग कर नाचेंगे हम -
छोटू ने भी मन में ठानी ।
खूब झमाझम बरसा पानी ॥

सोशल मीडिया पर मौत को भी बनाते कमाई का जरिया

मानवता का हनन

समझिये मेरी कलम की वेदना, भावनाओं, ज़ज़्बात, हृदयाघात की स्थाही में झूब कर कुछ लिख समस्त दुनिया को कड़वे हकीकत भरे आईने मेरी मानवता का एक कालिख लगा चेहरा जो निरंतर दिखा रही है और समझा रही की अगर खुद को मर्द कह कर घरों कि महिलाओं पर रुतबा जमा कर मर्दागनी दिखाते वही मर्दागनी बाहर उस समय दिखाइये जब कहीं अनैतिक हो रहा है। जहां कहीं किसी की बहू, बेटी, मां किसी वारदात का शिकार हो रही है। जहां आपको पूर्व अंदेशा हो जाए की यहां कोई भयावह हादसा कभी भी हो सकता है। मत बने रहे मूकदर्शक, नामर्द अपने मानव रूपी जीवन को मानवता की रक्षा के लिए यदि समर्पित भी करना पड़े तो अपने पांव पीछे की ओर नहीं बल्कि आगे की ओर बढ़ाएं।



वीना आडवाणी तन्वी
नागपुर, महाराष्ट्र



वर्तमान में जितना हमारा भारत देश औद्योगिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, यातायात परिवहन क्षेत्र आदि अनेक क्षेत्रों में विकास करते हुए हमारे देश को विकासशील, समृद्ध और आत्म निर्भर बना रहा है ये तो बहुत ही अच्छा हो रहा हम सभी के लिए, परंतु इस दौड़ी, भागती कामयाबी की ओर भागती जिंदगानी के अंतर्गत यदि कुछ कमी हो रही नित प्रतिदिन तो वो कमी है हमारे भीतर की खत्म होती संवेदनाएं। खत्म होते जा रहे ज़ज़्बात, हो रहा नित मानवता का हनन।

आज कल हर कोई इतना मशागूल हो गया है कि उनके समीप भी यदि कोई अनैतिक कृत्य हो रहा तो भी वह नज़र अंदाज़ कर आगे बढ़ रहे हैं। हाल ही मेरी मानवता को तार-तार कर देने वाली तस्वीरें जो सोशल मीडिया पर दिखाई जा रही थीं कि किस तरह साहिल नामक युवक ने साक्षी का सरेआम राह पर चाकूओं से गोद कर हत्या कर दी, किस तरह बम्बई क्षेत्र मीरा रोड निवासी मनोज ने अपनी ही प्रेमिका जो बरसों से संग रह रही थी उसके टुकड़े-टुकड़े कर कुकर में पकाया और कुत्तों को भोज स्वरूप परोसा। किस तरह दो दिन पूर्व ही दिल को दहलाने वाली घटना जो कि इंदौर से सुनने मेरी की मात्र शादी के सत्तरह दिन बाद मात्र दहेज के लिए लालचियों ने नई नवेली दुल्हन के अरमानों को चाकूओं से गोद कर विश्वास के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उस विश्वास के जिसे उसकी मांग में सिंदूर रूप मेरी उसके ही पति ने भर कर दिया और ये वादा किया सात फेरों के वचनों में की मैं हूं ना। जो विश्वास दिलाया मैं हूं ना उसी मैं हूं ना शब्द को विभृत्स कर दिया इतनी बुरी तरीके से की आज कोई भी मां-बाप अपने जिगर के टुकड़े को अपने से दूर कर, किसी ओर को सौंपने से भी कतराएंगे। हर हृदय विदारक घटना में साक्ष्य सिर्फ और सिर्फ मूक दर्शक बन

देखते रहे और सोशल मीडिया पर विडियो बना अपलोड कर ये जताते रहे की जैसे उन्होंने बहुत ही सराहनीय कार्य किया हो। अरे सोशल मीडिया पर सिर्फ लाइक, कमेंट, फालोवर्स बढ़ाने के चक्कर में आप तो अपने दिल में बसी मानवता का कल्प कर बस किसी इंसान की हत्या को देख विडियो बना अपनी कमाई का जरिया बना रहे। आप क्या सोचते की आप इससे पछिसिटी पाएंगे। अरे धित्कार है एसे पुरुष वर्ग पर भी जो साक्षी के कल्प के समय वहां से गुज़र रहे थे पर कोई साक्षी की मदद नहीं किया, मर्दानी मर गई थी उस समय उन मर्दों की जो खुद को मर्द बता अपनी शेखियां बिघाइते फिरते। अरे वो सिर्फ अपने घर की महिलाओं पर ही मर्दानगी दिखाते बाहर तो बस दिखावे के लिए चतुर गीड़ दिखाते खुद को, जब की भीगी बिल्ली होते। और बस रुबाब घर की महिलाओं के ऊपर दिखाते। आज दिन हो रहे हृदय विदारक घटनाएं जो सरेआम भी हो रही इसके लिए जिम्मेदार कौन? वो सभी

साक्ष्य जो अपनी आंखों के सामने घटना होने के बावजूद भी हाथों में चुड़ियां पहने हुए हैं, श्रद्धा, सरस्वती जैसी वारदातों का जिम्मेदार कौन वो पड़ोसी जो घर में रोज़ हो रही लड़ाईयों को यह कह नज़र अंदाज़ करते की ये तो इनका रोज का काम है। सब जानते हुए भी अगर मानव जाती ही मानव जाती के बचाव में सामने नहीं आएगी तो फिर तो हमसे भले जानवर अच्छे जो अपने कुटुम्ब के किसी भी जानवर पर यदि कोई दूसरे कुटुम्ब का जानवर हमला करता तो वो दूट पड़ते दूसरे कुटुम्ब के जानवरों पर अपने कुटुम्ब के जानवर को बचाने के लिए। हमसे अच्छा तो एक पालतू जानवर जो कि कुत्ता है जो जानवर होने के बावजूद मानव रूपी अपने मालिक के लिए अपना सर्वोपरि लुटा कर वफादारों निभाता है।

समझिये मेरी कलम की वेदना, भावनाओं, ज़ज़्बात, हृदयाघात की स्थाही में झूब कर कुछ लिख समस्त दुनिया को कड़वे हकीकत भरे आईने मेरी मानवता का एक कालिख लगा चेहरा जो

निरंतर दिखा रही है और समझा रही की अगर खुद को मर्द कह कर घरों कि महिलाओं पर रुतबा जमा कर मर्दानगी दिखाते वही मर्दानगी बाहर उस समय दिखाइये जब कहीं अनैतिक हो रहा है। जहां कहीं किसी की बहू, बेटी, माँ किसी वारदात का शिकार हो रही है। जहां आपको पूर्व अंदेशा हो जाए की यहां कोई भयावह हादसा कभी भी हो सकता है। मत बने रहे मूकदर्शक, नामर्द अपने मानव रूपी जीवन को मानवता की रक्षा के लिए यदि समर्पित भी करना पड़े तो अपने पांव पीछे की ओर नहीं बल्कि आगे की ओर बढ़ाएं। आओ मिल समाज को वारदात मुक्त बनाएं। अपने मिले मानव जीवन को सार्थक बनाएं। किसी की मौत को तमाशा बना तमाशबीन की तरह देखते हुए उसका सिर्फ विडियो बना कर सोशल मीडिया पर लाइक, कमेंट पाने के लिए कमाई का जरिया नहीं बनाएं। बल्कि बचा लें किसी की बहू, बेटियों को अपनी इंसानियत दिखाते हुए। ■ ■

विद्यार्थियों का गौरव

एवरस्टीलेन्ट

बॉयो इन्स्टीच्यूट

Classes : 9th to 12th CBSE & UP Board

विशेष आकर्षण - NEET तथा B.Sc नर्सिंग की तैयारी की व्यवस्था।

कैलाशपुरी, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर - चन्दौली

9621503924, 9598056904 , 9452000121

आई कैरियर बनाया फूड टेक्नोलॉजी कोर्स

अगर आपने फूड टेक्नोलॉजी में कोर्स किया है तो आप के पास नौकरी के कई विकल्प होते हैं। आप इससे जुड़ी फील्ड जैसे फूड प्रोसेसिंग यूनिट, रिटेल कंपनी, होटल्स एवं प्रोडक्ट बनाने वाली कंपनी से जुड़कर काम कर सकते हैं। इसके अलावा आपको कई प्रयोगशालाओं में भी काम मिल सकता है जो खाद्य वस्तुओं पर रिसर्च और उन्हें संरक्षित करने का काम करती है। इस फील्ड में शुरुआती तौर पर आपको 20 से 25 हजार आसानी से मिल सकते हैं। कुछ सालों के एक्सपीरियंस के बाद आप 30 से 40 हजार रुपये महीने या इससे ज्यादा कमा सकते हैं। इसके अलावा आप खुद भी फूड टेक्नोलॉजी के बिजनेस में आकर अच्छा पैसा कमा सकते हैं।



कोई रोटी कमाने के लिए दौड़ता है, फसल का इस्तेमाल लंबे समय तक किया जा सकता है और स्वादिष्ट, स्वास्थ्यवर्धक, आकर्षक और बाज़ार में बेचने योग्य फूड प्रोडक्ट्स तैयार किये जाते हैं।

आज के समय में हमारे सामने प्रोसेस्ड फूड का एक नया विकल्प आया है। इस समय फूड एक ऐसा इंडस्ट्री बन गया है, जो लोगों की जरूरत है। जिस तरह से हमारी निर्भरता प्रोसेस्ड फूड पर बढ़ती जा रही है वैसे फूड टेक्नोलॉजी के क्षेत्र में करियर की कई संभावनाएं और अवसर भी पैदा हो रहे हैं।

फूड टेक्नोलॉजी के तहत वो सभी कार्य आते हैं जो फूड प्रोसेसिंग में रॉइंग्रेडिएंट्स को खाने योग्य फॉर्म्स में बदलने के लिए सभी कार्य करते हैं। फूड टेक्नोलॉजी में 4 वर्ष की अवधि का बीई व बीटेक कोर्स करवाया जाता है। इस कोर्स में विभिन्न फूड आइटम्स पर कैमिकल प्रोसेस शामिल होती हैं, जिनके इस्तेमाल से अनेक फूड प्रोडक्ट्स बाज़ार में बेचने के लायक और लंबे समय तक उपयोग करने के लायक बन जाते हैं। फूड टेक्नोलॉजी के माध्यम से साफ़, नई कटी

कोर्स के लिए योग्यता

सभी के लिए इस क्षेत्र में भरपूर मौके उपलब्ध हैं। अगर आप इसमें करियर बनाना चाहते हैं तो आपको भौतिकी, रसायन विज्ञान, जीव विज्ञान, गणित या होम साइंस में 12 वीं पास होना अनिवार्य है। इसके बाद फूड साइंस, कैमिस्ट्री या माइक्रोबायोलॉजी में बैचलर डिग्री कर सकते हैं। यह कोर्स चार साल का होता है। वहाँ बैचलर डिग्री करने के बाद फूड कैमिस्ट्री, मैन्युफैक्चरिंग प्रोसेस और अन्य क्षेत्रों में एडवांस डिग्री भी कर सकते हैं। साथ ही डायटेटिक्स एंड न्यूट्रिशन और फूड साइंस एंड पल्लिक हेल्थ न्यूट्रिशन में डिप्लोमा भी किया जा सकता है। अगर आपने ग्रेजुएशन पूरी कर ली है, तो आप उपरोक्त विषयों में एमएससी भी कर सकते हैं।



फूड टेक्नोलॉजी के लिए प्रमुख कोर्स

अगर आप इस क्षेत्र में जाना चाहते हैं तो आपको फूड टेक्नोलॉजी में बीएससी ऑनर्स, बीटेक फूड टेक्नोलॉजी, एमटेक फूड टेक्नोलॉजी, पीजी डिप्लोमा इन फूड साइंस एंड टेक्नोलॉजी और एग्री बिजनेस मैनेजमेंट में एमबीए करना होगा।

कोर्स के लिए प्रवेश परीक्षाएं

IIFPT - इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ फूड प्रोसेसिंग टेक्नोलॉजी

NPAT

CUET

CUCET

SET

अगर आप इस क्षेत्र में आना चाहते हैं तो आपको ऑल इंडिया जॉइंट एंट्रेस एजाम देना होगा, जिसके बाद आप फूड टेक्नोलॉजी और बायो केमिकल साइंस में सरकारी कॉलेजों से बीटेक की डिग्री कर सकते हैं। वहाँ, आईआईटी में प्रवेश पाने के लिए जेर्फ़ि घेन और जेर्फ़ि एडवांस की परीक्षा पास करनी पड़ेगी। गेट फूड टेक्नोलॉजी एंट्रेस एजाम के माध्यम से आईआईएससी बैंगलुरु में दाखिला मिलेगा। इसके अलावा सभी निजी संस्थान अपने स्तर पर प्रवेश परीक्षाओं



का आयोजन करते हैं।

इनकी कहां हैं जरूरत

इस समय फूड टेक्नोलॉजिस्ट की जरूरत दुनिया के हर देश को है। भविष्य में खाद्य पदार्थों की कोई कमी न हो इसलिए हर देश फूड टेक्नोलॉजी पर रिसर्च कर रहा है। जिसमें क्वालिटी और स्वाद के साथ ही पोषक तत्वों पर काम किया जाता है। भारत में इनकी सबसे ज्यादा जरूरत है। इस समय सरकारी एनजीओ से लेकर कई प्राइवेट एनजीओ हैं जो इस क्षेत्र में काम कर रही हैं।

कहां मिलेगी नौकरी और सैलरी

अगर आपने फूड टेक्नोलॉजी में कोर्स किया है तो आप के पास नौकरी के कई विकल्प होते हैं। आप इससे जुड़ी फील्ड जैसे फूड प्रोसेसिंग यूनिट, रिटेल कंपनी, होटल्स एवं एग्री प्रोडक्ट बनाने वाली

कंपनी से जुड़कर काम कर सकते हैं। इसके अलावा आपको कई प्रयोगशालाओं में भी काम मिल सकता है जो खाद्य वस्तुओं पर रिसर्च और उन्हें संरक्षित करने का

काम करती है। इस फील्ड में शुरूआती तौर पर आपको 20 से 25 हजार आसानी से मिल सकते हैं। कुछ सालों के एक्सपीरियंस के बाद आप 30 से 40 हजार रुपये महीने या इससे ज्यादा कमा सकते हैं। इसके अलावा आप खुद भी फूड टेक्नोलॉजी के बिजनेस में आकर अच्छा पैसा कमा सकते हैं।

कोर्स के लिए प्रमुख संस्थान

दिल्ली यूनिवर्सिटी, दिल्ली

इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, दिल्ली

बुंदेलखण्ड यूनिवर्सिटी, झांसी

कानपुर यूनिवर्सिटी, कानपुर

कोलकाता विश्वविद्यालय, कोलकाता

गुरु नानक देव यनिवर्सिटी, अमृतसर

मुंबई यूनिवर्सिटी, मुंबई

सेंट्रल फूड टेक्नोलॉजी रिसर्च इंस्टीट्यूट, मैसूर

बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ फूड टेक्नोलॉजी



तिक्की लाफिंग व्यंजन

कटे हुए लहसुन की 4-5 कलियां, नमक, सिचुआन काली मिर्च, 3 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, अजीनो मोटो और पानी लें। इसे अच्छे से मिलाएं और इसमें 100 मिली गर्म तेल डालें। मिर्च का पेस्ट बनकर तैयार हो जायेगा।

अंतिम चरण में समतल सतह पर एक रैपर रखें और उस पर 1 टीस्पून मिर्च का पेस्ट फैलाएं। फिर इसमें ग्लूटेन ब्रेड, नमक, सोया सॉस और विनेगर मिलाएं।

अच्छी तरह मिलाकर रोल बना लें।

फिर इसे बराबर बराबर टुकड़ों में काट लें। आपका स्वादिष्ट नाश्ता तैयार है।



लाफिंग सफेद चावल के आटे (मैदा) से बनी एक मसालेदार और नमकीन ठंडी नूडल डिश है। यह एक तिक्की व्यंजन के रूप में जाना जाता है लेकिन अब काठमांडू में भोजन दृश्य का एक अभिन्न अंग बन गया है।

बनाने की सामग्री

आटा, नमक, पानी, तेल, लहसुन, लाल मिर्च पाउडर

सिचुआन काली मिर्च, अजीनो मोटो (वैकल्पिक)

खाना पकाने का तेल

बनाने का तरीका

मैदा और नमक मिलाकर इसे बनाने की शुरुआत करते हैं उसके बाद इसे एक बाउल में निकाल लें और थोड़ा सा तेल छिड़कें। जब तक तेल अच्छी तरह से मिक्स न हो जाए तब तक अच्छी तरह मिलाइए।

आटा बनाने के लिए इसमें थोड़ा-

थोड़ा पानी डालते रहें और इसे गूँद लें। आटे को अच्छे से गूँथने के बाद आपको एक नरम आटा दिखाई देगा, जिससे नरम लोई तैयार हो जाएगी। आटे को ढककर लगभग 20 मिनट के लिए रख दें। एक बार जब आटा तैयार हो जाए, तो इसे ढकने के लिए पर्याप्त पानी गाले कंटेनर में रखें। यह स्टार्च और ग्लूटेन को अलग कर देगा।

फिर आटे को पानी में अच्छी तरह से निचोड़ लें। आप देखेंगे कि स्टार्च और ग्लूटेन अलग होने लगे हैं।

अब स्टार्च गाले पानी को करीब 2 घंटे के लिए ढककर रख दें। ग्लूटेन को एक तरफ रख दें और इसे फिलिंग के लिए इस्तेमाल करें।

बेसन के आटे को एक बार फिर बहते पानी में धो लीजिये। आटे में 1/2 चम्मच खमीर या बेकिंग पाउडर डालें। फिर इसे अच्छे से मिक्स करें और 10 मिनट के लिए रख दें। अब ग्लूटेन को





तेल लगी स्टीमर ट्रे में रखें और 15-20 मिनट तक पकाएं। यह हल्की और भुरभुरी ग्लूटेन ब्रेड फिलिंग के रूप में उपयोग करने के लिए तैयार हो जाएगी।

आइए अब बनाए मिर्च का पेस्ट

कटे हुए लहसुन की 4-5 कलियां, नमक, सिचुआन काली मिर्च, 3 चम्मच लाल मिर्च पाउडर, अजीनो मोटो और पानी लें। इसे अच्छे से मिलाएं और इसमें 100 मिली गर्म तेल डालें। मिर्च का पेस्ट बनकर तैयार हो जायेगा।

अंतिम चरण में समतल सतह पर एक रैपर रखें और उस पर 1 टीस्पून मिर्च का पेस्ट फैलाएं। फिर इसमें ग्लूटेन ब्रेड, नमक, सोया सॉस और विनेगर मिलाएं।

अच्छी तरह मिलाकर रोल बना लें।

फिर इसे बराबर बराबर टुकड़ों में काट लें। आपका स्वादिष्ट नाश्ता तैयार है। ■ ■ ■



विज्ञापन शुल्क निम्न प्रकार से हैं

- कलर पेज फूल पेज ₹ 20000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 10000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट फूल पेज ₹ 12000 मात्र
- हाफ पेज ₹ 6000 मात्र
- रंगीन पेज पर छोटा विज्ञापन ₹ 2000 मात्र
- ब्लैक एंड व्हाइट पर छोटा विज्ञापन ₹ 1000 मात्र

विज्ञापन के लिए शुल्क निम्न बैंक खाता में जमा करा सकते हैं:

Account Name: **Sach Ki Dastak**
 A/c. No. : **13751652000024**
 IFSC Code : **PUNB0137510**
 Bank: **Punjab National Bank**

Gpay-

(1) 9045610000
 (2) 9621503924

भारत की जूनियर महिला हॉकी टीम ने एशिया कप जीता

पहला क्वार्टर गोल रहित बराबर रहने के बाद भारत ने 22वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर अनु के गोल की बदौलत बढ़त बनाई। जापान के खिलाफ सेमीफाइनल की निराशा को पीछे छोड़ते हुए अनु ने गोलकीपर के बाईं ओर से गोल दागते हुए भारत को 1-0 से आगे किया। दक्षिण कोरिया ने हालांकि तीन मिनट बाद पार्क सियो यिओन के गोल की बदौलत स्कोर 1-1 कर दिया। नीलम ने 41वें मिनट में दक्षिण कोरिया की गोलकीपर के दाईं ओर से गोल दागकर भारत को 2-1 से आगे कर दिया जो निर्णायक स्कोर साबित हुआ।



भारत की पहचान हॉकी से होती है। कई ओलंपिक में भारत ने खिताब अपने नाम किया है। महिला टीम ने कई देशों को धूल चटाई है। अब बारी थी जूनियर महिला बिग्रेड की। जिसने मौके को हाथ से जाने भी दिया। भारत ने महिला जूनियर हॉकी एशिया कप का खिताब जीत लिया है। जापान के काकामीगहारा में खेल गए टूर्नामेंट के फाइनल मुकाबले में भारत ने 4 बार की चैंपियन साउथ कोरिया को हराया। हमारी महिला टीम ने पहली बार इस टूर्नामेंट को अपने नाम किया है। इस प्रकार भारत की जूनियर महिला हॉकी टीम ने इतिहास रच दिया है। और एक बार पुनः सिद्ध कर दिया कि हमारी बालिकाएं भी किसी से कम नहीं हैं।

भारत ने पहली बार इस टूर्नामेंट को अपने नाम किया है। फाइनल में टीम इंडिया के सामने साउथ कोरिया की चुनौती थी। टूर्नामेंट के इतिहास की सबसे सफल टीम साउथ कोरिया को भारत ने 2-1 से हराया। साउथ कोरिया ने सबसे ज्यादा 4 बार टूर्नामेंट को अपने नाम किया है। इस टूर्नामेंट का आयोजन 2021 में ही होना था लेकिन कोरोना की वजह से दो साल की देरी से खेला गया।

जिस प्रकार हमारी लड़कियों टूर्नामेंट में शुरू से खेली उस समय से लग रहा था कि इस बार हमारी लड़कियां एशिया कप पर कब्जा करेंगी और वह वही हुआ भी।

पहला क्वार्टर गोल रहित बराबर रहने के बाद भारत ने 22वें मिनट में पेनल्टी कॉर्नर पर अनु के गोल की बदौलत बढ़त बनाई। जापान के खिलाफ सेमीफाइनल की निराशा को पीछे छोड़ते हुए अनु ने गोलकीपर के बाईं ओर से गोल दागते हुए भारत को 1-0 से आगे किया। दक्षिण कोरिया ने हालांकि तीन मिनट बाद पार्क सियो यिओन के गोल की बदौलत स्कोर 1-1 कर दिया। नीलम ने 41वें मिनट में दक्षिण कोरिया की गोलकीपर के दाईं ओर से गोल दागकर भारत को 2-1 से आगे कर दिया जो निर्णायक स्कोर साबित हुआ। भारतीय टीम ने इसके बाद अंतिम क्वार्टर में अपनी बढ़त बरकरार रखते हुए जीत दर्ज की। दक्षिण कोरिया को पेनल्टी कॉर्नर के रूप में गोल करने के कई मौके मिले लेकिन टीम इसका फायदा नहीं उठा सकी। इससे पहले महिला जूनियर एशिया कप में भारत का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन 2012 में था जब टीम बैंकॉक में पहली बार फाइनल में पहुंची थी लेकिन चीन से 2-5 से हार गई।



मनोज उपाध्याय
खेल सम्पादक

यूक्रेन रूस युद्ध में परमाणु युद्ध के खतरे की बजने लगी घंटी

यूक्रेन ने नाटो देशों से आग्रह किया है कि हथियारों का उत्पादन बढ़ाए और उन्हें दे तभी यूक्रेन रूस का मुकाबला कर सकता है। रूस द्वारा भेजी गई परमाणु हथियारों की खेप से यूक्रेन काफी परेशान दिखाई पड़ रहा है और अब नाटो के देशों से यह कहने लगा है कि यदि उन्हें हथियार मिलने में देरी हुई थी रूस यह युद्ध जल्द समाप्त कर देगा ऐसे में कहा जा सकता है कि एक बार पुणे पूरा विश्व परमाणु युद्ध के खतरे के दरवाजे पर खड़ा है कभी भी परमाणु हथियारों से यूक्रेन वर रूस हमला कर सकता है और युद्ध को पूरी तरह जीतकर समाप्त कर सकता है जबकि यह सब जानता है की यदि परमाणु युद्ध हुआ तो इसका परिणाम पृथ्वी कई वर्षों तक झेलेगी।



यूक्रेन और परमाणु संपन्न राष्ट्र रूस के बीच पिछले एक साल से युद्ध चल रहा है जिसमें यूक्रेन बुरी तरह तबाह हो चुका है लेकिन नाटो से मिल रहे हथियार की बदौलत अभी तक जंग के मैदान में डटा हुआ है।

यूक्रेन ने भी अच्छा खासा नुकसान उसने रूस को पहुंचाया है न केवल हजारों सैनिक को यूक्रेन मारा है बल्कि विधंसकारी हथियार भी नष्ट कर दिया है जिसके कारण रूस भी युद्ध के लिए अपनी रणनीति बदलने लगा है। अब वह आर पार जंग के लिए तैयार हो रहा है। इसी के तहत उसने परमाणु हथियारों की खेप बेलारूस को भेज दी है जो खतरे की घंटी है। यह संकेत भी मिलने लगे की रूस जल्द ही यूक्रेन पर परमाणु हथियारों से हमला करेगा वही उसका ब्रह्मास्त्र होगा। लेकिन इससे जनमानस को काफी पहुंचेगा।

रूस के राष्ट्रपति लादिमीर पुतिन ने इस बात की पुष्टि की है कि रूस ने अपने परमाणु हथियारों की पहली खेप

बेलारूस भेजी है। विश्व के देश उस पर दबाव न डालें इसके लिए रूस ने कहना शुरू कर दिया है कि इन हथियारों का इस्तेमाल तभी किया जाएगा जब उनके क्षेत्र या राज्य को खतरा होगा।

सेंट पीटर्सबर्ग में इंटरनेशनल इकोनोमिक फोरम को संबोधित करते हए उन्होंने कहा कि परमाणु हथियारों की पहली खेप बेलारूस भेजी गई है

ये भी सत्य है कि यूक्रेन पर हमला करने के बाद कई बार रूस की तरफ से परमाणु हथियारों के इस्तेमाल की धमकी दी जा चुकी है। अब अपने फॉरवर्ड प्लान के तहत रूस ने यूक्रेन की सीमा से लगते इलाकों में परमाणु हथियारों को तैनात करने की योजना पर काम करना शुरू कर दिया है। इस कड़ी में उसने अपने खास सहयोगी देश बेलारूस में परमाणु हथियार भेजा है।

पुतिन से फोरम में जब परमाणु हथियारों के इस्तेमाल से जुड़ा सवाल पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यह कदम अपने बचाव को लेकर उठाया गया साथ ही यह



उन लोगों को याद दिलाने के लिए भी है जो रूस की रणनीतिक हार के बारे सोचते रहते हैं।

हिरोशिमा-नागासाकी पर गिराए गए बम से तीन गुना शक्तिशाली

रूस के राष्ट्रपति पुतिन का बयान बेलारूस के राष्ट्रपति एलेक्जेंडर लुकाशेन्को के उस दावे के बाद आया जिसमें उन्होंने कहा था कि इस सप्ताह उनके देश ने रूस से मिसाइल और बमों की पहली खेप प्राप्त कर ली है। लुकाशेन्को ने यह भी कहा कि रूस से जो परमाणु हथियार मिले हैं वे द्वितीय विश्वयुद्ध में हिरोशिमा और नागासाकी पर गिराए गए परमाणु बम से तीन गुना शक्तिशाली हैं।

उधर यूक्रेन ने नाटो देशों से आग्रह किया है की हथियारों का उत्पादन बढ़ाए और उन्हें दे तभी यूक्रेन रूस का मुकाबला कर सकता है। रूस द्वारा भेजी गई परमाणु हथियारों की खेप से यूक्रेन काफी परेशान दिखाई पड़ रहा है और अब नाटो के देशों से यह कहने लगा है कि यदि उन्हें हथियार मिलने में देरी हुई थी रूस यह युद्ध जल्द समाप्त कर देगा ऐसे में कहा जा सकता है कि एक बार पुणे पूरा विश्व परमाणु युद्ध के खतरे के दरवाजे पर खड़ा है कभी भी परमाणु हथियारों से यूक्रेन वर रूस हमला कर सकता है और युद्ध को पूरी तरह जीतकर समाप्त कर सकता है जबकि यह सब जानता है की यदि परमाणु युद्ध हुआ तो इसका परिणाम पृथक्की कई वर्षों तक झेलेगी।

जानकारी के अनुसार अमेरिका ने 9 अगस्त 1945 को सुबह 11 बजे जब नागासाकी पर बम गिराया तो वहां पलभर में 40 हजार लोग मौत की नींद सो गए थे।

परमाणु हमले के कई सालों बाद तक जापान के इन शहरों के आसपास के शहरों में परमाणु विकिरण के कारण अपंग बच्चे पैदा होते रहे।

रेडियोएक्टिव विकिरण ने जिंदादिली से भरे इन दोनों शहरों में कहर बरपा दिया। चारों तरफ मौत का मंजर पसरा था।

ऐसे तो युद्ध के तीन दिन बाद जापान के ही नागासाकी शहर पर दूसरा परमाणु बम गिराया गया था दोनों शहर लगभग पूरी तरह तबाह हो गए थे। डेढ़ लाख से अधिक लोगों की पल भर में जान चली गई और जो बच गए वो अपंगता के शिकार हो गए। दूर-दूर तक के इलाकों में घंटों काली बारिश होती रही और

उक्त घटना को सुनकर ही पूरा शरीर का रोहा खड़ा हो जाता है। ऐसे में रूस के द्वारा इसी तरह की घटना को यदि अंजाम दिया गया तो फिर वह दिन दूर नहीं जब पृथक्की का एक कोना बुरी तरह चोटिल हो जाएगा और सदियों सदियों तक इसके निशान रह जाएंगे।

विद्यार्थियों का गौरव

स्थापित सन् - 1998



Our Toppers

हाईटक्लू की
सबसे कम फीस और
100%
टकावरी

एवसीलेन्ट बॉयो इन्स्टीच्यूट

Classes : 9th to 12th CBSE & UP Board

कैलाशपुरी, पं. दीनदयाल उपाध्याय नगर - चन्दौली

9621503924, 9598056904, 9452000121

साहित्य शिरोमणि सम्मान से सम्मानित हुए वरिष्ठ साहित्यकार गीतकार डॉ. शिव मोहन सिंह



युगधारा फाउंडेशन लखनऊ उ. प्र. का षष्ठम स्थापना दिवस पावन तीर्थ नैमिषारण्य (सीतापुर) उ.प्र. में दिनांक 27-28 मई 2023 को मनाया गया जिसमें विचार संगोष्ठी, पुस्तकों का लोकार्पण,

कवि गोष्ठी तथा विभिन्न राज्यों से आए साहित्यकारों को सम्मानित किया गया। इस भव्य समारोह में वरिष्ठ साहित्यकार गीतकार डॉ शिव मोहन सिंह जी देहरादून को डिसाहित्य शिरोमणिड सम्मान से सम्मानित किया गया। 'युगधारा' की अध्यक्ष श्रीमती गीता अवस्थी जी, सचिव सुश्री सौम्या मिश्रा जी, उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ की मुख्य संपादक डॉ अमिता दुबे जी, मुख्य अतिथि प्रोफेसर ध्रुव मिश्र जी प्राचार्य आरजीएस मेडिकल इंस्टीट्यूट एंड रिसर्च सेंटर लखनऊ, वरिष्ठ साहित्यकार डॉ श्रीनिवास शुक्ल 'सरस' जी सीधी मध्य प्रदेश, वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामकृष्ण विनायक सहस्रबुद्धे जी नासिक महाराष्ट्र द्वारा प्रमाण पत्र, 3ंग गस्त्र, माला, श्रीफल, राम दरबार की तस्वीर तथा तुलसीकृत रामचरितमानस की प्रति भेंट कर शिव मोहन जी को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर शिव मोहन सिंह जी ने कहा कि युगधारा फाउंडेशन लखनऊ साहित्यिक सांस्कृतिक तथा सामाजिक उन्नयन में सदैव तत्पर रहा है, आज मुझे सम्मानित कर साहित्य और समाज के प्रति और अधिक जिम्मेदार

बना दिया है। शिव मोहन सिंह वरिष्ठ साहित्यकार तथा चर्चित गीतकार हैं जो वर्तमान में देहरादून में रहकर साहित्य सृजन कर रहे हैं तथा सच की दस्तक के उप संपादक भी हैं।

कार्यक्रम कई सत्रों में 2 दिन चला जिसमें शिव मोहन जी ने कुछ सत्रों में अध्यक्ष और विशिष्ट अतिथि की भूमिका में भी उपस्थित रहकर अपने उद्घोषन से सभागार में उपस्थित प्रबुद्ध जन को अभिसिंचित किया।

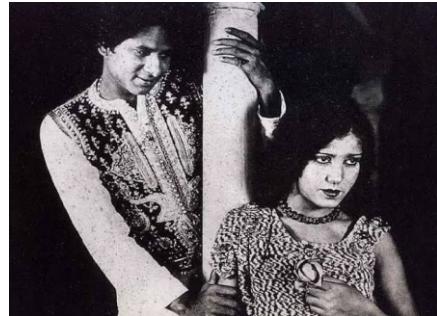
इस अवसर पर प्रो विशंभर शुक्ल जी को 'गोस्वामी तुलसीदास सम्मान', डॉ श्रीनिवास शुक्ल जी को 'प्रताप नारायण मिश्र सम्मान', श्री बनवारी लाल जाजोदिया इंदौर को 'साहित्य सरस्वती सम्मान', डॉ प्रेमलता त्रिपाठी जी को 'साहित्य रत्नाकर सम्मान' तथा रामस्वरूप साहू जी मुम्बई को 'साहित्य मार्तंड सम्मान' से सम्मानित किया गया। दो दिन के इस भव्य कार्यक्रम में सत्रानुसार संत महात्मा, क्षेत्र के सांसद विधायक जिला पंचायत सदस्य की उपस्थिति गरिमा प्रदान कर रही थी। कार्यक्रम के उपरांत संस्था द्वारा देश के विभिन्न प्रांतों से आए साहित्यकारों को पावन भूमि नैमिषारण्य के विभिन्न तीर्थ स्थलों का भ्रमण भी कराया गया।



भारतीय सिनेमा की सबसे पहली महिला गायक अभिनेत्री जुबेदा

फ़िल्म आलमआरा के निर्देशक आर्देशिर ईरानी ने फ़िल्म आलमआरा का पहला गाना 'दे दे खुदा के नाम पे प्यारे' को फ़िल्म में बूढ़े फ़कीर का किरदार अदा कर रहे अभिनेता वजीर मोहम्मद खान से गवाया क्योंकि उस जमाने में प्लेबैक सिंगिंग तकनीक नहीं थी।

इसलिए वजीर खान ने अपना यह गाना शूटिंग के समय सेट पर ही कैमरे के सामने लाइव गाया और रिकॉर्ड कराया। इस तरह फ़िल्म आलमआरा का गाना 'दे दे खुदा के नाम पे प्यारे' भारतीय सिनेमा के इतिहास का सबसे पहला गाना बना और इस गाने को लाइव गाने वाले अभिनेता वजीर मोहम्मद खान भारतीय सिनेमा के सबसे पहले गायक बने।



आज से लगभग 94 साल पहले साल 1929 में मुंबई के इंपीरियल मूवीटोन फ़िल्म कंपनी के मालिक और निर्माता-निर्देशक खान बहादुर आर्देशिर ईरानी ने बोलती अमेरिकन फ़िल्म शोबोट जिसमें गाने भी थे, को देखा और भारत में भी पहली बोलती फ़िल्म बनाने का पक्का इरादा किया।

अपने इरादे को अमलीजामा पहनाने के लिए आर्देशिर ईरानी ने अपनी पहली बोलती फ़िल्म की स्टोरी के लिए उस जमाने में मशहूर पारसी नाटककार जोसेफ डेविड के लोकप्रिय पारसी नाटक को चुना जिसमें कुछ गाने भी थे। इस नाटक की कहानी के आधार पर जोसेफ डेविड और हिंदी उर्दू भाषा के जानकार मुंशी जहीर ने मिलकर फ़िल्म की स्टोरी एवं स्क्रीनप्ले लिखा और नाटक के गानों को भी इस स्टोरी में शामिल किया। यह फ़िल्मी स्टोरी एक बंजारन लड़की आलमआरा और एक राजकुमार की प्रेम कहानी थी। आलमआरा इस कहानी की नायिका थी इसलिए आर्देशिर ईरानी ने अपनी पहली बोलती फ़िल्म का नाम रखा आलमआरा।

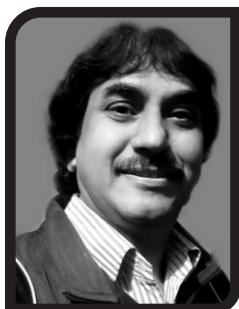
फ़िल्म आलमआरा में मुख्य

किरदारों की अदाकारी करने के लिए उस दौर के मूक फ़िल्मों के फेमस अभिनेता मास्टर विठ्ठल, अभिनेत्री जुबेदा, पृथ्वीराज कपूर, सुशीला, जगदीश प्रसाद आदि कलाकारों को लिया गया। इस फ़िल्म में कुल 78 कलाकार थे।

फ़िल्म की कहानी के अनुसार एक बूढ़े फ़कीर का किरदार करने के लिए मूक फ़िल्मों में काम करने वाले चरित्र अभिनेता वजीर मोहम्मद खान को चुना गया क्योंकि उनका गला काफी अच्छा था।

आर्देशिर ईरानी ने मुंबई के ज्योति स्टूडियो में फ़िल्म की शूटिंग शुरू की। उस समय साउंडप्रूफ स्टूडियो नहीं होते थे इसलिए शोर-शराबे से बचने के लिए शूटिंग का समय रखा गया रात 1:00 बजे से लेकर सुबह 4:00 बजे तक। बातों-बातों में आपको बताते चलें कि उस जमाने में फ़िल्मों की शूटिंग दिन में सनलाइट में होती थी, लेकिन आर्देशिर ईरानी अपनी शूटिंग रात को कर रहे थे इसलिए भारतीय सिनेमा के इतिहास में आर्देशिर ईरानी ने ही पहली बार शूटिंग के लिए आर्टिफिशियल लाइट यानी कृत्रिम प्रकाश का इस्तेमाल किया। इसके लिए अधिक वाट वाले बल्ब ज्योति स्टूडियो में फ़िल्म के सेट पर लगाकर प्रकाश की व्यवस्था की गई थी।

आर्देशिर ईरानी ने बोलती फ़िल्म बनाने के लिए शूटिंग के समय तस्वीरों के साथ-साथ फ़िल्म के किरदारों की आवाज को भी रिकॉर्ड करने के लिए टानर सिंगल सिस्टम कैमरे का इस्तेमाल किया और



ब्रजेश श्रीवास्तव मुन्जा
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर
चन्दौली

टानर सिंगल साउंड सिस्टम को खुद ऑपरेट किया। फिल्म के किरदारों के डायलॉग की आवाज को कैमरे तक पहुंचाने के लिए किरदारों के पास ही माइक छुपा कर रखे गए और शूटिंग की गई। आर्द्धशिर ईरानी ने अपनी पहली बोलती फिल्म आलमआरा में कुल 7 गाने रखे थे। सिनेमा के इतिहासकारों का मानना है कि जोसेफ डेविड के नाटक में पहले से ही गाने थे, उन्हीं गानों को ही जोसेफ डेविड और मुंशी जहीर ने मिलकर हिंदी उर्दू भाषा में अनुवाद कर दिया था। इस तरह आलमआरा के गीतों के गीतकार जोसेफ डेविड और मुंशी जहीर थे। हालांकि फिल्म में गीतों के रचनाकार के रूप में इनको कोई क्रेडिट नहीं दिया गया था।

फिल्म आलमआरा के 7 गाने थे....

1) दे दे खुदा के नाम पे प्यारे ,
2) बदलाव दिलवायेगा यार रब तू
सितमगारों से,

3) रठा है आसमां गुम हो गया
माहताब,

4) तेरी कठीली निगाहों ने मेरा,
5) देने दिल को आराम आये हैं
साकी गुलफाम,
6) भर-भर के जाम पिला जा ,
7) दरस बिन मोरे हैं तरसे नैना
प्यारे,

फिल्म आलमआरा के निर्देशक आर्द्धशिर ईरानी ने फिल्म आलमआरा का पहला गाना 'दे दे खुदा के नाम पे प्यारे' को फिल्म में बूढ़े फकीर का किरदार अदा कर रहे अभिनेता वजीर मोहम्मद खांन से गवाया क्योंकि उस जमाने में प्लेबैक सिंगिंग तकनीक नहीं थी। इसलिए वजीर

खान ने अपना यह गाना शूटिंग के समय सेट पर ही कैमरे के सामने लाइव गाया और रिकॉर्ड कराया। इस तरह फिल्म आलमआरा का गाना 'दे दे खुदा के नाम पे प्यारे' भारतीय सिनेमा के इतिहास का सबसे पहला गाना बना और इस गाने को लाइव गाने वाले अभिनेता वजीर मोहम्मद खान भारतीय सिनेमा के सबसे पहले गायक बने। लेकिन फिल्म आलमआरा की कहानी के अनुसार अभी 6 गाने रिकॉर्ड करने बाकी थे। आलमआरा में राजकुमार का किरदार अदा करने वाले अभिनेता मास्टर विठ्ठल हिंदी और मराठी साइलेंट यानि मूक फिल्मों के फेमस हीरो थे। उनको ईरानी ने अपनी बोलती फिल्म आलमआरा में नायक के रोल में ले तो लिया था लेकिन मास्टर विठ्ठल उर्दू और हिंदी पढ़े-लिखे नहीं थे। शूटिंग के समय जब डायलॉग बोलने की बात आई तो वे बोल नहीं पा रहे थे। ना तो वे ठीक से उर्दू बोल पा रहे थे, ना ही हिंदी। उनकी डायलॉग डिलीवरी में शाही अंदाज भी नहीं था। तब आर्द्धशिर ईरानी ने लेखक जोसेफ डेविड से फिल्म की कहानी में थोड़ा बदलाव कराया। फिल्म के अधिकांश सीन में मास्टर बिठ्ठल को या तो बेहोश दिखाया गया या फिर किसी तरह के नशे में दिखाया गया। उनको बहुत कम डायलॉग बोलने के लिए दिए गए। फिल्म के नायक का किरदार अदा करने वाले मास्टर विठ्ठल अपनी आवाज में कोई गाना नहीं गा सकते थे, इसलिए बाकी 6 गानों को गाने का जिम्मा अभिनेत्री जुबेदा और अभिनेत्री जिल्लोबाई को दिया गया। फिल्म आलमआरा में आलमआरा का किरदार अदा करने वाली अभिनेत्री जुबेदा ने आलमआरा का दूसरा गाना गाया.....

...बदला दिलवाएगा या रब तू
सितमगारों से....।

शूटिंग के समय सेट पर जुबेदा के गाने को रिकॉर्ड करने के लिए एक माइक छुपा कर रख दिया गया और जुबेदा ने कैमरे के सामने इस गाने को लाइव गाकर रिकॉर्ड कराया। इस गाने को गाते हुए और अभिनय करते हुए जुबेदा की तस्वीर और आवाज कैमरे में रिकॉर्ड हो गई। गाने में संगीत देने के लिए हारमोनियम और तबला बजाने वालों को एक माइक देकर कैमरे की नजर से बचा कर बैठा दिया गया था। इस तरह अभिनेत्री जुबेदा ने अपनी आवाज में फिल्म आलमआरा का दूसरा गाना गाया और भारतीय सिनेमा के इतिहास में पहली महिला गायक यानि फर्स्ट लेडी सिंगर बन गई। फिल्म आलमआरा में अधिकांश गाने जुबेदा ने ही अपनी आवाज में गाये और ये गाने उनपर ही फिल्माए गए थे।

फिल्म में एक गाना अभिनेत्री जिल्लोबाई ने भी गाया था। वह गाना था....

रठा है आसमां गुम हो गया
महताब.....।

दुर्भाग्य की बात है कि भारत की पहली बोलती फिल्म आलमआरा का कोई प्रिंट आज उपलब्ध नहीं है।



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई



महेंद्र पटेल



सभासद

जिला योजना सीमित सदस्य (चन्दौली)
पं दीन दयाल उपाध्याय नगर
जनपद- चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

डॉ ओ पी सिंह

जिला उपाध्यक्ष चिकित्सा प्रकोष्ठ भाजपा
जनपद चंदौली
प्रदेश प्रवक्ता

नेशनल इंटीग्रेटेड मेडिकल एसोसिएशन (नीमा) उत्तर प्रदेश

सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

डॉ उमाशरण पांडेय

बाल रोग विशेषज्ञ
अपर मुख्यचिकित्सा अधिकारी
आजमगढ़, (उत्तर प्रदेश)



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई



डॉ जेपी यादव

स्वामी विवेकानंद
जन कल्याण हॉस्पिटल
अलीनगर थाना के ठीक
सामने गाले रोड में
अलीनगर जनपद चन्दौली
आकस्मिक सेवा 24 घण्टे उपलब्ध



EDITOR : BRAJESH KUMAR

NEWS EDITOR : AKANSHA SAXENA



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

भानू तिवारी
भाजपा युवा नेता
पं दीन दयाल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

जितेन्द्र गुप्ता
पूर्व सभासद काली महाल
पंडित दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली



सच की दस्तक के 6 वर्ष पूर्ण होने पर बधाई

भैरवलाल यादव
पूर्व सभासद व युवा नेता
समाजवादी पार्टी
सुभाषनगर, पं दीनदयाल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली



सुनील शर्मा

सभासद (भाजपा)
न्यू मोहाल, पं. दीनन्दयल उपाध्याय नगर
जनपद चन्दौली

